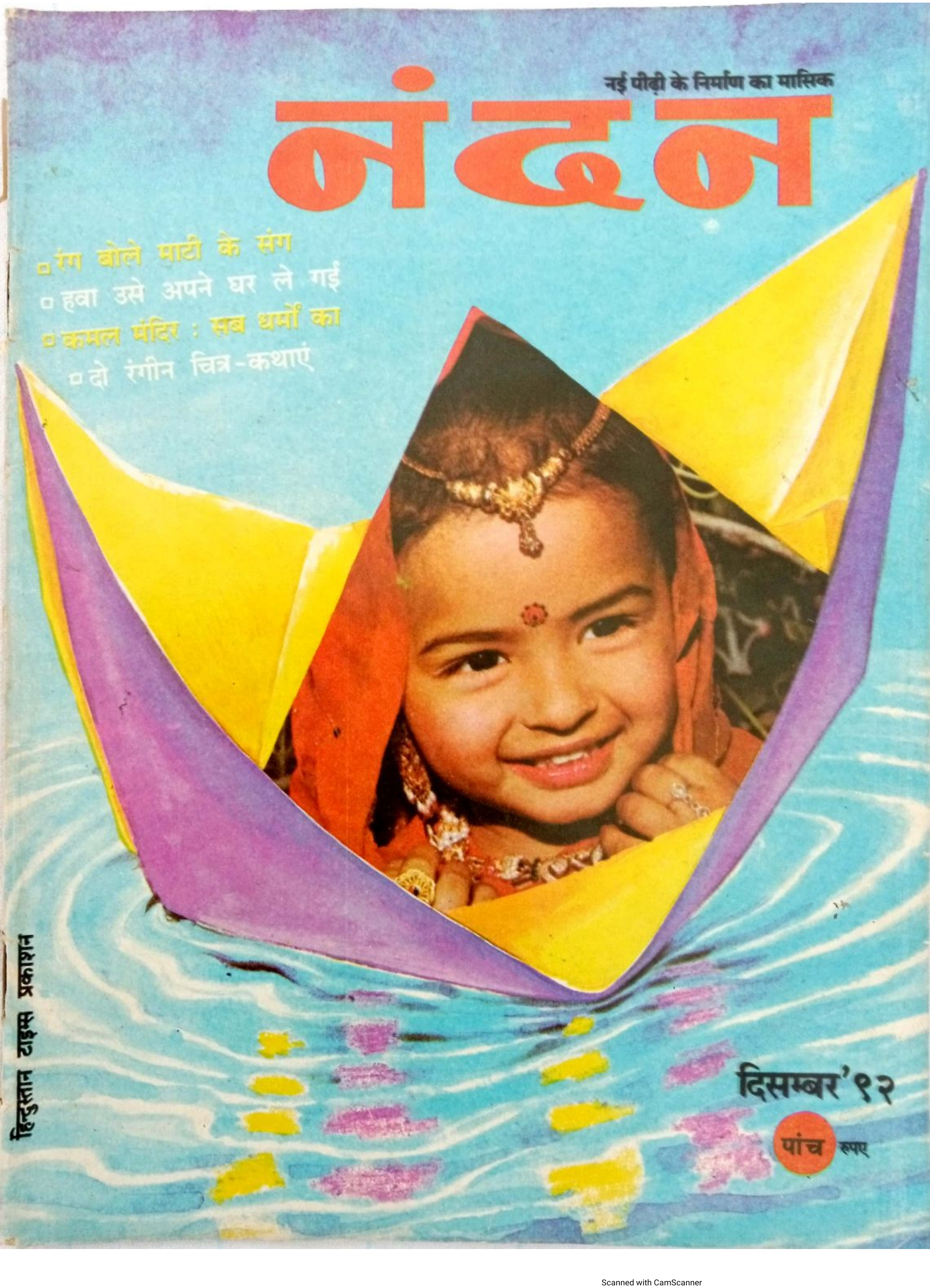

नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
□ रंग बोले माटी के संग
□ हवा उसे अपने घर ले गई
□ कमल मंदिर : सब धर्मों का
□ दो रंगीन चित्र-कथाएं
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन
दिसम्बर '९२
पांच रुपए


आ रहा है !
देश के दुश्मनों को हराने, सबके दिलों को दहलाने...
डायमण्ड कॉमिक्स में
नया कैरेक्टर
अग्निपुत्र अभय
हर महीने नये-नये हैरतअंगेज़ कारनामों के साथ
पहला अंक जनवरी 1993 में
डायमण्ड कॉमिक्स के शानदार
छक्के* के साथ
अग्निपुत्र अभय
और लुटियानो
'अग्निपुत्र-अभय' के पहले अंक के साथ
मुफ़्त !
आपके चहेते 12 क्रिकेट खिलाड़ियों वाला 15 रु. का
*छः पेज का रंगीन 1993 कैलण्डर मुफ़्त !
1993
JANUARY
DIAMOND COMICS
इनके अलावा—
• सचिन तेंदुलकर • विवियन रिचर्डस
• मनिन्दर सिंह • एलन बोर्डर
• विनोद काम्बली • इयान बाथम
• इमरान खान • रिचर्ड हैंडली
अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करवायें।
डायमण्ड कॉमिक्स
भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002
Mind Makers



भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
प्राण
चाचा चौधरी और गाज़ा
स्टिकर फ्री
कार पोस्टर फ्री
फौलादी सिंह और समुद्र में हंगामा
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
मैण्ड्रेक-9
ताऊजी और मौत का मंत्र
लम्बू मोटू और उल्लू का प्रेत
पलटू और विशाल अण्डा
मोटू छोटू और प्यारी पड़ोसन
डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज नई दिल्ली- 110002

प्रकाशन विभाग का
बच्चों के लिए आकर्षक उपहार

1. अनजाने में हुए आविष्कार	9.00	33. दो सिर वाला दैत्य, भाग-5	12.50
2. अवध की लोक कथाएं	9.50	34. सफर का साथी, भाग-6	9.50
3. आटपाट नगर की कहानियां	11.00	35. सरीसृप की कहानियां	10.00
4. उत्तर प्रदेश की लोक कथाएं, भाग-2	10.50	36. सारथी का बेटा	15.00
5. काकेशस का कैदी	15.00	37. सिंधी लोक कथाएं	15.00
6. कुमाऊं की लोक कथाएं	11.00	38. सुवर्ण भूमि की लोक कथाएं	9.50
7. गणित का जादूगर	10.00	39. श्राद्ध की दक्षिण तथा अन्य हास्य कथाएं	14.00
8. गिनती लाल की छींक	15.50	40. बाल कहानियां, भाग-1	7.00
9. ब्रज की लोक कथाएं	12.00	41. धरती का सपना	13.50
10. छोटी-छोटी चुभन	15.00	42. खरगोश के सींग	12.50
11. जंगल में मोर नाचा	8.00	43. तराजू का करिश्मा	12.00
12. तेलुगु लोक कथाएं, भाग-1	12.00	44. आगरा में अकबर	12.00
13. दहकता अवध	11.50	45. सतखंडी हवेली का मालिक	11.00
14. पौराणिक बाल कथाएं, भाग-1	9.00	46. सपने सच हुए	11.00
15. पौराणिक बाल कथाएं, भाग-2	13.50	47. कांटों के राही	15.00
16. पंजाब की लोक कथाएं, भाग-1	9.00	48. कस्तूरबा गांधी	9.50
17. बंगाल की लोक कथाएं	10.50	49. रानी दुर्गावती	10.00
18. कौरवी लोक कथाएं	15.00	50. रानी लक्ष्मीबाई	9.00
19. बाल महाभारत (महारथी कर्ण), भाग-4	9.00	51. आहिल्याबाई होलकर	12.00
20. बिहार की लोक कथाएं, भाग-2	7.00	52. उत्तर प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम के प्रेरक	5.00
21. भोजपुरी लोक कथाएं	10.00	53. नमक आन्दोलन	5.00
22. मणिपुर की लोक कथाएं	10.00	54. बन्दे मातरम्	3.00
23. मनु कथा भारती	12.50	55. शहीदों के खत	5.00
24. मनोरंजक कहानियां	18.00	56. पैगम्बरों की कथाएं	13.00
25. रऊफ चाचा का गधा	14.00	57. विश्व की श्रेष्ठ लोक कथाएं, भाग-7 "और पेड़ गूंगे हो गए"	15.00
26. रवीन्द्रनाथ ठाकुर की बाल कहानियां	13.00		
27. रोचक ऐतिहासिक कहानियां, भाग-1	8.00	58. हमारे बहादुर बच्चे	15.00
28. रोचक ऐतिहासिक कहानियां, भाग-2	15.00	59. हमारी आंखे	15.00
29. रवाई क्षेत्र की लोक कथाएं	9.00	60. आसमान की मेज-बाल कहानियां, भाग-14	13.00
30. लक्षद्वीप की समुद्री कथाएं	17.50	61. बाल बोध कथाएं	16.00
31. विश्व की श्रेष्ठ लोक कथाएं, भाग-3	14.00	62. राजस्थान के नारी रत्न	12.00
32. विश्व की श्रेष्ठ लोक कथाएं,, भाग-4	11.00	63. बोलने वाली गुफा	12.00

व्यापार व्यवस्थापक विक्रय केन्द्र
प्रकाशन विभाग
पटियाला हाऊस, नई दिल्ली-110001
दूरभाष -387983

सुपर बाजार, (दूसरी मंजिल)
कनाट सर्कस, नई दिल्ली-1
दूरभाष-3313308

10-बी स्टेशन रोड,
लखनऊ-226019
दूरभाष-245785

8-एसप्लेनेड ईस्ट,
कलकत्ता-700069.
दूरभाष-286696

एल.एल.ए. आडिटोरियम,
अन्ना सलाई, मद्रास-600002
दूरभाष-867643

कामर्स हाउस (दूसरी मंजिल),
करीम भाई रोड,
बेलार्ड पियर, बम्बई-400038.
दूरभाष-2610081.

प्रेस रोड,
त्रिवेन्द्रम-695001
दूरभाष-68650

बिहार स्टेट को.आ. बैंक बिल्डिंग
अशोक राजपथ, पटना-800004.
दूरभाष-653823

स्टेंट आर्किलाजिकल
म्यूजियम बिल्डिंग,
पब्लिक गार्डेन,
हैदराबाद-500004.
दूरभाष-236393

डीएवीपी 1375(14)92

Scanned with CamScanner

आओ बात करें

अश्वमेध यज्ञ के बाद श्रीराम ने सिंधु देश का राज्य भरत को दे दिया । भरत ने अपने पुत्रों को राज्य सौंपा । वह स्वयं राम के पास लौट आए । श्रीराम ने अपने पुत्र कुश को कुशावती और लव को शरावती का राज्य दिया ।

एक दिन एक मुनि राम के पास आए । बोले—''मैं आपसे अकेले में बात करना चाहता हूं । हम दोनों की बातचीत के बीच जो भी आए, उसे आप देश-निकाला दे दीजिए ।'' श्रीराम ने बात मान ली ।

मुनि के वेश में काल ही आया था । उसने अपना असली रूप प्रकट किया और कहा—''ब्रह्माजी का संदेश लेकर आया हूं । अब आप चलकर वैकुंठ में रहें ।''

यह बात हो ही रही थी कि वहां दुर्वासा जी आ गए । द्वार पर लक्ष्मणजी बैठे थे । दुर्वासा ने जोर देकर कहा—''राम से जाकर कहो कि मैं आया हूं । नहीं जाओगे, तो तुम्हारे कुल को शाप देकर भस्म कर दूंगा ।''

लक्ष्मणजी जानते थे कि इस समय राम के पास जाने से देश-निकाला होगा, लेकिन दुर्वासा का संकट भी था । वह बातचीत के बीच ही राम के पास पहुंच गए और दुर्वासा के आने की सूचना दे दी ।

योग से लक्ष्मणजी ने सब जान लिया । राम की प्रतिज्ञा की रक्षा करने के लिए वह सरयू किनारे गए । उन्होंने शरीर छोड़ दिया । लक्ष्मण के स्वर्ग चले जाने से राम का चौथाई अंश ही जैसे चला गया । वह भाइयों के साथ उत्तर की ओर चल पड़े ।

अयोध्या के निवासी राम के बिना कैसे रहते ! वे सब अपना घर-बार छोड़कर उनके पीछे-पीछे हो लिए । जिस-जिस राह से राम चले, वह पीछे आने वाली जनता के आंसुओं से गीली होती गई ।

राम विमान पर चढ़कर चले गए । सरयू को उन्होंने अपने पीछे आने वालों के लिए स्वर्ग की सीढ़ी बना दिया । मनुष्य ही नहीं, रीछ-वानर भी स्वर्ग जा पहुंचे । नया दिव्यलोक ही बस गया ।

राम के स्वर्ग जाने के बाद अयोध्या वीरान हो गई ।

आधी रात का समय । हर तरफ शांति । सब सोए हुए । महाराज कुश अपने पलंग पर लेटे थे । अचानक आंखें खुलीं । एक अज्ञात नारी को उन्होंने अपने कक्ष में देखा । वह हैरान हुए । पलंग पर आधे उठकर बैठ गए । बोले—''हे देवि, तुम कौन हो ? इस शयन कक्ष में कैसे आ गईं ? तुम्हारा पति कौन है ? मेरे पास किसलिए आई हो ?''

वह स्त्री बोली—''महाराज, श्रीराम वैकुंठ चले गए । मैं अयोध्यापुरी की नगर देवी हूं । जो अयोध्या अलकापुरी जैसी चहल-पहल वाली थी, अब वीरान पड़ी है । राज मार्गों पर सियार घूमते हैं । भवन सूने पड़े हैं और बदरंग हो गए हैं ।

''मैं इसलिए आपके पास आई हूं कि आप अपनी राजधानी कुशावती छोड़कर अपने कुल की राजधानी अयोध्या में चलकर रहें ।''

अयोध्या की नगर देवी की बात महाराज कुश ने मान ली । उन्होंने अपनी राजधानी ब्राह्मणों को सौंप दी । सेना के साथ-साथ वह अयोध्या को चल दिए । वहां पहुंचकर महाराज कुश ने शिल्पियों को आज्ञा दी, तो अयोध्या का कायापलट होने लगा । फिर से वह सजने लगी । बाजारों में हलचल हो चली । नए-नए निर्माण वहां होने लगे । फिर से अयोध्या पहले जैसी हो गई ।

महाकवि कालिदास ने अयोध्या के वीरान होने और बसने का अनोखा वर्णन किया है ।

कहते हैं कि दिव्य साकेत लोक में राम और सीता का निवास है । उस लोक में वही पहुंचता है जो जन्म-मरण के बंधन से छूट जाए । वहां तक पहुंचने के लिए एक साधन इस धरती पर अयोध्या है । इसे आदि मनु ने पहली बार बसाया था ।

अखबारों में बार-बार अयोध्या की चर्चा छपती है, तो यह कथा याद आ जाती है ।

वार्षिक उपहार विशेषांक का अच्छा स्वागत हुआ । पत्र बराबर आ रहे हैं । बधाई-पत्र भी बड़ी संख्या में आए । उत्साह बढ़ता है इससे ।

— तुम्हारे भइया



नंदन

दिसम्बर '९२
वर्ष : २९ अंक : २

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

एलबम : सुशील कुमार आवरण : ज्ञान दीक्षित

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश, डा. नरेन्द्रकुमार; चित्रकार : प्रशांत सेन



अब घर चल

—कविराज ओमप्रकाश

जयदयाल दिल्ली में रहते थे। छोटा परिवार—पत्नी लक्ष्मी और दो बच्चे अनुज और रमेश ! जयदयाल सरकारी नौकरी में थे। तनख्वाह बहुत अधिक नहीं थी, पर दोनों पति-पत्नी सोच-समझकर चलने वाले थे। सादगी से रहते। जयदयाल को किसी तरह की परेशानी नहीं थी।

एक दिन जयदयाल दफ़्तर से घर लौटे, तो लक्ष्मी ने एक पत्र थमा दिया। पत्र जयदयाल के बहनोई शामनाथ का था। उससे जयदयाल की छोटी बहन रमा का विवाह हुआ था। रमा का जीवन सुखी न था। क्योंकि शामनाथ में कई गलत आदतें थीं। उधार लेकर काम चलाने में वह शान समझता था। तकाजा करने वालों को टालना उसकी आदत बन चुकी थी।

पत्र में लिखा था—'मैं दिल्ली में रहकर व्यापार करने की सोच रहा हूं। कुछ दिन के लिए आपके पास ठहरना चाहता हूं। आशा है, आपको आपत्ति न होगी। —शामनाथ।'

जयदयाल चिंतित हो उठे। उनको शामनाथ की आदतों से घृणा थी, लेकिन अपनी बहन का ख्याल करके चुप रहते थे।

एक सप्ताह बाद शामनाथ आ पहुंचा। जयदयाल ने पत्नी से कह दिया—"देखना इसे, कोई कष्ट न हो। नहीं तो रमा को परेशान करेगा।"

लक्ष्मी ने आश्वासन दिया—"आप बिलकुल चिंता न करें। सब ठीक हो जाएगा।"

शामनाथ खा-पीकर दिन भर घर में आराम करता। शाम को घूमने निकल जाता और आधी रात के बाद लौटता। जयदयाल और लक्ष्मी दोनों हैरान थे कि यह कैसा व्यापार था शामनाथ का। पर मुंह से कुछ न कहते। इसी तरह एक सप्ताह बीत गया। एक सुबह जयदयाल ने लक्ष्मी से कहा—"मैं अब और बरदाश्त नहीं कर सकता। आज साफ-साफ कह दूंगा।"

लक्ष्मी कुछ जवाब देती कि दरवाजे पर डाकिए की आवाज आई। टेलीग्राम था। पता चला लक्ष्मी के पिता रणधीर सिंह जालंधर में बहुत बीमार थे।

समाचार पढ़कर लक्ष्मी बिलखने लगी। जयदयाल ने कहा—"ईश्वर पर भरोसा रखो। हम सब आज ही तुम्हारे पिता जी को देखने चलेंगे।"

शामनाथ बोला—"भाभी जी, आप सब निश्चिंत होकर जाएं। घर की चिंता न करें।"

उसी शाम जयदयाल सपरिवार जालंधर के लिए चल दिए। उनके ससुर की वहां एक बड़ी दुकान थी।

लक्ष्मी के पिता बहुत बीमार थे। एक सप्ताह तक अब-तब के बीच झूलते रहे। लक्ष्मी को यही संतोष था कि उसने पिता के अंतिम दर्शन कर लिए। एक सप्ताह बाद, एक रात रणधीर सिंह की तबीयत बहुत बिगड़ गई। डाक्टरों ने बहुत कोशिश की, पर हालत में सुधार न हुआ। सुबह उनका देहांत हो गया।

जयदयाल दो-चार दिन रुकने की बात सोचकर आए थे, पर जल्दी लौटना न हो सका। ससुर जी की सम्पत्ति के बंटवारे को लेकर झगड़ा शुरू हो गया। लगभग डेढ़ महीने बाद ही जयदयाल लक्ष्मी और बच्चों के साथ दिल्ली लौट सके।

रास्ते भर वह शामनाथ के बारे में सोचते रहे। घर पहुंचे, तो देखा दरवाजा बाहर से बंद है और ताला लटक रहा है। उनका माथा ठनक गया। अभी सोच ही रहे थे कि ऊपर से मकान मालिक उतर आए।

देखते ही बोले—"अरे आप ! यह क्या चक्कर है !"

जयदयाल परेशान स्वर में बोले—"यही तो मैं सोच रहा हूं।"

अब मकान मालिक ने पूरी घटना बताई। कहा—"आपके जाने के तीन-चार दिन बाद शामनाथ मेरे पास आया। मुझसे कहा, स्थिति ऐसी है कि अब जयदयाल को सपरिवार जालंधर में ही रहना पड़ेगा। इसीलिए उन्होंने मुझे संदेश भेजा है कि घर का सामान जालंधर भिजवा दूं। इसके बाद वह ट्रक में आपका काफी सामान ले गया। मैं कुछ न बोला—आखिर शामनाथ आपका बहनोई है।"

जयदयाल समझ गए कि मौका देखकर शामनाथ ने घर का सारा सामान बेच डाला होगा। ताला तोड़ा गया। सब अंदर घुसे। घर खाली था। लक्ष्मी सिर पकड़ कर बैठ गई।

जयदयाल ने कहा—"बीती बातों को भुला देना ही ठीक है। जो सामान गया, वह तो लौटने से रहा।"

जयदयाल और लक्ष्मी बाजार से घर के लिए नया सामान लेकर आए। रुपए कम पड़े, तो मित्रों ने सहायता की। ऊपर से सब कुछ पहले जैसा हो गया था, पर जयदयाल और लक्ष्मी के मन पर गहरी चोट लगी थी। वह किसी से कुछ कह भी नहीं सकते थे।

समय बीत रहा था। जयदयाल अपनी भोली-भाली बहन रमा के बारे में सोचते, तो दुखी हो जाते।

एक दिन की बात, जयदयाल दुकान पर बैठे काम देख रहे थे। तभी फोन की घंटी बजी। उन्होंने फोन उठाया, तो शामनाथ की परिचित आवाज सुनाई दी। उनके मुंह से निकला—"आप कहां चले गए थे? घर का सामान भी गायब है।"

उधर से शामनाथ ने कहा—"मैं आपके किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दूंगा। हां, एक सूचना देना चाहता हूं। आपकी बहन रमा रेलवे स्टेशन पर बच्चों के साथ मौजूद है। वह प्लेटफार्म नम्बर छह पर बैठी है। मैं जा रहा हूं पता नहीं कहां। अगर आप चाहें, तो अपनी बहन को घर ले आएं।'

इसके बाद फोन कट गया। जयदयाल हलो-हलो करते रह गए। वह तुरंत उठकर स्टेशन की तरफ चले। उनकी समझ में कुछ न आया। आखिर रमा व बच्चों को स्टेशन पर छोड़कर कहां जा रहा था शामनाथ?

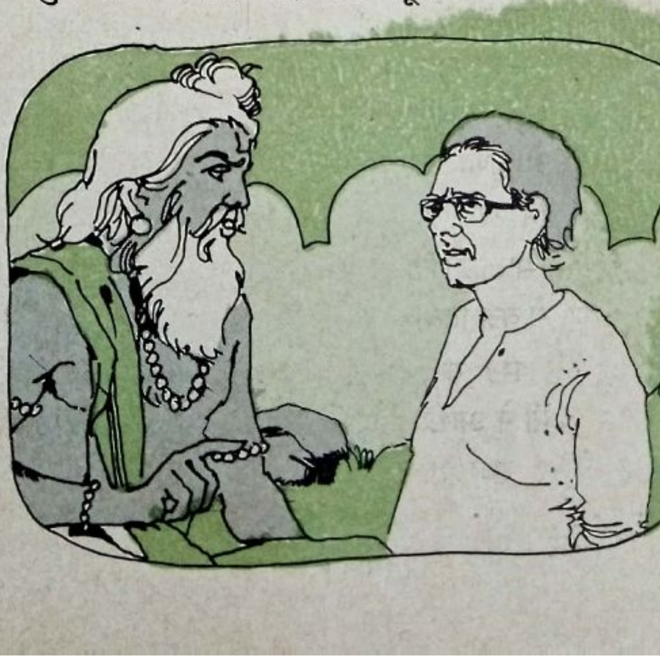
इसी ऊहापोह में डूबे जयदयाल स्टेशन जा पहुंचे। छह नम्बर प्लेटफार्म पर उन्हें रमा अपने बच्चों के साथ बैठी दिखाई दी।

भाई को देखते ही रमा खुश हो गई। बोली—"यह आपको फोन करने गए थे। अभी आते होंगे।"

बहन की भोली बात सुन, जयदयाल की आंखें भीग गईं। उन्होंने कहा—"वह अब न आएंगे।" फिर फोन पर हुई बातचीत सुना दी। रमा फूट-फूटकर रो पड़ी। जयदयाल ने उसे समझाया-बुझाया और घर ले आए।

घर पर लक्ष्मी को पूरी बात बता दी। दोनों ने मिलकर रमा को बहुत समझाया। जयदयाल ने कहा—"बहन, तू बिलकुल मत घबरा। मैं तेरे साथ हूं। तुझे किसी तरह की परेशानी न होने दूंगा। वह कायर था। छोड़कर चला गया, जाने दे।" अब रमा भी अपने बच्चों के साथ जयदयाल के पास ही रहने लगीं। जयदयाल और लक्ष्मी उसका बहुत ख्याल रखते। हर समय यही चिंता रहती कि कहीं रमा के मन पर चोट न लगे। इसी तरह कई महीने बीत गए।

इस बीच जयदयाल ने रमा के पढ़ने की व्यवस्था करा दी थी। उसके बच्चों को भी स्कूल में प्रवेश दिला दिया था। एक शाम रमा ने जयदयाल से कहा—"भैया, मेरा जीवन तो अब ऐसे ही कटेगा। मैं तुम पर कब तक बोझ बनी रहूंगी। मैं कहीं अलग



रहना चाहती हूं।"

जयदयाल ने बहन का संकोच समझ लिया। उन्होंने कुछ न कहा। उसी दिन रमा के लिए अलग मकान की व्यवस्था कर दी। साथ में कहा—"मैं तुम्हारे स्वाभिमान को ठेस नहीं पहुंचाना चाहता। पर जब तक तुम अपने पैरों पर न खड़ी हो जाओ, मैं तुम्हारी देखभाल करता रहूंगा।"

इसी तरह दो वर्ष बीत गए। रमा अब नौकरी करने लगी थी। वैसे कोई परेशानी न थी, हां, मन की पीड़ा कम न हुई थी।

उधर जयदयाल चुपचाप शामनाथ की खोज में लगे थे। जहां से भी खबर आती, स्वयं जाते। एक बार पता चला, किसी ने शामनाथ को हरिद्वार में देखा है। बस, उसी रात धंधे की बात कहकर वह हरिद्वार के लिए चल दिए। मन में विचार उठ रहा था—'ईश्वर करे, वह मिल जाए।'

इस बार उनकी मेहनत सफल हुई। शामनाथ उन्हें एक धर्मशाला में मिल गया। बीमार था, हाल-बेहाल। सूखकर पिंजर हो गया था। इन्हें देखते ही पैरों पर गिरकर क्षमा मांगने लगा। बोला—"मैं जुए में हार गया था, इसीलिए आपके घर का सामान..."

जयदयाल ने बीच में ही टोककर कहा—"पुरानी बातें रहने दो। बहुत भटक चुके। अब घर चलो। रमा और बच्चे परेशान हैं। भला अब तक क्या हाथ लगा तुम्हारे।"

अगले दिन जयदयाल शामनाथ को लिए हुए रमा के पास पहुंचे। वह अचरज से ताकती रह गई, फिर खूब रोई, खूब रोई। जयदयाल ने शामनाथ से कहा—"मैं आपको दुकान खुलवा देता हूं। ईमानदारी से काम करो और परिवार चलाओ।"

शामनाथ का व्यवहार कुछ दिन तो ठीक रहा, पर फिर वही हालत हो गई। जयदयाल की समझ में न आया कि क्या करें। फिर शामनाथ बीमार पड़ा—बीमारी बढ़ती गई। जयदयाल ने पानी की तरह पैसा बहाया, यहां तक कि उन्हें कर्ज भी लेना पड़ा।

एक रात वह अस्पताल से लौट रहे थे, तो रास्ते में आवाज सुनाई दी—"जयदयाल!"

जयदयाल ने देखा, पेड़ के नीचे बैठे एक साधु बुला रहे हैं। उन्होंने साधु के पैर छुए और बैठ गए। हैरान थे कि साधु उनका नाम कैसे जानते हैं।

तभी साधु ने कहा—"शामनाथ के कारण कष्ट मिल रहा है, इसीलिए परेशान है?"

उनके इतना कहते ही जयदयाल रोने लगे। बहुत देर तक रोते रहे। फिर बोले—"पता नहीं क्यों, मैं उस दुष्ट के साथ भलाई करता हूं, पर वह जवाब बुराई से देता है। आखिर मैंने उसका क्या बिगाड़ा है?"

साधु ने उनके सिर पर हाथ रख दिया। कहा—"जयदयाल, किसी का दोष नहीं, पिछले जन्म का फेर है। तुम उसके कर्जदार थे इसलिए अब तक चुका रहे थे। अब कर्ज पूरा हुआ, संकट कट गया। मैं यही कहने आया हूं।"

"बाबा, आप कौन हैं? इतना कुछ आपको मालूम है, कुछ और बताइए।"—जयदयाल ने कहा और उनके चरण थाम लिए।

साधु हंसने लगे। बोले—"साधु से अधिक न पूछो। भविष्य का हाल तो ऊपर वाला जानता है। अतीत की बात मैंने तुझे बता दी। अब घर जा।" इतना कहकर साधु बाबा वहां से चले गए।

अगली सुबह जयदयाल अस्पताल गए, तो देखा—शामनाथ की तबीयत ठीक है। उस दिन से उसके स्वास्थ्य में सुधार होता गया। ठीक होकर घर आया, तो जैसे वह कोई दूसरा ही बन गया था। उसने रमा से कहा—"पुराना शामनाथ मर गया। यह मेरा नया जन्म है।"

उसमें आया परिवर्तन देख, सब चकित थे। स्वभाव एकदम बदल गया था। बार-बार कहता—"मुझे सपने में एक साधु महाराज दिखाई देते हैं। मैं उन्हीं की दिखाई राह पर चलूंगा।"

शामनाथ ईमानदारी और मेहनत से काम करने लगा। सब बुरी आदतें गायब हो गईं। इतने वर्षों बाद रमा ने अब मुसकराना सीखा था। जयदयाल तो बहुत ही प्रसन्न थे। ●



'नंदन' एलबम : १०७

कमल मंदिर (लोटस टैम्पल), नई दिल्ली

सब धर्मों के लोगों द्वारा ईश्वर की उपासना का केंद्र : बहाई समुदाय ने इसे बनवाया।

बरस पड़ो

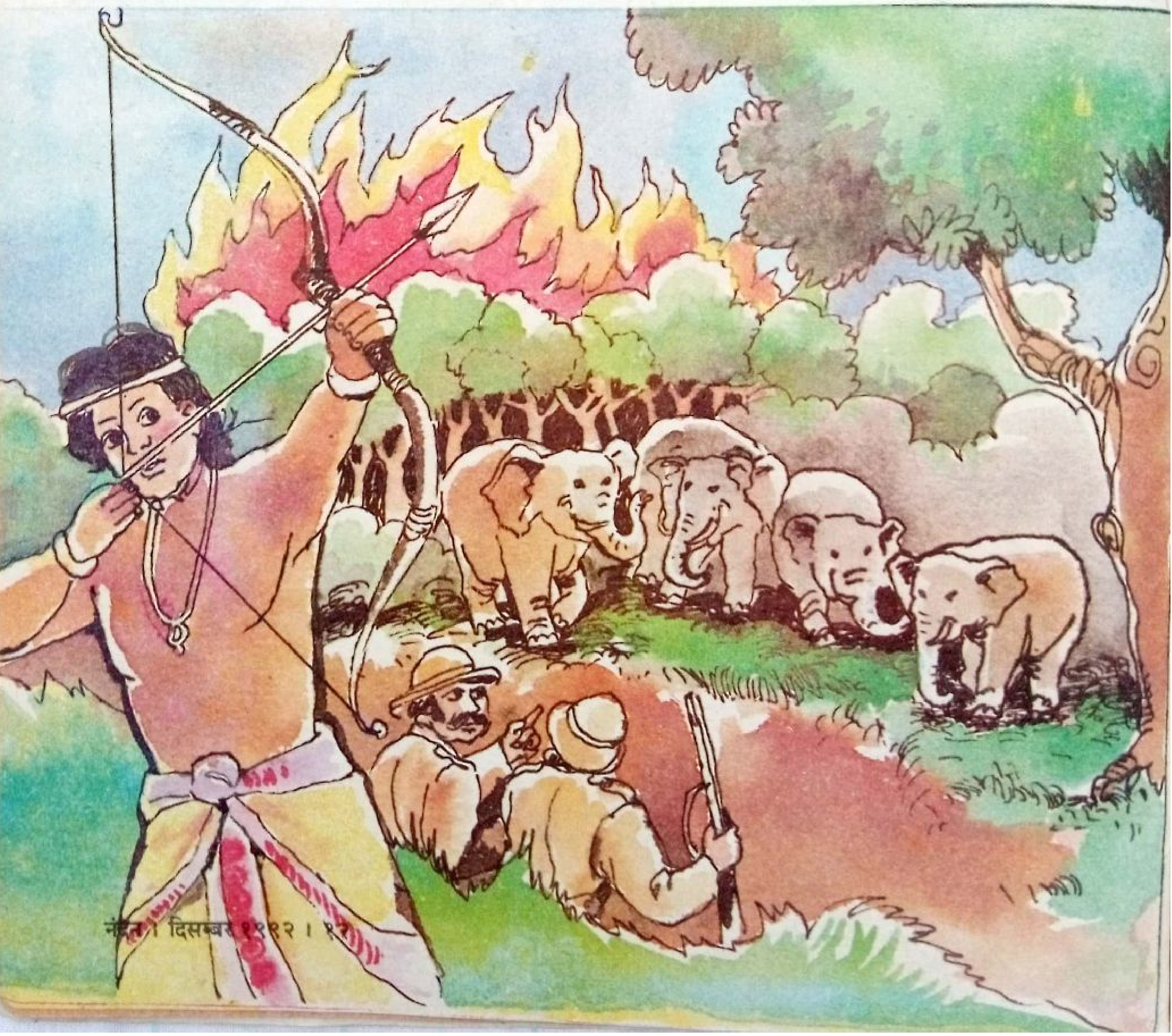
— डा. सुरेशचन्द्र गुप्त

असम के घने जंगलों में एक कबीला रहता था। उसका मुखिया था मोपन। उसका एक बेटा था। बेटे का नाम था सिगबी। चौदह-पंद्रह साल का किशोर। बेहद साहसी।

सिगबी दिन भर जंगल में घूमता। ढेर-सारे पशु उसके मित्र बन गए थे। उसे उन पर तीर चलाना अच्छा नहीं लगता था। पशु भी उसे अपना मित्र समझते थे।

एक दिन सिगबी ने देखा कि जंगल में आग फैल रही है। तभी हाथियों के चिंग्घाड़ने की आवाज सुनाई दी। साथ ही कुछ लोगों का शोर भी। सिगबी समझ गया कि यहीं आसपास शिकारी छिपे हैं। वे हाथियों तथा दूसरे जंगली पशुओं को पकड़ना चाहते हैं।

तभी सिगबी की नजर एक शिकारी पर पड़ी। शिकारी बंदूक से लैस था। सिगबी ने इधर-उधर घूमकर देखा, तो उसे कुछ और शिकारी नजर आए। भय से पशु इधर-उधर दौड़ रहे थे। शिकारियों का ध्यान तो हाथियों पर था। वे हाथियों को एक गहरे गड्ढे की ओर खदेड़ रहे थे। सिगबी उधर बढ़ा। वह समझ गया कि शिकारी हाथियों को गड्ढे में गिराकर



पकड़ना चाहते हैं।

सिगबी को शिकारियों पर क्रोध आया। वह हाथियों को बचाने का उपाय खोजने लगा, पर अकेला क्या करता ! उसे लगा कि देवताओं को ही सहायता के लिए पुकारना चाहिए। उसने तुरंत आसमान की ओर मुंह किया। फिर उसने हवा में एक तीर छोड़ा। देखते ही देखते तीर न जाने कहां हवा में खो गया।

कुछ देर बाद सिगबी ने देखा कि आसमान से एक चील नीचे उतर रही है। सिगबी के पास आकर चील ने कहा— ''मुझे परियों ने भेजा है। तुम्हारा तीर उन तक पहुंच गया है। बताओ, तुमने तीर क्यों छोड़ा था ?''

चील को बोलते देखकर पहले तो सिगबी हैरान हुआ। फिर उसने कहा—''शायद हाथियों को पकड़ने के लिए ही शिकारियों ने आग लगाई है। देखो, कैसे परेशान हो, सभी इधर-उधर दौड़ रहे हैं। उन्हें बचाने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा है। सब इधर ही दौड़े चले आ रहे हैं। इधर आएंगे, तो गड्ढे में गिर जाएंगे। फिर शिकारी हाथियों को पकड़कर ले जाएंगे। मैं चाहता हूं कि देवता उनकी रक्षा करें। मेरा यह संदेश जल्दी से जल्दी उन तक पहुंचा दो।''

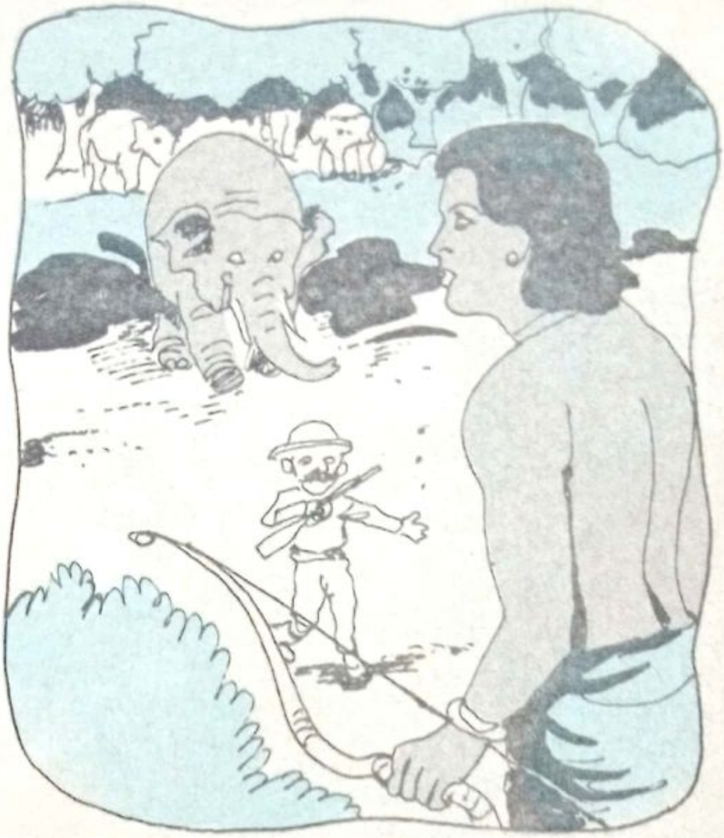
वह कोई सामान्य चील तो थी नहीं। वह वेग से ऊपर उड़ी और सीधे इंद्र के दरबार में पहुंची।

परियों ने तब तक सिगबी का तीर इंद्र तक पहुंचा दिया था। इंद्र दैवी शक्ति से सब जान चुके थे। चील ने जो कुछ बतलाया, उसे भी उन्होंने ध्यान से सुना। फिर सिगबी की उदारता और साहस की प्रशंसा करते हुए बादलों को आदेश दिया— ''जाओ, उस जंगल पर बरस पड़ो, जहां आग लगी हुई है।''

बादल जंगल पर जाकर बरस पड़े।

वर्षा हुई,तो आग बुझ गई। पशु-पक्षियों ने राहत की सांस ली। हाथी भी रुक गए और गड्ढे में गिरने से बच गए।

हाथी समझ गए कि यह सब उन्हें पकड़ने की चाल थी। वे गड्ढे के पास पहुंचे। देखते ही देखते हाथियों ने डालियों और पत्तियों को सूंड़ से खींच-खींचकर दूर



फेंक दिया। तभी एक हाथी की दृष्टि बंदूक लिए शिकारियों पर पड़ गई। फिर क्या था ! सभी हाथी उस ओर दौड़ पड़े।

शिकारी अब खुद शिकार होने जा रहे थे। हाथियों को अपनी ओर आते देख, शिकारी बुरी तरह घबरा गए। अपने हथियार फेंककर पागलों की तरह भागने लगे। वन में हाथियों के भारी पैरों की आवाज और चिंघाड़ गूंज रही थी। शिकारी भागे जा रहे थे।

आखिर जैसे-तैसे शिकारी पहाड़ी पर चढ़ गए। प्राण बचाने की भागदौड़ में सभी घायल हो गए थे। लालची शिकारियों की बुरी दशा देख,सिगबी बहुत खुश हुआ। उसे विश्वास हो गया कि अब वे भूलकर भी वन की तरफ नहीं आएंगे।

सिगबी ने मन ही मन देवराज इंद्र और परियों को धन्यवाद दिया। कुछ देर बाद हाथियों का क्रोध शांत हो गया। वे चुपचाप जंगल में वापस चले गए। शिकारियों की टोली भी डरती-कांपती जंगल से बाहर चली गई।

सिगबी यह देखकर बड़ा खुश हुआ। उधर हाथी पहाड़ी के नीचे सूंड़ उठाकर खुशी से चिंघाड़ रहे थे। ●



बोलेगा घोड़ा

— कृष्णा तिक्कू

कश्मीर के एक भाग में मंदबुद्धि नाम का एक राजा राज्य करता था । राजा सुंदर,सुशिक्षित और कुलीन था, पर बुद्धि में सचमुच तेज नहीं था । शायद इसी कारण उसका नाम मंदबुद्धि था ।

मंदबुद्धि के पास एक काले रंग का घोड़ा था । वह इसी घोड़े पर सवार होकर जंगलों में शिकार खेलने जाता । ऊंची-ऊंची पहाड़ियों पर घुड़सवारी करता और समय आने पर लड़ाइयां लड़ने भी इसी घोड़े पर जाया करता था ।

राजा ने घोड़े की देखभाल के लिए दर्जनों नौकर-चाकर रखे थे । वे घोड़े को नहलाते, मालिश करते । कई नौकर उसको खाना खिलाते, तो कई उसके लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के चारे का प्रबंध करते । काला घोड़ा देखने में बहुत सुंदर, स्वस्थ, चमकदार और शक्तिशाली था ।

मंदबुद्धि के शासनकाल में राज्य का काम-काज अधिकतर मंत्रीगण ही चलाते थे । एक बार पड़ोस के राजा हींगूमल ने मंदबुद्धि के राज्य पर हमला किया । सारे राज्य में खलबली मच गई ।

राजा मंदबुद्धि का रक्षामंत्री इस आक्रमण का मुकाबला करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था । उसने राजा से कहा— "महाराज, मेरी तो यह राय है कि हम बिना किसी शर्त के राजा हींगूमल के सामने अपने हथियार डाल दें ।"

— "नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता । अपने देश की सुरक्षा के लिए हमें हर हालत में लड़ना होगा ।"

इसके तुरंत बाद राजा मंदबुद्धि ने अपनी सेना की बागडोर संभाली । अपने काले घोड़े पर सवार होकर उसने अपनी सेना का नेतृत्व किया ।

दुश्मन के सैनिकों को कुचलता हुआ, अपने काले घोड़े पर सवार होकर, उसने अपनी सेना में नया जोश भर दिया । अपनी सेना के साथ-साथ बहादुरी से लड़ते हुए राजा मंदबुद्धि ने दुश्मन को वापस खदेड़ दिया ।

विजय का जश्न सारे राज्य में मनाया गया ।

मंदबुद्धि अपने रक्षामंत्री से बहुत ही रुष्ट था । उसने रक्षामंत्री को बुलाया और कहा— "आज से देश के रक्षा मंत्रालय का सारा काम-काज मेरा काला घोड़ा ही चलाएगा ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है ?"—रक्षामंत्री आश्चर्य से बोला ।

यह सुनते ही मंदबुद्धि उस पर बरस पड़ा । कहा— "क्यों नहीं हो सकता ? तुमने तो मुझे हींगूमल के सामने बिना किसी शर्त के हथियार डालने की सलाह दी थी, तब मेरा काला घोड़ा दुश्मन से टक्कर लेने के लिए आगे बढ़ा था ।"

"पर महाराज, आप का घोड़ा बोल नहीं सकता । वह मंत्रालय की देख-रेख का काम कैसे कर सकता है ? वह सभासदों को कैसे सम्बोधित कर सकता है ?"— रक्षामंत्री ने राजा को समझाते हुए

कहा ।

"सब कुछ हो सकता है । मेरे पास इसका भी समाधान है ।"— राजा ने अपनी बात समझाते हुए कहा ।

— "महाराज के पास इस समस्या का क्या समाधान है ?"

"घोड़े को बोलना सिखा दो ।"— मंदबुद्धि ने सुझाया ।

"पर कैसे ?"— रक्षामंत्री ने पूछा ।

"इस बारे में मुझे शिक्षामंत्री से बात करनी है ।"— मंदबुद्धि बोला ।

अगले ही पल राजा ने शिक्षामंत्री टींचूमल को दरबार में बुलवाया । कहा— "मैंने निश्चय किया है कि काले घोड़े को अपना रक्षामंत्री बनाऊं । इसके लिए तुम्हें उसे बोलना सिखाना होगा ।"

"पर राजन, यह कैसे होगा ? घोड़ा कैसे बोलना सीखेगा ?"— टींचूमल चकित होकर बोला ।

"यह तो तुम्हें हर हालत में करना होगा । यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो तुम्हें सपरिवार देश से निकाल बाहर किया जाएगा । तुम तीन दिन के अंदर-अंदर मुझे अपना फैसला सुनाओ ।"— राजा ने गुस्से से कहा ।

टींचूमल से कुछ उत्तर नहीं बना । वह बहुत चिंतित हुआ । यही सोचता रहा— 'घोड़े को कैसे बोलना सिखाऊं ?'— इसी विचार में डूबा हुआ वह घर पहुंचा ।

टींचूमल की पत्नी बहुत बुद्धिमान और होशियार थी । अपने पति को उदास देख, बोली— "आज तुम बहुत उदास लग रहे हो । सब ठीक-ठाक तो है ?"

"आज महाराज ने मुझे एक बड़ी समस्या में उलझा दिया है ।"— कहते हुए टींचूमल ने पत्नी को सारी बात बता दी ।

पति की बात सुनकर वह बोली— "बस, इतनी-सी बात ! तुम्हारी समस्या इतनी जटिल नहीं है कि जिसका कोई समाधान ही न हो । मुझे इसका हल कुछ-कुछ मिल गया ।" कहकर उसने पति को सारी बात समझा दी ।



तीन दिन बाद मंदबुद्धि ने टींचूमल को बुला भेजा ।

उस दिन टींचूमल बहुत खुश था । "महाराज की जय हो ।"— कहकर वह दरबार में हाजिर हुआ ।

उसको देखते ही राजा ने पूछा— "तुमने क्या सोचा ?"

"महाराज, मुझे आपके काले घोड़े को बोलना सिखाना मंजूर है ।"— टींचूमल ने बड़े विश्वास के साथ कहा ।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए टींचूमल बोला— "महाराज, वैसे तो यह काम अत्यंत कठिन है, लेकिन आपकी इच्छा तो पूरी करनी ही होगी । हां, इसमें बहुत पैसा और समय लगेगा ।"

यह सोचकर कि घोड़ा बोलना सीख, रक्षामंत्री बनेगा, राजा मंदबुद्धि मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ । उसने टींचूमल से पूछा— "मेरा काला घोड़ा कितनी देर में बोलना सीख सकेगा ?"

"यही कोई पांच साल में ।"— टींचूमल ने उत्तर दिया— "और महाराज, इसके लिए आपको अपना काला घोड़ा मेरे पास छोड़ना पड़ेगा । पर उसके पालन-पोषण की जिम्मेदारी राज्य की ही होगी ।"

"मुझे यह सब मंजूर है ।"— राजा बोला ।

सारे राज्य में यह समाचार आग की भांति फैल गया, राजा अपने काले घोड़े को रक्षामंत्री बनाने जा रहा है। चारों ओर इस बात की चर्चा थी कि शिक्षामंत्री टींचूमल ने, राजा के काले घोड़े को बोलना सिखाने की जिम्मेदारी ली है।

राजा के इस फैसले से घोड़े का जीवन स्तर बहुत ऊंचा हो गया। देखते-देखते घोड़ों की कीमतें आसमान छूने लगीं। घोड़े पालने वालों की मौज हो गई।

कई लोगों ने यह सोचकर घोड़े खरीदे कि कल को वे भी मंत्री बन सकते हैं। दिन-प्रति-दिन घोड़ों का सम्मान बढ़ता ही गया। अब तो कोई भी घोड़ों से बोझा ढोने का काम न कराता। घोड़ों को घुड़सवारी और खेलों में भाग लेने जैसे कामों से भी छुट्टी मिल गई।

राजा ने अपने रक्षामंत्री को आदेश दिया कि वह सेना में भी घोड़ों का विशेष ध्यान रखे। उनके पालन-पोषण में किसी तरह से कोई कमी न आने पाए।

इसी आदेश के अनुसार रक्षामंत्री ने सेना से घोड़ों को हटाकर गधों को लगा दिया। सारे राज्य में घोड़ों की मस्ती हो गई। वे हट्टे-कट्टे और आराम पसंद बन गए।

इस बात की सूचना पड़ोस के राज्यों में भी फैल गई। राजा हींगूमल ने अपने मंत्रियों की सभा बुलाई। सभा में निर्णय किया गया कि राजा मंदबुद्धि से पिछली हार का बदला लेने का यह सुनहरा अवसर है।

राजा हींगूमल ने फिर एक बार मंदबुद्धि पर धावा बोल दिया। इस बार मंदबुद्धि की गधों पर लड़ने वाली सेना हींगूमल के तेज घुड़सवारों के सामने नहीं टिक सकी। स्वयं राजा के पास उसका काला घोड़ा नहीं था।

इस बार राजा की न केवल करारी हार हुई, बल्कि मंदबुद्धि अपने सैनिकों के साथ लड़ाई में मारा गया।

एक सनकी राजा ने अपनी सनक के कारण पूरे राज्य को नष्ट कर दिया।

(कश्मीरी लोककथा)



पचास में एक

—डा. शिवकुमार 'निडर'

शक्तिसेन माधवगढ़ के बलशाली राजा थे। उनके राज्य में गुणवानों का सम्मान होता था। राज्य में पानी की विकट समस्या थी। पानी की समस्या से निपटने के लिए राज्य में जगह-जगह पर बड़े-बड़े तालाब बने थे। उनमें बरसात का पानी इकट्ठा किया जाता था। फिर भी परेशानी तो थी ही।

एक दिन राज्य के सेनापति सुयोधन की एक नाग के डसने से मृत्यु हो गई। यह खबर सुन, राजा के पास सेनापति पद के उम्मीदवार आने लगे। पर वह कोई निर्णय नहीं कर पा रहे थे।

एक दिन दरबार में राजा ने घोषणा की— 'जो व्यक्ति सेनापति बनना चाहते हों, वे इस माह के अंतिम दिन दरबार में उपस्थित हों। उम्मीदवारों को एक माह तक दरबार में रखा जाएगा। फिर उनकी योग्यता की परीक्षा होगी। सफल उम्मीदवार को सेनापति बनाया जाएगा।'

घोषणा सुन, पचास उम्मीदवार दरबार में पहुंचे। उनमें एक गांव का निवासी मणिपाल भी था। राज्य की तरफ से उम्मीदवारों के आवास और भोजन की व्यवस्था थी।

एक दिन शक्तिसेन घोड़े पर बैठकर नगर में निकले। साथ में उम्मीदवार, मंत्री और कुछ सिपाही थे।

काफिला भीड़ भरे बाजार से गुजर रहा था। तभी

एक सांड़ भीड़ को रौंदता हुआ काफिले की तरफ भागा आ रहा था। लोग तितर-बितर हो गए। राजा घोड़े से गिर पड़े। उन्होंने भागकर एक मकान में शरण ली।

सांड़ ने एक बच्चे को सींगों पर उठाया और उसे दूर फेंक दिया। तभी मणिपाल निहत्था बाज की तरह उस पर टूट पड़ा। उसने सांड़ के दोनों सींग हाथों से पकड़ लिए। कभी सांड़ मणिपाल को पीछे धकेलता, तो कभी मणिपाल सांड़ को।

सांड़ ने मणिपाल को झटके से एक तरफ फेंक दिया। वह सींगों से उसे रगड़ देना चाहता था। कोई भी उनके पास जाने की हिम्मत नहीं कर रहा था। तभी मणिपाल की नजर पास पड़े एक डंडे पर पड़ी। एक छलांग लगाकर उसने डंडा उठा लिया।

मणिपाल ने सांड़ की नाक पर जोर से डंडा मारा। वह तिलमिला कर रह गया। फिर उसकी नाक और सिर पर डंडे मारे। सांड़ की नाक से खून का फौवारा फूट पड़ा। वह जमीन पर गिर पड़ा। सांड़ मर गया था। भीड़ ने लपककर मणिपाल को हाथों-हाथ ऊपर उठा लिया। राज्य में मणिपाल के साहस की चर्चा होने लगी। पांच दिन बाद उम्मीदवारों को राजा ने बुलाया। वह उनसे बोले— "इस समय राज्य पर युद्ध के बादल छाए हुए हैं। चंद्रगढ़ के राजा युद्धजीत सिंह ने अपनी सेना के साथ यहां से तीन मील दूर पहाड़ी पर अपना डेरा जमा रखा है। आप सभी कोई ऐसी युक्ति बताएं जिससे बिना खून-खराबा हुए, हम युद्ध में जीत जाएं।"

सभी उम्मीदवार तरह-तरह की युक्तियां बताने लगे। राजा को किसी का उत्तर पसंद न आया। फिर उन्होंने मणिपाल की ओर देखा। मणिपाल कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला— "महाराज, इस युद्ध को बिना खून-खराबे के जीता जा सकता है। यदि शत्रु के डेरे तक पानी और रसद पहुंचाने वाले साधनों को नष्ट कर दिया जाए, तो आसानी से हम जीत जाएंगे।" यह उत्तर सुन, राजा प्रसन्न हो गए। अभी उन्हें उम्मीदवारों को और परखना था।

अगले दिन सिपाही उम्मीदवारों को जंगल में ले गए। शाम को वे सिपाहियों के साथ नगर की तरफ लौट पड़े। रास्ते में एक बूढ़ा कराह रहा था। उसके शरीर में घाव होने के कारण जगह-जगह गंदे कपड़ों की पट्टियां बंधी थीं। वह पानी की रट लगा रहा था। लेकिन उम्मीदवार सिपाहियों के साथ बूढ़े पर उचटती-सी नजर डालते हुए वहां से चले गए।

मणिपाल घायल होने के कारण धीरे-धीरे चल रहा था। वह सबसे पीछे था। बूढ़े को देख, वहीं रुक गया। उसने कंधे से पानी की थैली उतारकर बूढ़े को पानी पिलाया।

बूढ़े का कराहना कुछ कम हुआ, तो मणिपाल बोला— "बाबा, आप कहां रहते हैं? रात होने को है। यहां जंगली जानवर भी आ सकते हैं। चलो, मैं आपको आपके घर पहुंचा देता हूं।"

मणिपाल ने उसे अपनी पीठ पर बैठाया। फिर चल पड़ा। वह कुछ कदम चला, तभी बूढ़े ने उससे रुकने को कहा। मणिपाल रुक गया।

बूढ़ा मणिपाल की पीठ से उतर पड़ा। उसकी तरफ देखते हुए बोला— "बेटे, भगवान ने चाहा, तो तुम माधवगढ़ के सेनापति अवश्य बनोगे।" मणिपाल ने आवाज पहचान ली। उसके मुंह से निकल पड़ा— "महाराज,.... आप.... !" पर राजा बिना कुछ बोले महल की तरफ बढ़ गए थे।

दूसरे दिन दरबार में शक्तिसेन ने घोषणा की— "मणिपाल को माधवगढ़ का सेनापति नियुक्त किया जाता है। उसमें बल, बुद्धि, साहस और उदारता है।" यह सुन मणिपाल आगे बढ़ा। राजा को प्रणाम किया। राजा ने उसे गले लगा लिया। ●





टिम - टिम

—अलका पाठक

लखीपुर में एक किसान रहता था । उसकी एक ही बेटी थी, नाम था चंदा । चंदा बहुत ही सुंदर, नेक और गुणी लड़की थी । एक दिन वह जंगल से लकड़ियां चुनकर लौट रही थी, तो मार्ग में नगर सेठ के सबसे छोटे पुत्र भानुगुप्त की नजर उस पर पड़ी । वह उस समय व्यापार के सिलसिले में परदेश से लौट रहा था ।

चंदा को देखकर, वह उसके रूप पर मोहित हो गया । उसने मन ही मन उससे विवाह करने का निश्चय कर लिया । कुछ दिनों के पश्चात चंदा से उसका विवाह हो गया । चंदा दिन-रात अपने सास-ससुर एवं जेठ-जेठानियों की सेवा करती, उन्हें खुश रखने का प्रयास करती, पर उसके गरीब परिवार के कारण वे उसे पसंद नहीं करते थे । उसकी दोनों जेठानियां उसके रूप और गुणों के कारण उससे जलती थीं । सेठ के बड़े दोनों पुत्र आलसी और कामचोर थे । सारे कारोबार का जिम्मा भानुगुप्त पर ही था । कुछ दिनों के पश्चात उसे व्यापार के सिलसिले में फिर से बाहर जाना था । रोती-बिलखती चंदा को जल्दी लौटकर आने का आश्वासन देकर, वह चला गया ।

उसके जाते ही चंदा की जेठानियों की तो मौज आ गई । वे चंदा को तरह-तरह से सतातीं । काम तो सारा वह करती, पर श्रेय वे दोनों स्वयं ले लेतीं । उसके बारे में उलटी-सीधी बातें कहकर सास-ससुर के कान भर देतीं । इससे सेठ-सेठानी भी चंदा से नाराज रहने लगे ।

एक दिन किसी बात पर क्रोधित होकर, उन्होंने उसे घर से निकाल दिया । घर से निकलने पर रोती हुई चंदा ने पीहर जाने का विचार इस भय से त्याग दिया कि उसके वहां जाने से पिता की बदनामी होगी । लिहाजा वह घने जंगल की ओर चल पड़ी । चलते-चलते शाम ढल गई । भूख-प्यास से उसका बुरा हाल था । तभी दूर उसको एक दीए की टिमटिमाती रोशनी नजर आई । प्रसन्न होकर वह उसी ओर चल दी । वहां पहुंचकर वह क्या देखती है कि एक छोटी-सी झोंपड़ी में दीए के प्रकाश में एक बुढ़िया चरखा कात रही है । बुढ़िया की अवस्था को देखकर चंदा को दया आ गई ।

वह उससे बोली—''लाइए मां जी, आप थक गई होंगी । अब चरखा मैं कात देती हूं ।'' बुढ़िया यह सुनकर बड़ी प्रसन्न हुई । बोली—''ठीक है बेटी, अब चरखा तुम कातो । एक बात याद रखना, जब तक मैं लौटकर न आऊं, चरखा कातना बंद मत करना ।'' यह कहकर वह चली गई और चंदा चरखा कातने बैठ गई । थकी होने पर भी सारी रात वह चरखा कातती रही । उसके हाथ दर्द करने लगे, लेकिन बुढ़िया नहीं आई ।

सुबह पौ फटते ही बुढ़िया आ पहुंची । चंदा को कातते देखकर वह खुश हो गई । फिर उसने उसे खिलाया-पिलाया और पहनने के लिए अच्छे कपड़े दिए । जब चंदा ने उसे अपनी कहानी सुनाई, तो उसका दिल पसीज गया । उसने अपने झोले में से एक सोने का लोटा निकाला । उसे चंदा को देकर बोली—''तुम बहुत ही दयालु लड़की हो । यह लोटा अपने पास रखो । मुसीबत में तुम्हारी मदद करेगा । जरूरत पड़ने पर भी इसे मत बेचना । अब तुम यहां से

पूरब दिशा की ओर चली जाओ। भगवान ने चाहा, तो तुम्हारी सारी परेशानियां दूर हो जाएंगी।'' लोटा ले बुढ़िया को प्रणाम कर, चंदा पूर्व दिशा की ओर चल दी।

दो दिन की थकान भरी लम्बी यात्रा के बाद उसने एक नगर में प्रवेश किया। भूखी-प्यासी होने के कारण वह एक घर के सामने चक्कर खाकर गिर पड़ी। उस घर में एक वृद्ध पति-पत्नी रहते थे। जब उन्होंने अपने घर के बाहर एक स्त्री को बेहोश पड़े देखा, तो वे उसे उठाकर अंदर ले गए। उसकी देखभाल करने लगे। दो-तीन दिनों में ही चंदा स्वस्थ हो गई। इन तीन दिनों में ही उसने महसूस किया कि उन पति-पत्नी के साथ-साथ, नगर के सभी लोगों के चेहरे पर उदासी बनी रहती है।

जब उसने इस उदासी का कारण पूछा, तो दुखी होते हुए वृद्ध बोले—''क्या बताऊं बेटी, हमारा राज्य पहले बड़ा खुशहाल था। राजा भी बड़े स्वस्थ और राजकाज पर पूरा ध्यान देने वाले थे। एक ही दुःख था कि राजा की कोई संतान नहीं थी। रानी के बहुत जोर देने पर संतान प्राप्ति के लिए राजा ने दूसरा विवाह कर लिया। संतान तो तब भी नहीं हुई, हमारे राजा निरंतर बीमार रहने लगे। दूर-दूर से वैद्य इलाज करने आए, पर राजा को ठीक नहीं कर सके। उधर राजकोष में भी निरंतर चोरी होने के कारण देश का बहुमूल्य सामान नष्ट हो रहा है। सैनिक चोर का पता ही नहीं लगा पा रहे हैं। न मालूम कौन-सी आफत हमारे देश पर मंडरा रही है? इसलिए हर व्यक्ति उदास रहता है।''

वृद्ध की बात सुनकर चंदा भी परेशान हो गई। वह काफी देर सोचती रही। फिर सोचते-सोचते सो गई। सपने में उसे लगा कि सुनहरा लोटा उसे पुकार रहा है। वह लोटे के पास गई, तो उसमें से आवाज आई—'चंदा, तुम तुरंत वैद्य बनकर राजा वीरसेन के पास जाओ। उन्हें खाने में रोज थोड़ा-थोड़ा जहर दिया जा रहा है। इस कारण वह अस्वस्थ रहते हैं। तुम अपनी चतुराई से इस राज्य की परेशानियां दूर करो, तो तुम्हारी मुसीबतें भी दूर होंगी।' यह कहकर लोटा चुप हो गया। चंदा हड़बड़ाकर उठ बैठी। सारी बातें याद कर, वह आश्चर्य से भर उठी।

सुबह वह तैयार होकर, राजभवन की ओर चल पड़ी। द्वारपाल द्वारा उसका संदेश सुनकर, बड़ी रानी ने उसे अंदर बुलाया। बीमार राजा अपने कमरे में एक पलंग पर लेटे हुए थे। उनकी नाड़ी देखकर, चंदा रानी से बोली—''महारानी, महाराज अवश्य ठीक हो सकते हैं। आपको मेरी एक शर्त माननी होगी। राजा केवल वही भोजन करेंगे जो मैं पकाऊंगी। उसके अतिरिक्त वह कुछ नहीं खाएंगे।'' रानी तो राजा को स्वस्थ देखना चाहती थी, उसने झट चंदा की शर्त मंजूर कर ली। अब चंदा वहीं राजमहल में रहने लगी। राजा को अपने हाथों से बनाकर खाना खिलाती। सोने के लोटे में पानी पिलाती। धीरे-धीरे विषहीन भोजन करने और चमत्कारी लोटे का पानी पीने के कारण, राजा स्वस्थ होने लगे।

एक दिन जब चंदा अपने कमरे में सो रही थी, तभी उसे एक सपना आया कि सुनहरा लोटा उससे कह रहा है—'चंदा, सबके सोने पर भी जो जागता रहे, वही बुद्धिमान होता है।' तभी चंदा की आंख खुल गई। वह लोटे की कही हुई बात का अर्थ निकालने की कोशिश करने लगी।



अगले दिन सबके सो जाने के पश्चात भी चंदा जागती रही। आधी रात बीत जाने के बाद अपने कमरे के बाहर पदचापों की आवाज सुनी। वह तुरंत ही सजग हो गई। उसके बाद उसने जो देखा, उससे उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। अगले दिन वह राजा और बड़ी रानी से बोली—''महाराज, आज आधी रात के पश्चात मैं आपको एक बड़ी विचित्र घटना दिखाऊंगी। पर तब तक इस बात की भनक किसी को नहीं पड़नी चाहिए।'' राजा-रानी मान गए। जब रात आई, तो वे दोनों छिपकर चंदा के कक्ष में बैठ गए। आधी रात बीत जाने के बाद कक्ष के बाहर पदचापों का स्वर सुनकर उन्होंने खिड़की से बाहर झांककर देखा, तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने देखा कि छोटी रानी अपनी दो दासियों के साथ गलियारे में से होकर जा रही थी। दासियों के सिरों पर दो बड़े-बड़े टोकरे रखे हुए थे। 'हो न हो इसमें राजकोष का धन है।'—राजा ने मन ही मन सोचा और वे तीनों छिपकर छोटी रानी का पीछा करने लगे।

थोड़ी देर बाद रानी अपनी दासियों सहित महल की छत की ओर जाने वाली सीढ़ियों की ओर बढ़ गई। अंतिम सीढ़ी पर पहुंचने के बाद वह गायब हो गई। राजा की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। चंदा उन दोनों को लेकर अंतिम सीढ़ी पर पहुंची और वहां दीवार में जड़ी हुई एक कील को दबा दिया। तुरंत वहां से दीवार हट गई। एक रास्ता नजर आने लगा जो कि एक सुरंग में खुलता था। वे लोग उस सुरंग में प्रविष्ट हुए। छोटी रानी का कहीं पता नहीं चला। राजा यह देखकर चकित रह गए कि सुरंग का अंतिम छोर शत्रु देश में खुल रहा था। अब राजा को राजकोष से चोरी होने वाले धन का कुछ-कुछ पता चल गया था। वे लोग वापस लौटकर चैन से सो गए।

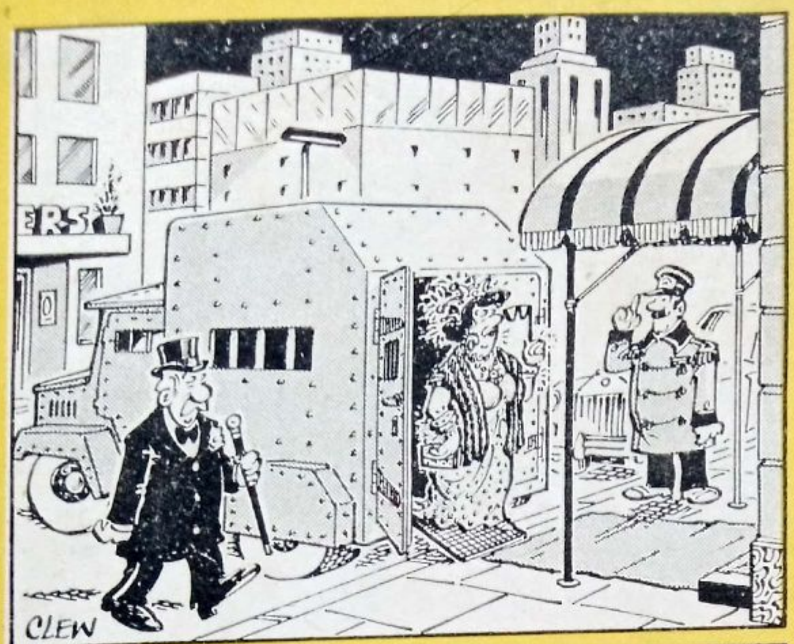
दूसरे दिन छोटी रानी को अपने सम्मुख बुलवाकर राजा ने कड़ाई से पूछा, तो भय से कांपते हुए उसने सब कुछ बता दिया। उसने बताया कि वह शत्रु देश की गुप्तचर है। अपने सुंदर रूप के मोहजाल में फंसाकर उसने राजा से विवाह कर लिया। धीरे-धीरे महल के कर्मचारियों को अपनी ओर मिलाकर वह खजाना अपने देश पहुंचाने लगी। राजा को विष देने की बात भी उसने स्वीकार कर ली। राजा के भोजन में वही विष मिलाती थी, ताकि धीरे-धीरे अस्वस्थ होकर राजा मृत्यु को प्राप्त हो जाएं और शत्रु राजा आसानी से इस देश पर अधिकार जमा लें।

विष की बात सुनकर, राजा को बड़ा विस्मय हुआ। पर जब चंदा ने कहा—''हां महाराज, आपको खाने में विष दिया जाता था। इसलिए मैंने आपको अपने हाथों से बना खाना खिलाना प्रारम्भ किया।'' सारी बात सुनकर राजा ने छोटी रानी और उससे मिले हुए सभी सेवकों को कठोर दंड दिया।

जब राजा को यह पता लगा कि चंदा एक बेसहारा स्त्री है, तो उन्होंने उसे अपनी पुत्री की तरह मानकर राजमहल में ही स्थान दे दिया। चंदा वहां सुखपूर्वक रहने लगी। उधर विदेश में बसे भानुगुप्त को व्यापार में इतना अधिक घाटा हो गया कि वह एकदम कंगाल हो गया। किसी तरह बड़ी मुश्किल से घर पहुंच पाया। यह देखकर उसे गहरा सदमा लगा कि उसकी अनुपस्थिति में उसके दोनों भाइयों ने पिता की सारी सम्पत्ति हड़प ली। उसके माता-पिता बड़े कष्ट के दिन व्यतीत कर रहे थे। चंदा का कहीं पता नहीं था। शोकाकुल होकर उसने चंदा को ढूंढ़ने का निश्चय किया।

उसके माता-पिता भी उसके साथ चल पड़े। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वे लोग उसी नगर में आ पहुंचे। एक दिन भूख से व्याकुल होकर वे राजभवन के बाहर भिखारियों की पंक्ति में जा खड़े हुए। महारानी के साथ भिखारियों में भोजन बांटती हुई चंदा ने अपने पति और सास-ससुर को फटेहाल अवस्था में देखा। दौड़कर वह उनके पास पहुंची। चंदा को पहचानकर भानुगुप्त के हर्ष का ठिकाना नहीं रहा।

सेठ-सेठानी भी चंदा से अपने किए हुए व्यवहार की क्षमा मांगने लगे। सबको लेकर चंदा राजा के पास आई। वह भी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने भानुगुप्त और उसके पिता को राजभवन में ही अच्छी नौकरी देकर रहने के लिए एक अलग भवन दे दिया। ●





आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ।**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट ।

कहानी लिखो : १०९

सामने प्रकाशित चित्र को देखकर एक रोचक कहानी लिखिए । उसे १० दिसम्बर '९२ तक **सम्पादक नंदन, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए । चुनी हुई कहानी को पुरस्कार मिलेगा । उसे प्रकाशित भी किया जाएगा । **परिणाम- फरवरी '९३**



चित्र पहेली : १०९

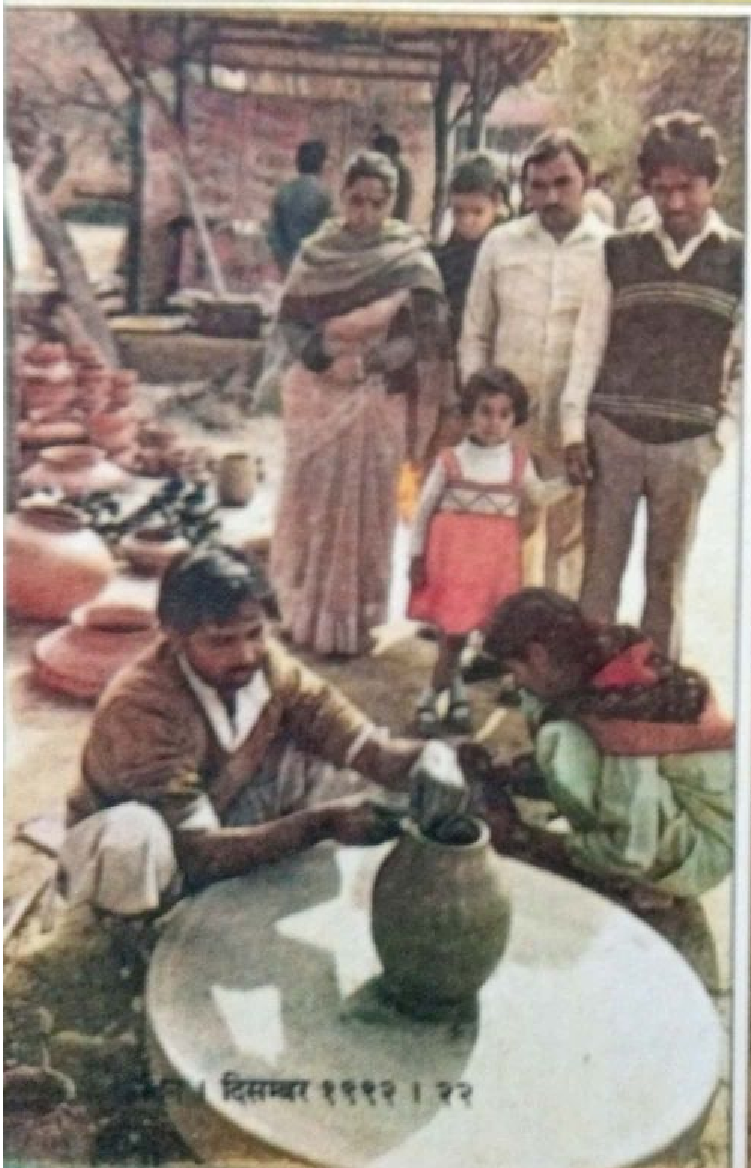
'फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता' विषय पर चित्र बनाकर १० दिसम्बर '९२ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए । **चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा उम्र स्पष्ट शब्दों में अवश्य लिखें । चित्र पेंसिल से नहीं, चटख रंगों से बनाकर भेजें ।** चुना हुआ चित्र पुरस्कृत कर, प्रकाशित किया जाएगा । **परिणाम-** मार्च ९३ अंक

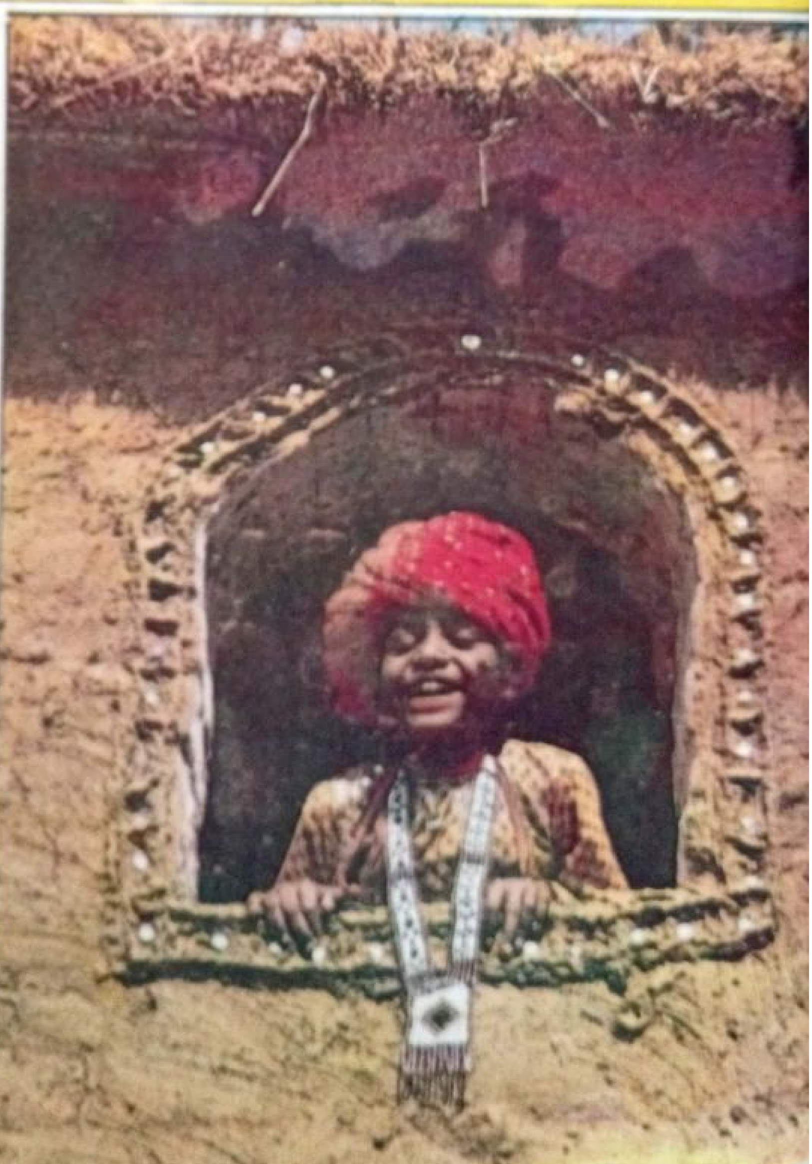


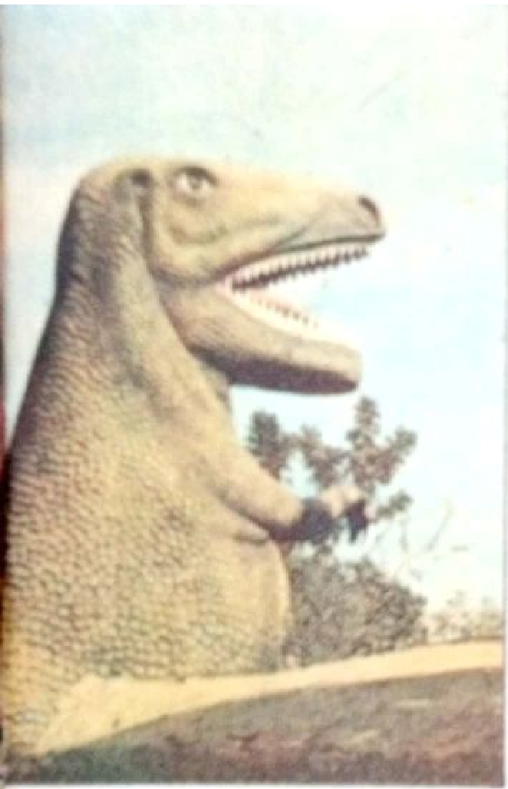
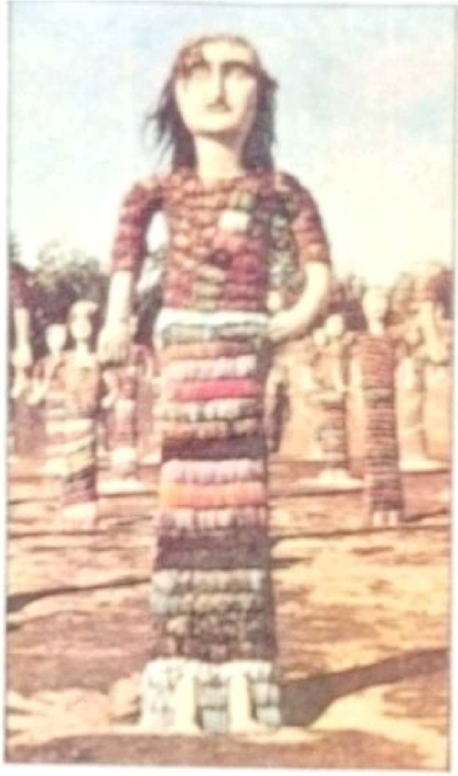


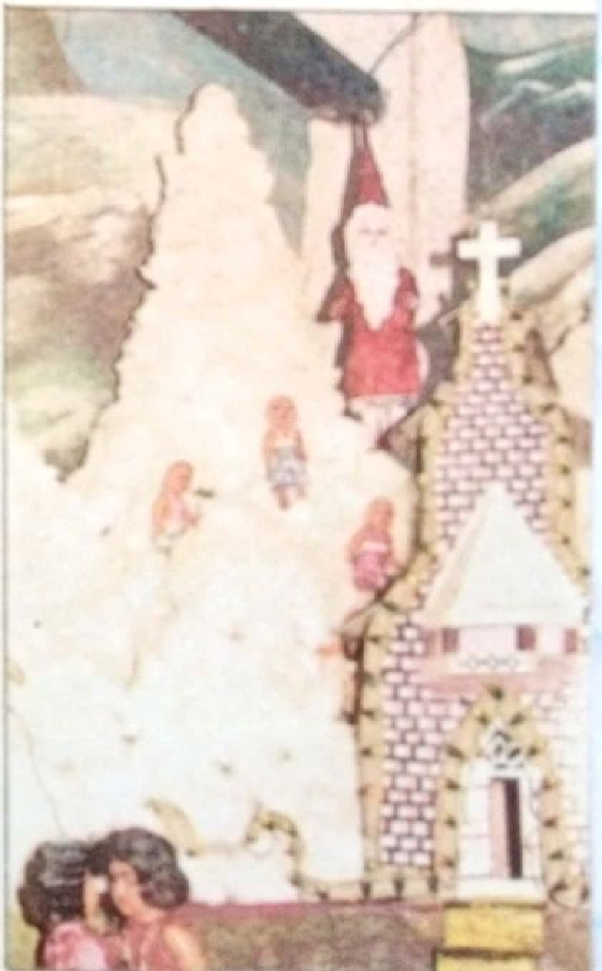
माटी नए-नए रूप धरे

माटी से मूरत, मंदिर और घर बनते हैं। बस, कारीगर के हाथ लगते हैं, तो कितने ही रंग-रूप उभर आते हैं। मन करता है, सब को सजा लें।






चित्र : आर.के. गोयल, विद्याव्रत, सुशील कुमार, देबाशीश बनर्जी, सूरज एन. शर्मा, धर्मनाथ प्रसाद



विश्व की महान कृतियां : इंग्लैंड

ले चली हवा

—जॉर्ज मेक्डोनाल्ड

एक था डायमंड । वह अपने माता-पिता के साथ अस्तबल के ऊपर बने छोटे-से घर में रहता था ।

एक रात डायमंड गहरी नींद में सोया हुआ था । अचानक तेज, शीतल हवा के झोंके से उसकी नींद खुल गई । उसने सुना, कोई उसका नाम लेकर पुकार रहा है—"डायमंड ! डायमंड ! उठो !"

"कौन ?"—डायमंड ने आंखें मलते हुए पूछा ।

—"मैं हूं उत्तरी हवा ।"

"उत्तरी हवा !" —डायमंड ने आश्चर्य से पूछा ।

–"हां, क्या तुम मेरे साथ घूमने चलोगे ?"

–"जरूर ! पर मेरे गरम कपड़े तो मां के कमरे में हैं ।"

"उनकी जरूरत नहीं । तुम्हें ठंड नहीं लगेगी । मैं सारा इंतजाम कर दूंगी ।" —आवाज आई ।

–"तो ठीक है, उत्तरी हवा ! तुम बहुत भली हो।"

—"तो फिर चलो मेरे साथ।" उत्तरी हवा ने कहा।

डायमंड बिस्तर के बाहर निकल आया और उत्तरी हवा के साथ चल पड़ा—एक अनजान यात्रा पर।

उत्तरी हवा की पीठ पर सवार डायमंड उड़ने लगा। तभी अपने पिता के मालिक कोलमैन का घर नजर आया। उत्तरी हवा की पीठ से उतरकर वह उस तरफ बढ़ा।

डायमंड ने खिड़की से देखा। घर के सब लोग गहरी नींद में हैं। तभी कोई आवाज सुनकर उसने पीछे देखा। उत्तरी हवा न जाने कहां गायब हो गई थी।

डायमंड घबराकर रोने लगा। उसकी आवाज सुन कोलमैन की बेटी बाहर आई। उसने डायमंड को पहचान लिया। उसने सोचा—'डायमंड को शायद नींद में चलने की आदत है।' इसलिए वह उसे उसके घर छोड़ आई।

इसके कुछ दिनों बाद की घटना है। डायमंड एक रात अपने बिस्तर पर लेटा था। उसे नींद नहीं आ रही थी। उसने सुना—"डायमंड, खिड़की खोलो। मैं उत्तरी हवा हूं।"

"तुम फिर आ गईं!" —डायमंड बोल उठा।

—"हां, चलोगे मेरे साथ?"

डायमंड पुलक उठा। बोला—"जरूर चलो।" उत्तरी हवा ने एक सुंदर लड़की का रूप धर लिया था। डायमंड उसके साथ चल दिया।

उत्तरी हवा ने डायमंड को बताया कि वह लंदन जा रही है। उसे सारा शहर साफ करना है। फिर उसने कहा—"डायमंड, तुम मेरा हाथ थामे रहना।"

थोड़ी देर बाद वे लंदन शहर के ऊपर थे। डायमंड के कानों में सांय-सांय की तेज आवाजें गूंजने लगीं। उसने उत्तरी हवा से पूछा—"ये कैसी आवाजें हैं?"

—"मैं तेज-तेज झाड़ू लगा रहा रही हूं। यह उसी की आवाज है।"

—"लंदन इतना बड़ा शहर है, मैंने कभी



कल्पना भी नहीं की थी।"

सहसा डायमंड की दृष्टि सड़क पर खड़ी एक लड़की पर पड़ी। तेज हवा के कारण वह परेशान थी। डायमंड का मन पिघल गया। वह उत्तरी हवा से उसकी सहायता करने का अनुरोध करने लगा।

—"तुम बहुत दयालु हो डायमंड। यह अच्छा गुण है, पर मुझे अभी बहुत काम करना है। मैं तुम्हें यहीं छोड़ देती हूं। तुम उस लड़की की सहायता करो।"

अगले क्षण वह लड़की डायमंड को देखकर चौंक उठी। क्योंकि वह एकाएक प्रकट हो गया था। उसने डायमंड से उसका परिचय पूछा। डायमंड ने उसे अपने बारे में बता दिया। फिर उत्तरी हवा की कहानी सुनाई। लड़की को उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। वह बोली—"भला ऐसा भी कहीं होता है। अब हवा कम हो गई है। मैं अपने घर जाऊंगी। तुम भी अपने घर जाओ।"

सुबह हुई, तो वे चल पड़े। चलते-चलते एक मकान के पिछवाड़े पहुंचे। डायमंड ने दरवाजे को धक्का दिया, तो वह खुल गया। सामने एक बाग था। लेकिन यह क्या! यह तो उसके अपने घर का बगीचा था। डायमंड अचानक अपने घर पहुंच गया था। उसने लड़की से भीतर आने को कहा, पर उसने इनकार कर दिया और वहां से चली गई।

इसके बाद कई दिन बीत गए। एक शाम डायमंड एक बाग में घूमने गया। वह बाग के सुंदर फूलों को देख रहा था। तभी एक फूल से एक भौंरा उड़कर हवा में विलीन हो गया।

"ओह, मैंने तो सोचा था कि यह भौंरा रात भर फूल पर ही बैठा रहेगा" —किसी ने बारीक आवाज में कहा ।

डायमंड चौंक पड़ा । वहां कोई न था । 'तब वह किसकी आवाज थी?'—उसने सोचा । फिर पूछ बैठा—"तुम कौन हो ? क्या कोई परी हो ?"

—"नहीं, मैं परी नहीं हूं । देखो, मैं इस फूल पर हूं ।" डायमंड ने यह आवाज सुनी और उस दिशा में देखने लगा । उसे एक फूल पर एक नन्ही-सी तितली नजर आई ।

तभी उस तितली ने पंख फड़फड़ाकर कहा—"डायमंड, तुमने मुझे पहचाना नहीं । मैं हूं उत्तरी हवा । अच्छा, अब मैं जाऊंगी । आज रात मुझे एक जहाज डुबोना है ।"

—"यह तो बुरा काम है । तुम तो दयालु हो । फिर जहाज क्यों डुबाओगी ?"

"तुम नहीं समझ पाओगे । चाहो, तो चलो मेरे साथ !" —उत्तरी हवा ने कहा ।

अगले पल उत्तरी हवा ने नन्ही तितली का रूप त्यागकर एक सुंदर युवती का रूप धर लिया । उसने डायमंड को गोद में उठा लिया और उड़ चली ।

सहसा उत्तरी हवा की रफ़्तार बढ़ गई । गांव, नगर एक-एक कर नीचे से गुजरते जा रहे थे । थोड़ी ही देर में वे समुद्र तट पर पहुंच गए । तट के पास ही एक गिरजाघर था । उत्तरी हवा ने कहा—"डायमंड, अब मैं जहाज डुबोने जाऊंगी । तब तक तुम इसी गिरजाघर में आराम करो ।" उसने डायमंड को एक बड़ी-सी खिड़की की राह गिरजाघर के भीतर उतार दिया । डायमंड थक गया था । शीघ्र ही उसे नींद आ गई । पर कुछ लोगों की बातों की आवाज से वह जाग गया । उसने देखा, गिरजाघर की खिड़की के पास खड़े तीन संत आपस में उसी के बारे में बातें कर रहे थे । उसने सुना, वे कह रहे थे— 'हो न हो, यह उत्तरी हवा की करामात है । वही इस बच्चे को यहां लाकर छोड़ गई है ।'

डायमंड चाहता था कि वह संतों से उत्तरी हवा के बारे में बात करे । लेकिन एकाएक उसने स्वयं को अंधकार में पाया । यहां न गिरजाघर था, न संत ! वह पुआल पर लेटा था । अभी सुबह नहीं हुई थी ।

कुछ दिनों बाद डायमंड अपने माता-पिता के साथ सैंडविच नामक एक बंदरगाह पर गया । वहां उसकी मौसी रहा करती थी ।

रात हुई । डायमंड बिस्तर पर लेटा था । पर उसे नींद नहीं आ रही थी । सहसा उसने उत्तरी हवा की आहट सुनी । वह झट उठ बैठा । कुछ पलों में उसके सामने उत्तरी हवा थी ।

एक बार फिर डायमंड हवा की पीठ पर सवार था । इस बार उत्तरी हवा उसे बहुत दूर ले गई ।

डायमंड ने नीचे नजर डाली । वे लोग समुद्र पर उड़ रहे थे । समुद्र में एक नौका चली जा रही थी । उत्तरी हवा ने भी उसे देखा । उसने डायमंड से कहा— "देखो, मैं तुम्हें उस नाव के पाल पर लिटा दूंगी । तुम डरना मत ।" और उसने डायमंड को नाव के बड़े-बड़े पालों के बीच लिटा दिया ।

डायमंड को लगा, जैसे वह किसी झूले में लेटा है । चारों तरफ लहरों का शोर हो रहा था । उत्तरी हवा तेजी से नाव को ढकेल रही थी । कितने घंटे बीत गए, डायमंड को पता नहीं चला । वह सो गया था । अचानक बरफीली हवा के झोंके से उसकी नींद खुल गई । उसने देखा, दूर एक बड़ा-सा जहाज चला जा रहा है । तभी उत्तरी हवा ने उससे कहा—"देखो, वह जहाज उत्तरी ध्रुव जा रहा है । अब हम लोग उस जहाज पर यात्रा करेंगे ।" और हवा ने उसे गोद में उठाकर उस विशाल जहाज पर पहुंचा दिया ।

डायमंड ने देखा, जहाज के आसपास बर्फ की चट्टानें तैर रही हैं । उत्तरी हवा ने डायमंड को फिर गोद में उठाया और उस विशाल चट्टान में बनी एक गुफा में पहुंचा दिया ।

डायमंड घबरा गया । तभी उत्तरी हवा ने कहा—"मैं जा रही हूं, पर मैं जल्दी ही लौटूंगी । तुम डरना मत ।"

कुछ समय बाद जब उत्तरी हवा लौटी, तो डायमंड उसका चेहरा देखकर घबरा गया । उसने

उत्तरी हवा से पूछा—''तुम बीमार तो नहीं हो, उत्तरी हवा ?''

—''नहीं, मैं किसी के बुलावे का इंतजार कर रही हूं।''

—''उत्तरी हवा, ठीक है तुम इंतजार करो, तब तक मैं तुम्हारी पीठ के पीछे स्थित प्रदेश को देखना चाहता हूं।''

—''बड़ी आसानी से। तुम मेरे बीच से गुजर जाओ।''

—''पर तुम्हारे बीच से गुजरूंगा कैसे ?''—डायमंड ने पूछा।

''जैसे किसी दरवाजे से गुजरते हो। पर सावधान रहना। कहीं चोट न लग जाए।''—उत्तरी हवा ने उसे चेतावनी दी। डायमंड उत्तरी हवा के बीच से गुजरने लगा। चलते-चलते वह बेहोश हो गया। और जब आंख खुली, तो उसने स्वयं को उत्तरी हवा की पीठ के पीछे वाले क्षेत्र में पाया।

इस प्रदेश में डायमंड कई दिनों तक रहा। उसने विचित्र दृश्य देखा जब वह अपने माता-पिता को देखना चाहता था, तो एक खास तरह के पेड़ पर चढ़ जाता। वहां से वह अपने माता-पिता को आसानी से देख सकता था। न जाने क्या जादू था।

एक दिन वह पेड़ पर बैठा था। अचानक उसे उत्तरी हवा की याद आई। वह पेड़ से नीचे उतर आया। पर यह क्या। पल भर में वह सारा प्रदेश लुप्त हो गया। उसकी जगह डायमंड को उत्तरी हवा नजर आई। उसका चेहरा बर्फ की तरह सफेद था। उसने डायमंड के बाल सहलाए। फिर कहा ''डायमंड, मुझे बहुत सारे काम करने हैं। हम लोग कुछ ही देर में यहां से चल देंगे।''

डायमंड आगे बढ़ा। इसी बीच उत्तरी हवा गायब हो गई और उसकी जगह एक मकड़ी नजर आई। वह तेजी से बड़ी होती गई। डायमंड उसके पीछे दौड़ा, तो वह बिल्ली बन गई। डायमंड बिल्ली के पीछे दौड़ा, तो वह चीता बन गई। अगले पल वह चीता बर्फ के पहाड़ों पर उड़ने लगा। फिर नजरों से



ओझल हो गया।

डायमंड आश्चर्य से देखता रह गया।

''क्यों, मजा आया ?''—किसी ने उसकी पीठ के पीछे से कहा।

डायमंड ने मुड़कर देखा, तो पीछे एक सुंदर युवती का रूप धरे उत्तरी हवा खड़ी थी। उसने प्यार से डायमंड को गोद में उठाया और दक्षिण दिशा की ओर उड़ चली। धीरे-धीरे डायमंड को नींद आ गई।

जब नींद खुली, तो उसने अपनी मां को देखा। वह उस पर झुकी हुई थी। उसने आंखें खोलीं, तो वह फूट-फूटकर रो पड़ी। उसने पूछा—''मां, तुम रो क्यों रही हो ?''

—''बेटा तुम कितने बीमार थे।''

—''मां, मैं तो उत्तरी हवा के साथ घूमने गया था।''

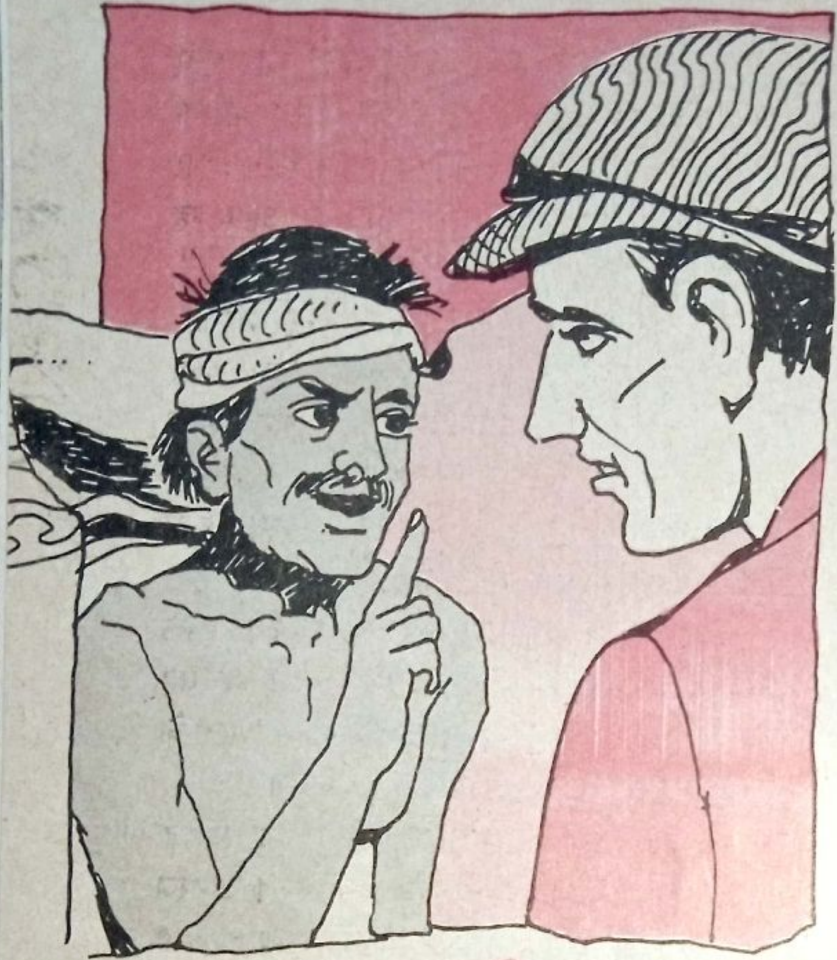
''बेटा, तुम तो बेहोश थे।''—मां ने कहा। तभी डाक्टर आ गया। डाक्टर ने डायमंड की मां को अलग ले जाकर कहा—''अब वह ठीक हो रहा है।''

मां ने कहा—''पर वह न जाने किस प्रदेश की यात्रा की बात कर रहा है।''

डाक्टर बोला—''चिंता न करें।''

कुछ ही दिनों में डायमंड पूरी तरह स्वस्थ हो गया। फिर वह माता पिता और छोटे भाई के साथ लंदन गया। यात्रा के दौरान उसे अक्सर उत्तरी हवा की याद आती। रात में कभी-कभी उत्तरी हवा उसके पास चली आती। पर यह बात कोई दूसरा न जान पाता।

(प्रस्तुत : शकुंतला शुक्ल)



चमक की ललक

—जेम्स बी. मसीही

बात देहरादून की है। वैलहम स्कूल के पीछे घसिया धोबी अपने परिवार के साथ रहता था। उसके घर के सामने बहुत बड़ा मैदान था। मैदान के आगे एक छोटी-सी नदी बहती थी। उसी नदी में घसिया कपड़े धोता और सुखाने के लिए मैदान में फैला देता। घर के पास ही घसिया ने एक बड़ा-सा पत्थर रखा हुआ था। इसी पत्थर पर पटककर वह कपड़े धोता था। पत्थर नीचे से गोल था। ऊपर सतह चपटी थी। भारी इतना था कि दस-बारह आदमियों की मदद से घसिया उसे नदी से लाया था।

एक दिन कोई अंगरेज घसिया के घर के पास से जा रहा था। अचानक उस पत्थर को देखकर रुक गया। फिर पास जाकर उसे छूकर और हिलाकर बहुत देर तक देखता रहा। घसिया उस समय बरामदे में बैठा, यह सब देख रहा था। अंगरेज ने घसिया को इशारे से अपने पास बुलाया। उस पत्थर के बारे में पूछा। घसिया ने बताया कि वह पत्थर उसने कपड़े धोने के काम के लिए रखा है। यह सुन, अंगरेज ने घसिया से कहा— "तुम काम के लिए कोई दूसरा पत्थर लगा लो। यह पत्थर मुझे दे दो। इसके बदले में, मैं तुम्हें कुछ रुपए दे दूंगा।"

घसिया धोबी अचकचा गया। इस बारे में कोई निर्णय न ले सका। उसने यह कहकर अंगरेज को विदा कर दिया कि वह अपनी पत्नी से पूछकर बताएगा।

दो दिन बाद वह अंगरेज फिर घसिया के घर पहुंचा। उस समय घसिया घर पर नहीं था। केवल उसका लड़का और पत्नी ही थे। अंगरेज ने घसिया की पत्नी को उस पत्थर के विषय में बताया। कहा कि वह उन्हें उस पत्थर के बदले दो सौ रुपए तक दे देगा। यह सुन, घसिया की पत्नी सोच में पड़ गई। एक मामूली-से लगने वाले पत्थर के दो सौ रुपए! उसने अंगरेज से कह दिया कि कल आ जाए। वह अभी घर पर नहीं हैं।

शाम को घसिया घर आया, तो उसकी पत्नी ने अंगरेज की सारी बातें उसे बता दीं। रात भर दोनों पति-पत्नी उस पत्थर के बारे में सोचते रहे। सुबह उठते ही घसिया और उसकी पत्नी दोनों पत्थर के पास गए। ध्यान से उसे देखने लगे। सूरज की किरणों में उस पत्थर की सफेद सतह चांदी की तरह चमक रही थी। उन दोनों ने आपस में बातचीत की। वे इस नतीजे पर पहुंचे कि शायद यह कोई कीमती पत्थर है। क्यों न किसी सुनार या पत्थरों के जानकार को दिखाकर इसकी जांच करा ली जाए।

बिना नाश्ता किए घसिया एक सुनार के पास जा पहुंचा। उसे सारी बात बताकर चलने को कहा। सुनार घसिया के साथ उसके घर आया। अच्छी तरह पत्थर को देखा-परखा, लेकिन उसकी समझ में कुछ न आया। धूप में वह पत्थर चमचमा रहा था। यह देख और सभी बातें सुन, सुनार के दिल में लालच आ गया। उसने सोचा— 'जब वह अंगरेज इस पत्थर के दो सौ रुपए देने को तैयार है, तो कुछ न कुछ खास

बात इस पत्थर में जरूर है ।' बस, उसने घसिया से कहा कि वह उसे इस पत्थर के पांच सौ रुपए देगा। मगर शर्त यह है कि न तो वह इसे किसी और सुनार को दिखाएगा और न ही वह इसे अब अंगरेज को देगा ।

अब तो घसिया और भी सोच में पड़ गया । शाम को जब अंगरेज घसिया के घर आया, तो घसिया ने उसे सारी बात साफ-साफ बता दी । यह भी बता दिया कि उसे संदेह है कि यह पत्थर काफी कीमती है । अंगरेज उसकी सचाई और भोलेपन पर मुसकराने लगा । घसिया को समझाया कि इस पत्थर में ऐसी कोई विशेष बात नहीं है । यह केवल एक साधारण पत्थर है । बस, उसके सफेद रंग और अनूठी शक्ल के कारण,वह उसे अपने बगीचे में रखने के लिए लेना चाहता है । घसिया कुछ सोचने लगा, तो अंगरेज बोला— "अगर तुम इस पत्थर की कीमत पांच सौ रुपए चाहते हो, तो मैं पांच सौ ही देने को तैयार हूं ।"

अंगरेज घसिया से यह बात कर ही रहा था कि अचानक वह सुनार भी वहां आ पहुंचा । घसिया ने उससे अंगरेज द्वारा उस पत्थर के पांच सौ रुपए देने की बात कही, तो पत्थर के बारे में उसका संदेह और बढ़ गया । अंगरेज ने सुनार को भी यही समझाया कि वह कोई कीमती पत्थर नहीं है । उसकी आकृति व चमकदार सफेद रंग के कारण ही वह उसे लेना चाहता है । यह सुनकर उसका संदेह और पक्का हो गया । सुनार को अंगरेज की बात पर बिलकुल भी विश्वास न हुआ । वह घसिया से बोला—"मैं इस पत्थर के अब आठ सौ रुपए तक दे सकता हूं ।"

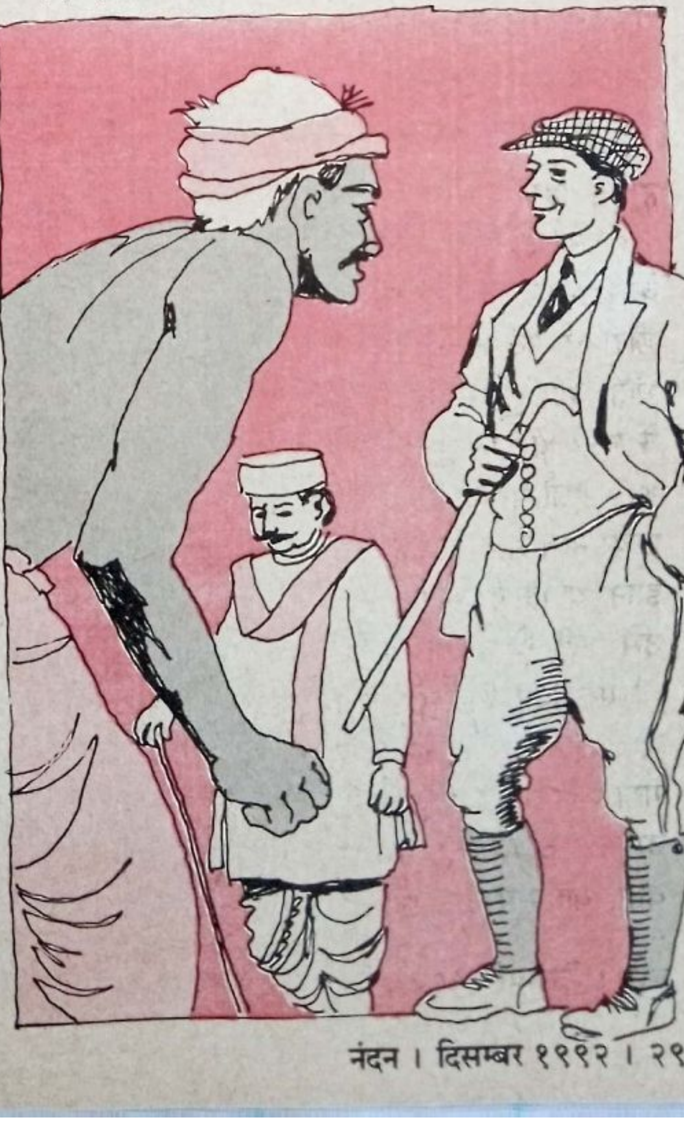
घसिया बेचारा सीधा-सादा आदमी था । वह अंगरेज की तरफ देखने लगा । फिर सुनार से बोला— "सबसे पहले इन अंगरेज साहब ने पत्थर को पहचाना और उसकी कीमत लगाई है । इस कारण इस पत्थर को लेने का पहला अधिकार इन्हीं का है ।"

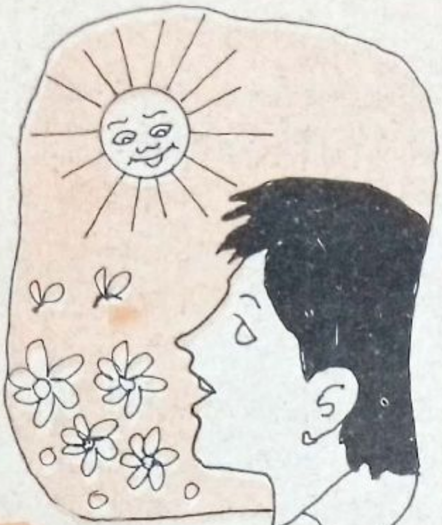
अंगरेज को भी सुनार पर गुस्सा आ रहा था । उसने एक बार फिर सुनार को समझाने की कोशिश की । पर सुनार के मन में लालच भी था और शंका भी कि यह पत्थर मामूली नहीं है । उसने आठ सौ रुपए निकालकर घसिया के हाथ में थमा दिए । घसिया बेचारा अंगरेज के चेहरे की ओर देखने लगा । पर अंगरेज ने घसिया से कहा— "ठीक है, आप यह पैसा रखिए और सुनार को ही पत्थर लेने दीजिए ।"

सुनार वह पत्थर उठवाकर अपने घर ले आया । बहुत-से सुनारों और पत्थरों के जानकारों को वह पत्थर बेचना चाहा, लेकिन उसे निराशा हुई । लोग उसका मजाक उड़ाते और कहते— "अपने को सुनार कहता है और बेचने निकला है निरा पत्थर । उस पत्थर के तो कोई पचास रुपए भी न देगा ।"

सुनार अपना सिर पकड़कर बैठ गया । उसके दिमाग से लालच का भूत उतर गया । बैठे-बैठे वह कई दिन तक मन ही मन बुदबुदाता रहा— 'धोबी के पत्थर ने हमें अच्छा सबक सिखा दिया ।'

एक दिन सुनार घसिया के घर उस अंगरेज का पता पूछने भी गया । मगर घसिया क्या बताता ! अंगरेज का पता-ठिकाना तो उसे भी पता न था । ●





एक सुबह

खिलखिलाओ, गीत गाओ,
फूल से बातें करो ।

हो रही है भोर, लाली
झील के जल में खिली है,
झिलमिलाती किरन परियां
लग रहीं कितनी भली हैं ।
झूम नाचो, मुसकराओ,
फूल से बातें करो ।

महकता है बाग ऐसे
जिस तरह चंदन महकता,
ले उमंगें, गीत गुन-गुन
गा भ्रमर दल है चहकता ।
तितलियों के साथ आओ,
फूल से बातें करो ।

झूमती चलती हवा ने
हर तरफ जादू किया है,
इंद्रधनुषी रंग वाला
फूल का मौसम दिया है ।
लहलहाओ, महमहाओ
फूल से बातें करो ।

—रामसेवक शर्मा

हरियल-हरियल

घर पिछवाड़े दादा जी की
बगिया लगे कमाल की !

जुही, चमेली, बेला फूले
कलियां करे ठिठोली हैं,
मैना, बुलबुल, सोनचिरैया
बोले मीठी बोली हैं ।
भौंरा गाए, तितली नाचे,
बात न जाने ताल की !

लीची, जामुन, आम, बेर हैं
टहनी-टहनी फैली है,
पत्तों के झुरमुट में लटकी
गुच्छों वाली थैली है ।
पके-पके रस भरे फलों से
शान बढ़ी है डाल की !

शीशम है, सागौन, बांस सब
लगते कितने सुंदर हैं,
उछल-कूद करते आ-आकर
जिन पर सारे बंदर हैं ।
खूब शोभती हरियल-हरियल
पांती ताल-तमाल की !

—राजनारायण चौधरी



ता-ता थैया

एक चिरैया
है गौरैया ।
खूब फुदकती
और चहकती,
उड़ती दिन भर
किंतु न थकती ।
गाए, नाचे
ता-ता थैया !

द्वार-द्वार पर
कभी तार पर,
मन को रहती
नहीं हारकर ।
जाती पनघट
ताल-तलैया !

बड़ी सयानी
श्रम की रानी,
कभी न मांगे
दाना-पानी ।
इसे निहारे
छोटा भैया !

जोड़े तिनका
अपने मन का,
लाड़-प्यार
पाती जन-जन का।
उड़े फुर्र से
बैठ मड़ैया !

—राजा चौरसिया





हंसते-गाते

जब घर आते हैं पापा जी,
सात बजे होते हैं जी ।
घर में आते ही पापा जी,
हाथ-पैर धोते हैं जी ।
साथ-साथ खाना खाते हम,
सभी जमा होते हैं जी ।
कथा-कहानी, मीठी गपशप,
सुन करके सोते हैं जी ।
हंसते-गाते हम जगते हैं,
कभी नहीं रोते हैं जी ।

—गोपीचंद श्रीनागर



उजली रात

— अमित राय

बंगाल में एक राज्य था मयूरेश्वर। वहां के राजा शिलादित्य बहुत पराक्रमी, मगर निर्दयी थे। उनके दिल में दया बिल्कुल नहीं थी। प्रजा हर समय भयभीत रहती थी। डर के मारे प्रजा उनके आदेश का पालन करती थी, पर मन ही मन राजा को कोसती रहती थी।

राजा शिलादित्य की कोई संतान न थी। बहुत से यज्ञ करने के बावजूद उन्हें संतान सुख न मिला। दुःख भुलाने के लिए राजा शिकार खेलने में मगन रहते थे।

एक रात राजा ने स्वप्न में देखा कि राजवंश के कुलदेवता उनसे कह रहे हैं— 'बेटा, तुम्हारे राज्य की उत्तर दिशा में घना जंगल है। उसी जंगल के उत्तर-पश्चिम में झरने के किनारे एक मायावी हिरण रहता है। किसी भी अमावस्या की रात में अगर तुम उसका वध कर सको, तो तुम्हें संतान सुख अवश्य मिलेगा। वह हिरण असल में एक शापग्रस्त महर्षि हैं, जो त्रिकालज्ञ भी हैं।'

अगले दिन सुबह ही राजा ने राज ज्योतिषी को बुलाया। रात वाले स्वप्न के बारे में उनके विचार जानने थे।

ज्योतिषी ने सोच-विचार कर बताया— "महाराज, वह हिरण सचमुच एक शापग्रस्त ऋषि हैं। फिर जब कुलदेवता ने खुद स्वप्न में ऐसा निर्देश दिया है, तो सच ही है।"

राजा शिलादित्य ने मंत्री को बुलाया। राज्य की उत्तर-पश्चिम दिशा के घने जंगल में मायावी हिरण का शिकार खेलने के प्रबंध का आदेश दे दिया। अमावस्या में दो ही दिन रह गए थे।

अमावस्या के दिन सुबह राजा नदी में नहाए। कुलदेवता के मंदिर में जाकर पूजा करने के बाद, शिकार खेलने जाने के लिए तैयार हुए। पुजारी ने प्रसाद और फल दिए। रानी ने राजा के माथे पर चंदन का टीका लगाया। शंख ध्वनि से राजा को विदाई दी गई। विशाल सेना के साथ राजा घोड़े पर सवार होकर चल पड़े।

बहुत-सा रास्ता पार कर, पूरी फौज लेकर राजा पहुंच गए राज्य की उत्तर दिशा के जंगल में। अमावस्या की काली रात थी। रह-रहकर हिंसक जानवरों का गर्जन सुनाई दे रहा था। झींगुर बोल रहे थे। राजा के साथी मशालें जलाकर रास्ता दिखा रहे थे। मशाल की आग को देखकर जानवरों ने इधर-उधर भागना शुरू कर दिया।

राजा शिलादित्य आगे बढ़ते जा रहे थे। धीरे-धीरे घना जंगल और घना होता जा रहा था। राजा इतनी तेज जा रहे थे कि उनके साथ चलने वाले पिछड़ गए। कुछ दूर जाकर राजा को खयाल आया कि मशालधारी लोग पीछे ही रह गए। फिर भी वह हिरण के शिकार के लिए आगे बढ़ते रहे।

राजा ने दुगनी गति से घोड़े को दौड़ाया और अंधेरे में ही आगे बढ़ते गए। जैसे भी हो, उन्हें मायावी हिरण को ढूंढ़ निकालना था।

अचानक अंधेरे को चीरती हुई बिजली की चमक दिखाई दी। राजा को सामने एक झरना दिखाई दिया। उनका मन आनंद से नाच उठा। सोचा, शायद कुलदेवता उन्हें ठीक जगह पर ले आए हैं। ठीक उसी समय चारों तरफ एक मीठी खुशबू छा गई। अंधकार की काली परत हट गई। चारों दिशाएं एक मृदु रोशनी में नहा उठीं। अमावस्या की काली रात उज्ज्वल हो उठी। अपार कौतूहल से राजा ने देखा, उसी झरने के नीचे एक हिरण खड़ा है। वह मनुष्य की आवाज में

राजा को अपने पास बुला रहा था।

राजा के मुंह से कोई आवाज नहीं निकल सकी। अचंभित होकर राजा हिरण के बुलाने पर आहिस्ता-आहिस्ता उसके पास पहुंच गए। हिरण को इतने करीब पाकर भी तीर चलाना भूल गए।

हिरण बोलने लगा— "शिलादित्य, मैं जानता हूं कि संतान पाने के लिए तुम मेरा वध करने आए हो। लेकिन पहले यह बताओ, तुम संतान क्यों चाहते हो?"

राजा बोले— "संतान न हुई, तो मेरे बाद राजा कौन बनेगा ? हमारा वंश कैसे चलेगा ?"

हिरण ने कहा— "राजा का धर्म है, प्रजा की रक्षा करना। जो राजा अपनी प्रजा की रक्षा नहीं करता है, उसका वंश क्यों चले ? निर्दयी, अधार्मिक राजा की संतान तो उसके पिता के अवगुणों की ही अधिकारी होगी।"

शिलादित्य बोले— "मैं हूं राजा शिलादित्य। मेरा क्या धर्म है, यह मैं तुमसे सुनना नहीं चाहता। राजा जो करता है, वही धर्म है। जो लोग उसे नहीं मानते, मैं उनकी हत्या करके अपनी इच्छा को ही न्याय में बदल देता हूं।"

हिरण हंसकर बोला— "तो देर किस बात की ? तुम्हारे हाथ में तो अस्त्र है, मारो मुझे।"

राजा ने एक तीर निकालकर धनुष में लगाया और हिरण पर निशाना साधा। बोला— "सुनो शापग्रस्त ऋषि, मैं नहीं जानता कैसे तुम शापग्रस्त हुए। मुझे यह भी नहीं मालूम, कैसे तुम्हारी शाप मुक्ति होगी। लेकिन मौत तुम्हारे सामने खड़ी है। भगवान का नाम लो। मेरा यह तीर तुम्हें अभी मौत के घाट उतार देगा।"

हिरण ने जोर से हंसकर कहा— "अज्ञान, झूठा दम्भ और अविवेक राजा को शोभा नहीं देता। तुम हर तरह से राजा कहलाने के अयोग्य हो। आंखें रहते हुए भी अंधे हो। प्रजा तुमसे घृणा करती है। जिस राजा के लिए प्रजा के मन में श्रद्धा, मान कुछ भी नहीं है, उसे राजा होने का अधिकार ही नहीं है।"

हिरण की बात से आग-बबूला होकर राजा ने हिरण पर निशाना साधकर जोर से तीर छोड़ा। मगर यह क्या ! तीर तो धनुष से निकला ही नहीं ! राजा ने फिर दुबारा तीर छोड़ने की कोशिश की। फिर वही हाल ! इतने अच्छे तीरंदाज होने के बावजूद, यह क्या !

हिरण हंसा और कहने लगा— "शिलादित्य, देख लिया न ! भगवान की इच्छा के सामने तुम्हारी शक्ति का कोई असर ही नहीं। राजा होते हुए भी तुम एक साधारण मनुष्य हो। भाग्य से राजा के घर में जन्म लेकर तुम राजा तो हुए, पर राजधर्म का पालन न करने से तुम बन गए अत्याचारी। राजधर्म से दूर हो जाने पर तुम्हारे कुलदेवता ने याद दिलाने के लिए ही स्वप्न में तुम्हें मेरे पास आने के लिए कहा था।"

राजा शिलादित्य शर्म के मारे कुछ बोल न सके। वह अपनी भूल को समझ गए। फिर बोले— "हे ऋषिवर, सुना है आप बहुत ही ज्ञानी, गुणी और सिद्ध पुरुष हैं। मैं बहुत ही शर्मिंदा हूं कि मैं राजधर्म का ठीक से पालन नहीं कर पाया। आपने मेरी आंखें खोल दीं। अब समझ में आया, क्यों कुलदेवता ने स्वप्न में मुझे आदेश दिया था आपके पास आने के लिए। मैं यह भी समझ गया कि आपका वध करना असम्भव है। जरा बताइए, अब मुझे क्या करना चाहिए ?"

हिरण ने मुसकराकर कहा— "शिलादित्य, आज ही मेरी शाप से मुक्ति हो जाएगी। एक ऋषि होते हुए भी धर्म से जरा-सा चूक जाने के लिए, मुझे शापग्रस्त होकर हिरण के रूप में चौदह वर्ष बिताने पड़े। जिन्होंने मुझे शाप देकर हिरण बनाया था, उन्होंने ही कहा था कि एक अत्याचारी, अधर्मी राजा को असली राजधर्म के पालन की शिक्षा देकर ही तुम्हारी मुक्ति होगी। वही होगा तुम्हारा प्रायश्चित।"

राजा ने हिरण रूपी ऋषि को प्रणाम किया। बोले— "ऋषिवर, शक्ति के दम्भ के कारण मैं राजधर्म भूल गया था। कृपया मुझे क्षमा करें।"

ऋषि ने कहा— "शिलादित्य, अब लौट जाओ अपने राज्य में। कुलदेवता के कहे अनुसार, जल्दी ही तुम्हें संतान की प्राप्ति होगी जो अत्यंत शूरवीर होगी।"

शिलादित्य प्रसन्न मन से राजमहल की ओर लौट पड़े। ●

सोने की घड़ी


स्कूली बच्चों का एक दल बम्बई की सैर पर गया। दल के नेता थे—इतिहास के मास्टर जी।
विजन खजांची क्यों ?
अनिल मानीटर क्यों ?
अनिल दल का मानीटर, विजन खजांची सबके पैसे विजन के पास रहेंगे।
अनिल और विजन में बनती न थी। सदा एक-दूसरे की काट में रहते थे। एक दिन....
यार तरुण, विजन के पास जमा रुपए यदि पार कर लिए जाएं, तो....
पागल हो, जो ऐसा सोचते हो ?
मगर उसी रात...
हाय रुपए ! इसी संदूक में रखे थे। कौन ले गया ? उफ, क्या करुं ?
मास्टर जी ने पूछताछ की, तो....
कहां है अनिल ? तुरंत बुलाओ।
अनिल ने मुझसे रुपए चुराने की बात की थी। शायद उसी ने...



Scanned with CamScanner


पावभाजी बेहद स्वादिष्ट थी । अगले दिन जब बच्चे फिर चौपाटी पहुंचे, तो....
एक एक्स्ट्रा स्पेशल ।..,अरे यह घड़ी ! इतनी खूबसूरत ! काश, मेरे पास होती..
तुम ले लो ? पांच सौ की है । सोने की । मेड इन अमरीका । मगर पैसे कहां से लाओगे ?
तरुण तैश में आ गया....
छह बजे पहुंच जाऊंगा ।
पैसे हैं। शाम को कांत होटल के नीचे मिलना । घड़ी मेरी...
तरुण ने घड़ी खरीद ली। उसे संदूक में छिपाकर रख ही रहा था कि....
घर दिखाऊंगा । सब चौंक पड़ेंगे । कहूंगा—चौपाटी पर पड़ी मिली थी ।
तरुण, मास्टर जी बुला रहे हैं ।
तरुण मास्टर जी के कमरे में पहुंचा । वहां पावभाजी वाले को देखकर चौंक पड़ा....
तरुण, तुम जल्दबाजी में पांच की बजाय छह सौ रुपए दे गए थे । यह लो, सौ का नोट वापस....
कैसे रुपए ? मैंने तो तुम्हें रुपए नहीं दिए...


तरुण की बात सुन, पावभाजी वाले ने दाढ़ी-मूंछें हटा दीं। अब वह किशन बेयरा था....
अनिल की मदद की। मालिक की घड़ी तुम्हें बेची। साबित किया, तुम्हारे पास काफी रुपए हैं।
कहां से आए इतने रुपए ?
तरुण ने फिर झूठ बोला कि वह घर से रुपए छिपाकर लाया था।
घर से लाए थे ! मैं फोन करके अभी पूछ लेता हूं.... कितने लाए थे ?
मास्टर जी ने तरुण के घर का नम्बर मिलाने के लिए टैलीफोन का चोंगा उठाया ही था कि....
नहीं, नहीं सर ! मुझे माफ कर दीजिए। विजन के पास जमा रुपए मैंने चुराए। सोचा था—अनिल फंस जाएगा।
तरुण के संदूक से सारी रकम व घड़ी बरामद कर ली गई। घड़ी होटल के मालिक को वापस कर दी गई। उस रात....
किशन मेरी मदद न करता, तो शायद....
मैं सोच भी नहीं सकता था कि अनिल इतनी सूझबूझ से चोरी पकड़ सकेगा।

हिंदुस्तान टाइम्स
का
प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष : २९ अंक २; नई दिल्ली; दिसम्बर '९२ अगहन-पौष, शक सं. १९१४

पढ़ते जाओ बढ़ते जाओ

नई दिल्ली। "हिन्दी की पुस्तकें गांव-गांव और घर-घर पहुंचें, इसके लिए नेशनल बुक ट्रस्ट पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में छब्बीस पुस्तक मेले लगा रहा है। तमिलनाडु में ऐसी प्रदर्शनियां लग चुकी हैं। केरल, असम तथा दूसरे राज्यों में भी ऐसी ही प्रदर्शनियां लगाई जाएंगी।"

नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक श्री अरविंदकुमार का कहना है कि समाज में फैली गड़बड़ियों का मुख्य कारण लोगों का न पढ़ना है। हम इस बात को भी गलत साबित करना चाहते हैं कि लोग पुस्तक खरीदकर नहीं पढ़ते।

जिन शहरों में पुस्तक मेले लग रहे हैं, वहां एक वैन पुस्तकें लेकर पूरे शहर में घूमती है, जिससे पाठक उस चलती-फिरती दुकान से पुस्तकें खरीद सकें।

प्रदर्शनियों में विभिन्न विषयों की अट्ठाईस सौ पुस्तकें रखी गई हैं। बच्चों का विशेष ध्यान रखा गया है। उनके लिए साढ़े चार सौ से अधिक पुस्तकें हैं। वे उनमें से अपनी मनपसंद पुस्तक चुन सकते हैं।

नेशनल बुक ट्रस्ट ने इन प्रदर्शनियों को सफल बनाने के लिए लोगों को पत्र भी लिखे हैं। लेकिन पुस्तकों का चयन विशेषज्ञ करते तो यह प्रयास अधिक सफल होता।

नारियल के गणेश

चन्द्रपुर। यहां एक अनोखी गणेश मूर्ति बनाई गई। पचीस फुट ऊंची इस मूर्ति को सात हजार नारियलों से तैयार किया गया था।

जाको राखे साइयां

मिशिगन (अमरीका)। दो साल का जोशुआ खेलते-खेलते नवीं मंजिल की अपनी खिड़की के पास पहुंचा और नीचे गिर पड़ा। इतनी ऊंचाई से गिरकर भी वह ठीक रहा। क्योंकि ऊपर से गिरकर वह एक झाड़ी में अटक गया था।

अपंगों-बूढ़ों के लिए

नई दिल्ली। सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर अब पहिएदार कुर्सियां मिला करेंगी जिससे कि विकलांगों और बूढ़ों को आराम मिल सके। पूछताछ काउंटर पर इस सुविधा के बारे में जानकारी मिल सकेगी।

बालक को बचाया

फरक्का। स्कूल की छुट्टी हो गई थी। पहली कक्षा में पढ़ने वाला नितिन अपने घर जा रहा था। तभी उसका खाने का डिब्बा तालाब में गिर गया। नितिन इस गहरे तालाब में डिब्बा निकालने उतरा और डूबने लगा। तभी आफताब आलम उधर से गुजरे। वह तालाब में कूद बेहोश नितिन को बाहर निकाल लाए। आफताब आलम खुद भी अध्यापक हैं।

दादा के दादा

अलऐन। दुनिया का सबसे बूढ़ा मुसाबा बिन खामिज नहीं रहा। कहते हैं कि सऊदी अरब के इस बूढ़े की उम्र १५२ वर्ष थी। उसका जन्म १८४० में हुआ था। वह अक्सर बीमार रहता था।

बाल मजूरी पर शिविर

लखनऊ। 'बालश्रम एवं सामाजिक कानूनी आयाम' विषय पर तीन दिन का राष्ट्रीय शिविर लगा। उसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह ने किया। इसमें इस बात पर चिंता प्रकट की गई कि भारत में बाल मजूरों की संख्या बढ़ती जा रही है। भारत में बाल मजूरी के खिलाफ कानून तो हैं, मगर लागू नहीं किए जाते।

जीवों को बचाने का तरीका

प्राग। चैकोस्लोवाकिया में जीव-जंतुओं को बचाने के प्रयास अनोखे ढंग से किए जा रहे हैं। वहां दुर्लभ जीव-जंतुओं को खरीदकर उन्हें जंगलों-नदियों में छोड़ दिया जाता है। फिर यह ध्यान रखा जाता है कि उनको कोई नुकसान न पहुंचाए।

कितनी गंदी हवा

नई दिल्ली। यहां का वायु प्रदूषण दस साल में ७५ प्रतिशत बढ़ चुका है। और भारत की राजधानी कहा जाने वाला यह नगर, दुनिया का चौथा सबसे प्रदूषित नगर है। इसका कारण वाहनों का धुआं, अधिक जनसंख्या और सफाई की कमी है।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

जो पर्वतों की तरह बिना डिगे खड़े रहते हैं, उन्हें कोई हिला नहीं सकता।

—ऋग्वेद

शिक्षक आकाश में



भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान का लाभ तरह-तरह से मिल रहा है। लगता है, उपग्रह बनाने और छोड़ने से आम आदमी को क्या लेना-देना। लेकिन ऐसी बात नहीं है। घर-घर और गांव-गांव तक दूरदर्शन कार्यक्रम देखे जाने लगे हैं। खेती के बारे में नई से नई बातें, किसानों तक उनकी बोलचाल में पहुंच सकें—यह भी कोशिश हो रही है।

अंतरिक्ष आयोग के अध्यक्ष प्रो. उडपि रामचंद्र राव ने पिछले दिनों कहा—"सूखा हो या बाढ़ आए, कोई भूखा न मरे—हम ऐसा करना चाह रहे हैं। रेगिस्तान में फसलें उगेंगी, प्यासी धरती को पानी मिलेगा। सेहत ठीक रखने, सफाई, रोगों से बचाव तथा पर्यावरण की शिक्षा दूर गांव में रहने वाले बच्चों, औरतों और किसानों तक पहुंच सकेगी।

वे सवाल भी पूछ सकेंगे। उपग्रह के जरिए, बिना किसी उलझन के घरेलू टी.वी. पर उपयोगी शिक्षा मिल सकेगी। इसके अलावा भी अंतरिक्ष कार्यक्रम में देश के विकास से जुड़ी बहुत-सी योजनाएं हैं।"

अनोखा विद्यालय

उन्नाव। राष्ट्रीय सेवा संस्थान द्वारा विकलांगों के लिए एक विद्यालय चलाया जा रहा है। इसका नाम है—'कुटुम्बकम् विकलांग।' इस विद्यालय में पुस्तकें, युनिफार्म, आवागमन का खर्च, फीस आदि का खर्चा छात्र-छात्राओं को नहीं उठाना पड़ता। इस समय इसमें इक्यासी विद्यार्थी पढ़ते हैं। कानपुर की विभिन्न औद्योगिक इकाइयों और क्लब इस विद्यालय के लिए अनुदान देते हैं।

ऊर्जा बचाओ

नई दिल्ली। उप राज्यपाल श्री पी. के. दवे का कहना है कि बच्चों को बचपन से ही ऊर्जा की बचत करना सिखाया जाना चाहिए। श्री दवे ऊर्जा बचत संबंधी चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे थे। इस प्रदर्शनी के चित्र बच्चों ने ही बनाए थे।

भालू कुएं में

वैनक्वर। एक मादा भालू और उसके तीन बच्चे कुएं में गिर पड़े। कनाडा की पर्वतीय सेना के कुछ जवान उधर से निकले तो उन्हें रोने की आवाज आई। गहरे कुएं में देर तक रोशनी डालने पर उन्हें भालू दिखाई दिए। उन्होंने एक पेड़ काटकर कुएं में डाला। मां सबसे पहले बाहर आई। उसके पीछे-पीछे उसके बच्चे भी चले आए।

बिजली बालक

तिरुअनंतपुरम्। यदि वह बिजली के तार को भी छू ले तो उसे करेंट नहीं लगता। बीस वर्ष के सुब्बूराज को चार वर्ष पहले तक अपनी इस खूबी के बारे में पता नहीं था। घर में बिजली ठीक करते हुए उसे यह बात पता चली। उसे लोग 'बिजली बालक' और 'करंट राज' भी कहते हैं।

चाहिएं हजारों मेजर क्रेस्टो

परवानू। शिमला चंडीगढ़ मार्ग पर भारतीय सेना के जवानों ने मौत के मुंह में फंसे यात्रियों को बचाया। इसमें मेजर इर्विन जे. क्रेस्टो की प्रमुख भूमिका थी। उनका साथ श्री पी. सी. भारद्वाज ने दिया। दस तीर्थ यात्री केबुलकार (ट्राली) में फंस गए थे। यदि यह ट्राली हजारों फुट नीचे गिर गई होती तो किसी का भी बचना मुश्किल था। इन यात्रियों में सोनू (चार साल) भी था। पी. सी. भारद्वाज अपने हेलिकाप्टर को उड़ाकर तारों में फंसी ट्राली के ठीक ऊपर ले आए। फिर रस्सी के सहारे क्रेस्टो ट्राली में उतरे। पहले दिन पांच यात्रियों को रस्सी की सीढ़ी से हेलिकाप्टर में भेजा गया। रात भर क्रेस्टो बाकी पांच यात्रियों का हौसला बढ़ाते रहे। अगले दिन सेना के हेलिकाप्टर ने फिर उड़ान भरी और क्रेस्टो ने बाकी पांचों यात्रियों को ऊपर भेजा।

शहीद उपवन

कानपुर। यहां के नाना राव पार्क को शहीद उपवन के रूप में विकसित किया जाएगा। इसमें १८५७ के शहीदों की ५१ प्रतिमाएं स्थापित की जाएंगी। यह कार्य साहित्यिक संस्था मानस संगम द्वारा किया जाएगा।

ऊंटों का रेसकोर्स

जैसलमेर। ऊंटों की दौड़ यहां आने वाले पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण है। यहां से कुछ दूर ऊंटों का रेसकोर्स बनाया जाएगा। यह देश का पहला ऊंट रेसकोर्स होगा।

आधे बाघ हमारे

जयपुर। दुनिया के आधे बाघ भारत के जंगलों में पाए जाते हैं। यह बात ताजा आंकड़ों से सामने आई है। दुनिया में आठ से नौ हजार तक बाघ हैं। इनमें से चार हजार तीन सौ चौंतीस भारतीय हैं।

सबसे तेज धाविका

नई दिल्ली। राजधानी की सबसे तेज रफ़्तार धाविका गीतांजलि है। वह जीसस एंड मेरी कालेज में पढ़ती है। जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में, दिल्ली राज्य एथलेटिक्स चैंपियनशिप का आयोजन किया गया था। उसमें गीतांजलि सौ मीटर दौड़ में प्रथम आई। लम्बी कूद में वह दूसरे स्थान पर रही।

ठक-ठक से खन-खन

स्टाकहोम। बुजुर्ग महिला के घर पर कठफोड़वा हमेशा ठक-ठक करता रहता। इससे वह परेशान हो उठीं। उन्होंने पर्यावरण रक्षक बोर्ड से इसकी शिकायत की। ८२ वर्षीय इन्मा एंडरसन को पिचासी सौ क्रोन देने का फैसला किया गया। बोर्ड के एक अधिकारी ने कहा कि हम जंगली जानवरों द्वारा किए गए नुकसान का मुआवजा देंगे।

दिल का छेद बंद

मद्रास। यदि किसी के दिल में छेद हो जाए,तो उसे आपरेशन से बंद करना पड़ता है। लेकिन डाक्टरों ने बिना आपरेशन के ही इसमें सफलता पाई है। नाइलोन से बनी एक छोटी जाली को विशेष नली के जरिए दिल में प्रवेश कराया जाता है और वह बंद हो जाता है। यदि यह तरीका पूरी तरह सफल रहा तो लाखों मरीजों को फायदा होगा।

बूढ़ों के बारे में

संयुक्त राष्ट्र। अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध संघ अध्यक्ष श्री एस. डी. गोखले को महासभा की बैठक में भाग लेने के लिए बुलाया गया। संयुक्त राष्ट्र महासभा की ओर से श्री बुतरस घाली ने विशेष रूप से श्री गोखले को बूढ़ों पर चर्चा करने के लिए बुलाया। महासभा में बूढ़ों की समस्या पर बातचीत रखी गई।

कैसे सुधरे

वाशिंगटन। यदि कोई बालक अपराध करता है,तो उसे सुधारने के तरीके क्या हैं? क्या उसे जेल में बंद कर दिया जाए? जवाब है-नहीं। अमरीका में किशोरों में बढ़ते अपराधों का अध्ययन किया गया। पाया गया कि बहुत-से अपराधों को सिर्फ खेल से ठीक किया जा सकता है। किशोरों के लिए एक 'मिडनाइट बास्केट बाल लीग' बनाई गई। खेलने का समय था—रात दस बजे से सुबह दो बजे तक। पाया गया था कि इन्हीं चार घंटों में सबसे अधिक अपराध होते हैं। स्कूलों की छुट्टियों के दौरान ये अपराध विशेष रूप से बढ़ जाते हैं। यही नहीं,खाली समय में बच्चे बुरी आदतों के शिकार भी हो जाते हैं। मिडनाइट लीग के सदस्यों की संख्या सैकड़ों तक पहुंच गई है।

रेगिस्तान में नारियल

जयपुर। आमतौर पर नारियल के वृक्ष समुद्री इलाकों में पाए जाते हैं। लेकिन अब उदयपुर में नारियल की खेती शुरू की जा रही है। रेगिस्तानी इलाकों में भी खूबसूरत नारियल के वृक्ष दिखा करेंगे।

लाखों भक्त

जम्मू। गत एक वर्ष में साढ़े पैंतीस लाख भक्तों ने वैष्णोदेवी की यात्रा की। मंदिर को दस करोड़ रुपए की आय हुई। इनमें से चार करोड़ रुपए मंदिर के विकास और यात्रियों की सुविधा के लिए खर्च किए जा चुके हैं।

चिड़ियों की सहेली

मेड्रिड। यहां रहती हैं मारिया मेक्लीना। वह चिड़ियों को अपने मुंह से दाना चुगाती हैं। इस तरह बहुत-सी चिड़ियां मारिया की दोस्त बन गई हैं।

नन्हे समाचार

□ उत्तरी तंजानिया के एक चरागाह में शेर घुस आया। उसने भेड़ों पर हमला किया, तो चरवाहे ने ललकारा। शेर उस पर झपटा। चरवाहे ने हिम्मत दिखाई, उससे भिड़ गया। उसने निहत्थे ही शेर को मार डाला।

□ कोयम्बतूर में तेज बारिश आई। रात को एक मकान की निचली मंजिल गिर गई। ऊपर एक कमरे में आठ लोग सो रहे थे। रात भर कमरा अधर में लटकता रहा। सुबह फायर ब्रिगेड वालों ने आकर सबको बचा लिया।

□ पूना नगरपालिका ने एक पालतू पशु लायब्रेरी खोली है। वहां २५० रुपए जमा करके बच्चे अपना मनपसंद पशु घर ले जा सकते हैं। किराया एक रुपया प्रतिदिन।

□ मोरक्को का एक आदमी फ्रांस में अपने भाई से मिलना चाहता था। वह पानी के एक जहाज में छिप गया। उसने सोचा था, जहाज फ्रांस जा रहा है। लेकिन जहाज उसे दूसरी दिशा में ले गया, हजारों मील दूर आस्ट्रेलिया में।

□ हांगकांग में कुछ लोग गरीब भारतीय बच्चों के लिए धन जमा कर रहे थे। तभी एक आदमी आया और उन्हें पचहत्तर हजार रुपए देकर चला गया। उसने अपना नाम भी नहीं बताया।

□ बहुत— से बूढ़े कुत्तों को भूलने की बीमारी हो जाती है। वे अपना घर भूल जाते हैं। मालिक तक को नहीं पहचानते। एक कम्पनी ने इस रोग को ठीक करने के लिए दवा बनाई है।

□ गुजरात वन विभाग ने राजकोट नगरपालिका को दो शेर दिए हैं। इन्हें यहां चिड़ियाघर में रखा जाएगा।

□ कर्नाटक के डाक्टर एम.सी. मोदी जाने-माने नेत्र विशेषज्ञ हैं। अब तक वह आंखों के पांच लाख से भी अधिक आपरेशन कर चुके हैं।

सचित्र समाचार




↑ पिथौरागढ़ के भूपेश पंत 'आजाद' और बेलगाम के नूर अहमद एम. सनदी को सद्‌भावना निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कार : भूपेश को चालीस हजार और सनदी को पैंतीस हजार रु. नकद मिले । इनको पांच वर्ष तक हर महीने छात्रवृत्ति भी मिलेगी ।

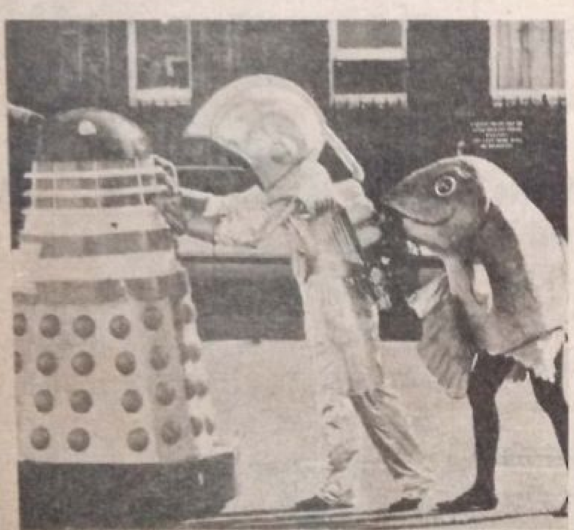
जापान में पुराने खिलौनों की प्रदर्शनी । सत्तर साल पुराने खिलौने भी थे ।



डेमोक्रेटिक पार्टी के श्री बिल क्लिंटन : अमरीका के नए राष्ट्रपति →



लंदन में वैज्ञानिक कथाओं के पात्रों की पोशाक नीलाम : ये पात्र अपनी पोशाकों के साथ सड़क पार करते हुए । ←





हंगरी की ज्योनगी होरवाथ के बाल एक मीटर लम्बे हैं । वह बालों की देखभाल करके उन्हें अपनी लम्बाई के बराबर करना चाहती है ।



अमरीका की मशहूर लेखिका वर्जीनिया हेमिल्टन : इस वर्ष का हैंस क्रिश्चियन एंडरसन सम्मान मिला वर्जीनिया ने बच्चों के लिए सत्ताईस पुस्तकें लिखीं हैं । ←

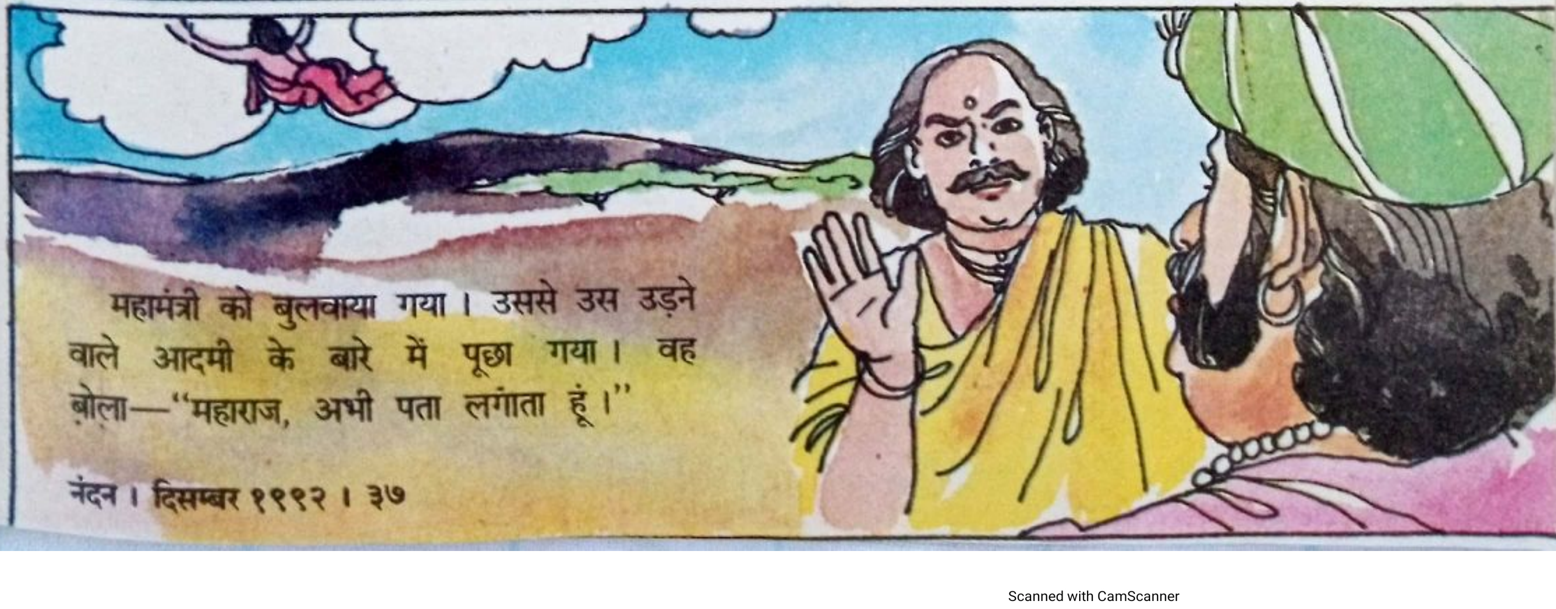
गीत सेठी : अंतर्राष्ट्रीय बिलियर्ड चैंपियनशिप जीती ।↓

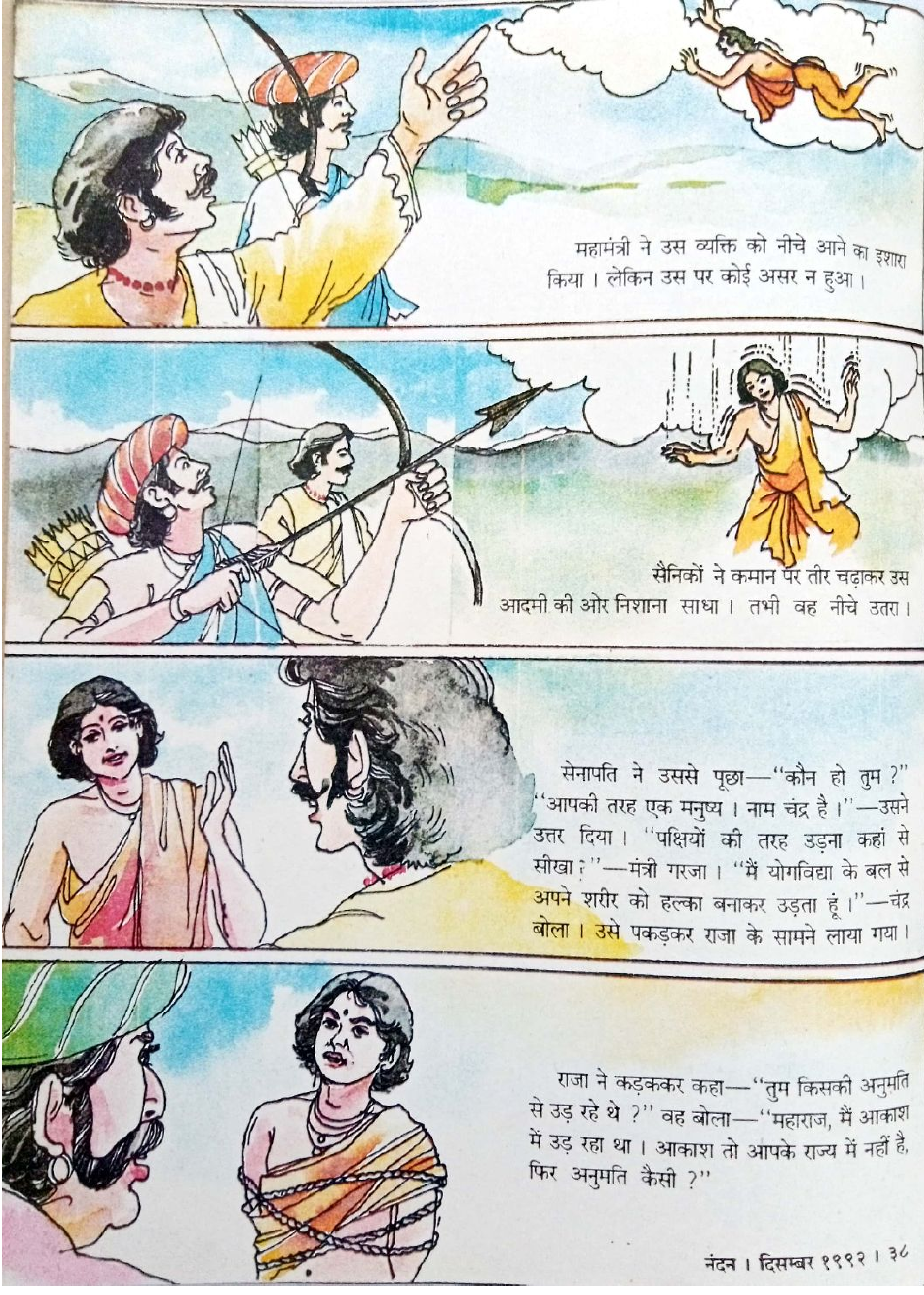


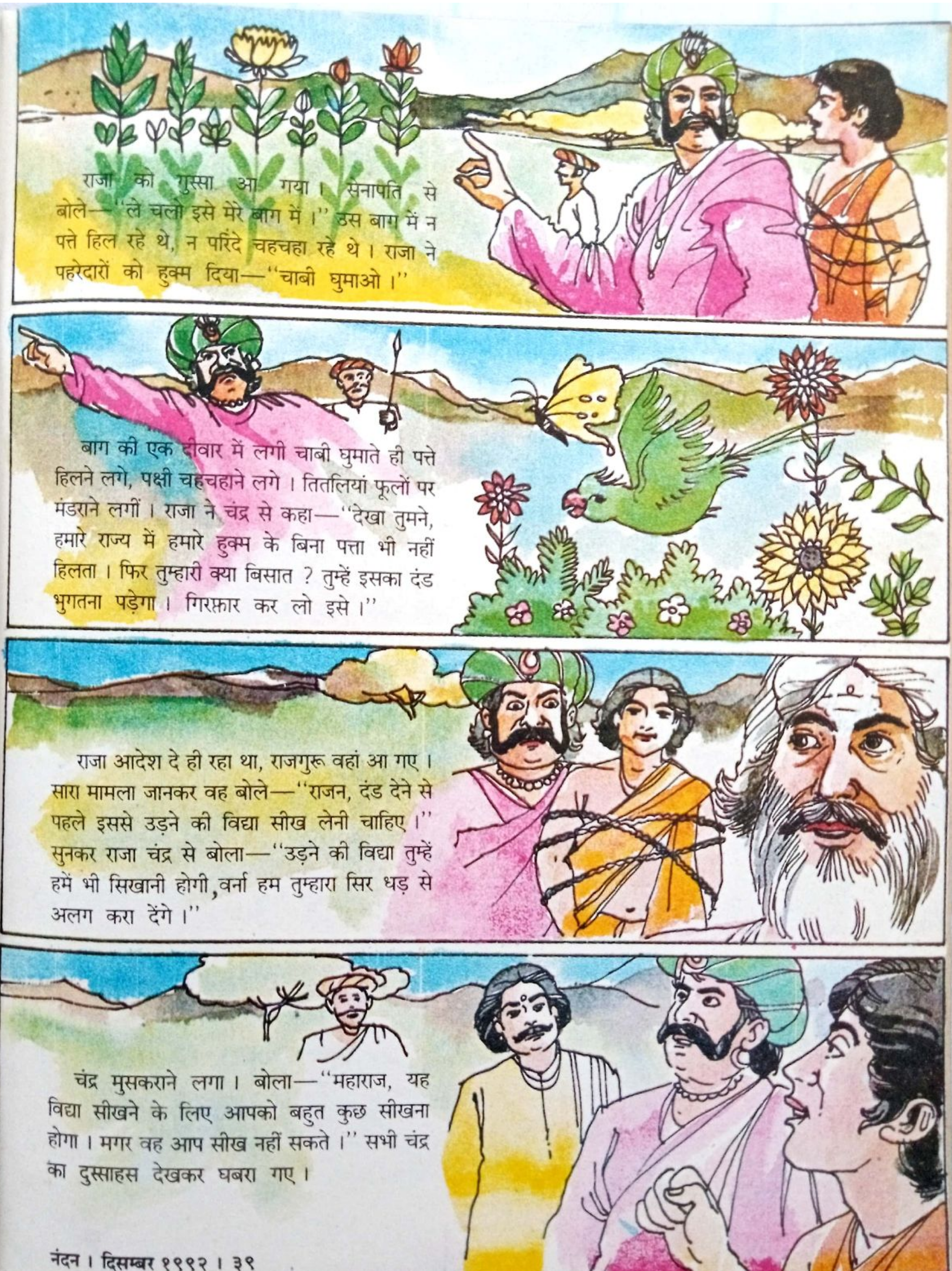

आकाश में आदमी
एक राजा था । बड़ा अभिमानी । न वह साधु-संतों का आदर करता, न किसी से सीधे मुंह बात करता । दरबार में सभी उसकी जी हजूरी में लगे रहते ।

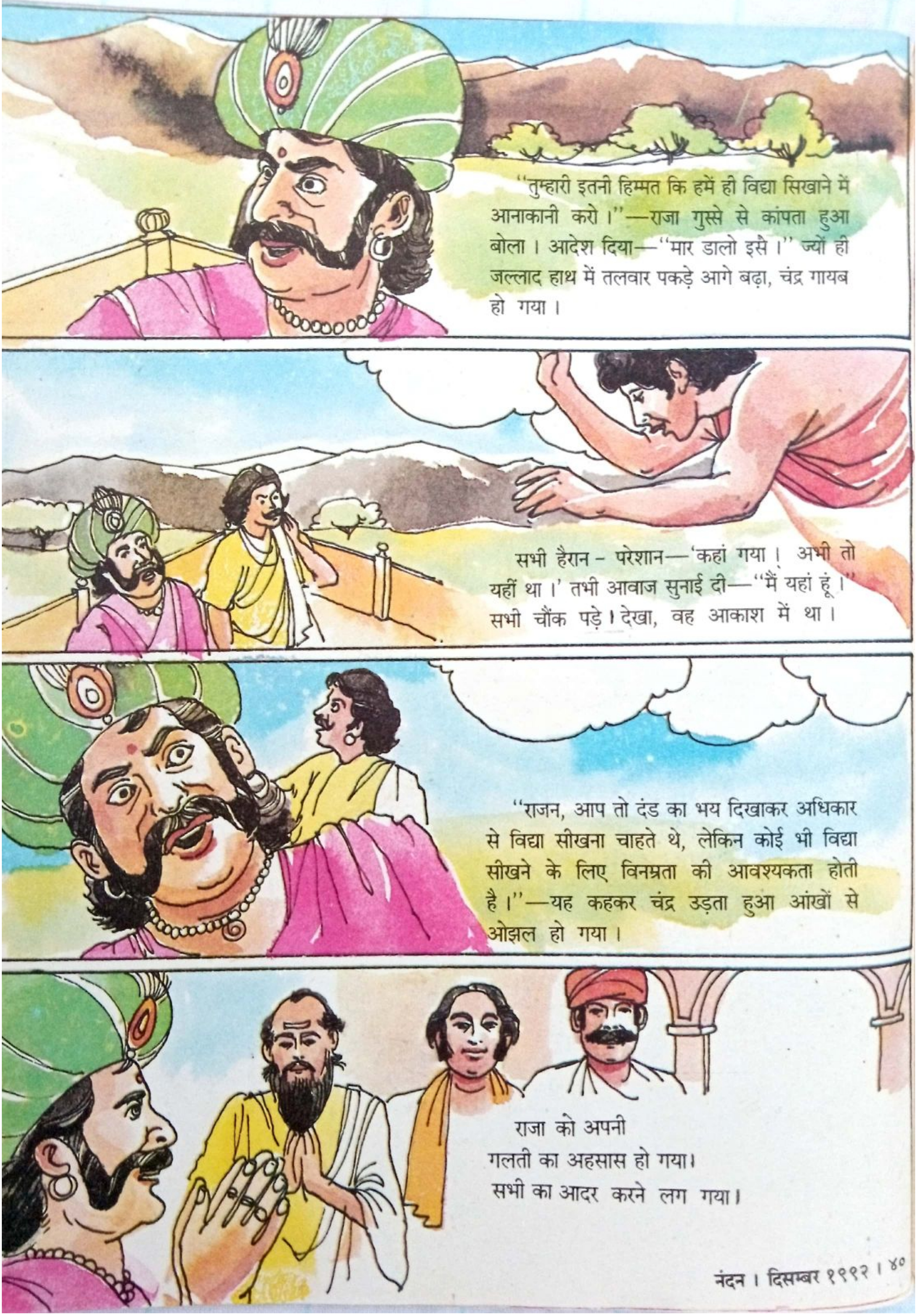

सुबह का समय था । राजा-रानी सोकर ही उठे थे कि एक सेवक भागा-भागा आया । बोला—"महाराज, आकाश में एक आदमी उड़ रहा है ।"


राजा-रानी चकित । सेवक के साथ बाहर आए । देखा, सचमुच आकाश में आदमी उड़ रहा है । राजा हैरान । सोचने लगा—'मेरे राज्य में बिना मेरी जानकारी के यह आदमी कैसे उड़ रहा है ?'


महामंत्री को बुलवाया गया । उससे उस उड़ने वाले आदमी के बारे में पूछा गया । वह बोला—"महाराज, अभी पता लगाता हूं ।"


महामंत्री ने उस व्यक्ति को नीचे आने का इशारा किया । लेकिन उस पर कोई असर न हुआ ।
सैनिकों ने कमान पर तीर चढ़ाकर उस आदमी की ओर निशाना साधा । तभी वह नीचे उतरा ।
सेनापति ने उससे पूछा—"कौन हो तुम ?" "आपकी तरह एक मनुष्य । नाम चंद्र है ।"—उसने उत्तर दिया । "पक्षियों की तरह उड़ना कहां से सीखा ?"—मंत्री गरजा । "मैं योगविद्या के बल से अपने शरीर को हल्का बनाकर उड़ता हूं ।"—चंद्र बोला । उसे पकड़कर राजा के सामने लाया गया ।
राजा ने कड़ककर कहा—"तुम किसकी अनुमति से उड़ रहे थे ?" वह बोला—"महाराज, मैं आकाश में उड़ रहा था । आकाश तो आपके राज्य में नहीं है, फिर अनुमति कैसी ?"


राजा को गुस्सा आ गया । सेनापति से बोले—''ले चलो इसे मेरे बाग में ।'' उस बाग में न पत्ते हिल रहे थे, न परिंदे चहचहा रहे थे । राजा ने पहरेदारों को हुक्म दिया—''चाबी घुमाओ ।''
बाग की एक दीवार में लगी चाबी घुमाते ही पत्ते हिलने लगे, पक्षी चहचहाने लगे । तितलियां फूलों पर मंडराने लगीं । राजा ने चंद्र से कहा—''देखा तुमने, हमारे राज्य में हमारे हुक्म के बिना पत्ता भी नहीं हिलता । फिर तुम्हारी क्या बिसात ? तुम्हें इसका दंड भुगतना पड़ेगा । गिरफ़्तार कर लो इसे ।''
राजा आदेश दे ही रहा था, राजगुरू वहां आ गए । सारा मामला जानकर वह बोले—''राजन, दंड देने से पहले इससे उड़ने की विद्या सीख लेनी चाहिए ।'' सुनकर राजा चंद्र से बोला—''उड़ने की विद्या तुम्हें हमें भी सिखानी होगी, वर्ना हम तुम्हारा सिर धड़ से अलग करा देंगे ।''
चंद्र मुसकराने लगा । बोला—''महाराज, यह विद्या सीखने के लिए आपको बहुत कुछ सीखना होगा । मगर वह आप सीख नहीं सकते ।'' सभी चंद्र का दुस्साहस देखकर घबरा गए ।


''तुम्हारी इतनी हिम्मत कि हमें ही विद्या सिखाने में आनाकानी करो ।''—राजा गुस्से से कांपता हुआ बोला । आदेश दिया—''मार डालो इसे ।'' ज्यों ही जल्लाद हाथ में तलवार पकड़े आगे बढ़ा, चंद्र गायब हो गया ।
सभी हैरान - परेशान—'कहां गया ! अभी तो यहीं था ।' तभी आवाज सुनाई दी—''मैं यहां हूं ।'' सभी चौंक पड़े। देखा, वह आकाश में था ।
''राजन, आप तो दंड का भय दिखाकर अधिकार से विद्या सीखना चाहते थे, लेकिन कोई भी विद्या सीखने के लिए विनम्रता की आवश्यकता होती है ।''—यह कहकर चंद्र उड़ता हुआ आंखों से ओझल हो गया ।
राजा को अपनी गलती का अहसास हो गया। सभी का आदर करने लग गया।



अनसुना सुना

—डा. देवेंद्र आर्य

जापान के किसी कस्बे में एक गरीब चित्रकार रहता था। एक दिन उसकी पत्नी खाने-पीने का सामान लेने बाजार गई।

जैसे ही उसने पत्नी को आते देखा, वह खुशी से झूम उठा। उसके हाथ में टोकरी थी।

"इस टोकरी में क्या है?" —उसने पूछा।

पत्नी ने कहा—"स्वामी ! पिछले काफी दिनों से हम घर में अकेलापन महसूस कर रहे थे, इसलिए . . .।"

—"अकेलापन तो आने-जाने वाले अतिथियों से दूर होता है। सोचो, क्या है हमारे पास ? हम उन्हें खिलाएंगे क्या ?" पत्नी चुप रही।

वह सोचने लगा—'काश ! चावल का केक होता। और मैं मित्रों के साथ बैठा गर्म-गर्म चाय की चुस्कियां ले रहा होता। पर कोई एक छोटी-सी तस्वीर भी मुझसे नहीं खरीदता।'

पत्नी बोली—"सुनो, मैं रात में चूहों के डर से सो नहीं पाती, इसलिए . .. ।"

चित्रकार ने हंसते हुए कहा—"चूहे हम जैसे गरीबों के घर आकर क्या खाएंगे ? क्या तुम खाने के लिए कुछ भी नहीं लाई हो ?"

—"हां, मैं कुछ नहीं लाई।"

—"क्या तुम बिल्ली लाई हो ?"

—"हां।"

चित्रकार चीखते हुए बोला—"यहां भूख से जान निकल रही है और तुम उठा लाईं बिल्ली। यह हमारी नींद हराम कर देगी।"

"पर कुछ बिल्लियां सचमुच बहुत अच्छी होती हैं। याद है, एक बार एक बच्चे ने उजाड़ मंदिर की दीवारों पर बिल्लियों के चित्र बनाए थे। फिर बगल वाली कोठरी में सोने चला गया था। सुबह उसने वहां एक चूहे को मरा देखा। बताओ, उस चूहे को किसने मारा ? लोगों का कहना है कि उसकी बनाई चित्र – बिल्ली ने। जानते हो, तभी तो वह नन्हा चित्रकार तुम्हारी ही तरह महान चित्रकार बन गया था।" —कहते हुए उसकी आंखें सजल हो उठीं। चित्रकार का सारा क्रोध दूर हो गया।

—"तुम नाराज न होओ।तुम्हारी बिल्ली अब कुछ खाना चाहती है। घर में कुछ है, तो उसे खाने को दे दो।"

पत्नी ने टोकरी खोली। उसमें से एक बिल्ली निकली। वह उछल-कूद करने लगी।

चित्रकार ने ध्यान से बिल्ली को देखा। उसने कहा—"ओह ! तीन रंग की बिल्ली। ऐसी बिल्ली तो सचमुच बड़ी भाग्यवान होती है।"

बिल्ली उठी और चित्रकार के पास आकर बैठ गई।

उसके सिर पर हाथ फेरते हुए चित्रकार ने

कहा—"अब इसका एक प्यारा-सा नाम भी तो होना चाहिए।"

तभी उसे लगा कि रसोई में कुछ उबल-सा रहा है। उसने कहा—"आश्चर्य ! यह तो चावलों से भी अच्छी खुशबू है। पर रसोई में है कौन ?"

पत्नी ने कहा—"इस बिल्ली का नाम 'सौभाग्या' होना चाहिए।"

—"सौभाग्या ! अच्छा नाम है। बिल्ली को रसोईघर में ले जाओ।" यह सुनते ही वह बिल्ली के साथ रसोई की ओर चल पड़ी।

अगले दिन चित्रकार ने बिल्ली को गद्दे पर गेंद की तरह गोल होकर सोते देखा। उसकी आवाज सुनते ही, बिल्ली झटपट उठ बैठी। भूख से उसकी मूंछों के बाल कुछ ऊपर-नीचे हो रहे थे। उसकी आंखें चोरी छिपे भोजन को देख रही थीं। पत्नी ने चित्रकार के सामने सूप का प्याला रखा, तो बिल्ली दूसरी ओर ताकने लगी।

चित्रकार धीरे-धीरे सूप पीता रहा। पर बिल्ली का मुंह दीवार की ओर ही रहा। उसने भूलकर भी सूप पीते चित्रकार को ललचाई निगाहों से नहीं देखा।

"सुनो ! सौभाग्या के लिए भी कुछ ले आओ, बेचारी भूखी होगी।" —चित्रकार ने पत्नी से कहा।

थोड़ी देर बाद बिल्ली के लिए भोजन आया। चित्रकार की आवाज सुन, बिल्ली ने धीरे-से उसकी ओर मुंह मोड़ा। फिर उसके पास जाकर बैठ गई। भूखी होने पर भी, उसने इस करीने से खाना खाया कि न तो उसका मुंह गंदा हुआ और न फर्श पर ही कुछ गिरा। उसने आधे चावल अगले दिन के लिए बचा लिए। वह अपने मालिक पर इससे ज्यादा भार नहीं डालना चाहती थी।

इसी प्रकार दिन बीत रहे थे। चित्रकार चित्र बनाने में व्यस्त रहता। पत्नी बाजार से खाने-पीने का सामान जुटाने या घर के फटे-पुराने कपड़े सीने में लगी रहती। बिल्ली दोनों को काम करते देखती, पर स्वयं कुछ सहायता न कर पाती थी। चुपचाप धूप में बैठी रहती। कम से कम भोजन खाती। वह सिर नीचा किए घंटों महात्मा बुद्ध की मूर्ति के सामने बैठती लगता कि प्रार्थना कर रही है।

बिल्ली को ऐसा करते देखकर पत्नी चित्रकार से कहती—"सौभाग्या महात्मा बुद्ध की पूजा कर रही है।"

—"अरे नहीं, यह तो चिड़िया पकड़ने की ताक में बैठी है। क्या तुम बिल्ली से ऐसे काम की भी आशा करती हो ?"

एक दिन बिल्ली ने एक चिड़िया को पकड़ लिया। बेचारी चिड़िया बिल्ली के पंजों में दबी थी। तुरंत बिल्ली ने अपना एक पंजा उठाया, फिर दूसरा भी उठा लिया। चिड़िया फुर्र से उड़ गई। चित्रकार यह सब देख रहा था।

'अरे ! यह बिल्ली तो बहुत दयालु निकली।'



—उसने सोचा।

चित्रकार की आंखें पश्चाताप से गीली हो उठीं। इतने में उसकी पत्नी हांफती हुई आई। बोली—"स्वामी! मंदिर के प्रमुख संत उधर कमरे में बैठे हैं। वह आपसे मिलना चाहते हैं।"

उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। पत्नी ने कहा—"जल्दी करो, गुलदस्ता बेचकर बाजार से कुछ खाने-पीने का सामान ले आओ।" फिर पत्नी ने गुलदस्ता उसे थमा दिया। चित्रकार बाजार से तुरंत खाने-पीने का सामान ले आया।

चित्रकार कमरे में पहुंचा। वहां संत ध्यान में बैठे थे। चित्रकार चुपके से उनके चरणों के पास जाकर बैठ गया।

कुछ देर बाद संत ने आंखें खोलीं, तो उन्होंने चित्रकार से कहा—"हम अपने मंदिर के लिए बुद्ध के अंतिम समय का चित्र तुमसे बनवाना चाहते हैं। चित्रकार के चुनाव के लिए सभी चित्रकारों के नामों की पर्चियां बनाई थीं। उन्हें बड़े कमरे में रख दिया था। सुबह देखा कि तुम्हारे नाम की पर्ची के अलावा सभी पर्चियां उड़ गई थीं। इससे हमें भगवान बुद्ध की इच्छा का पता लग गया है। हमें तुम्हारे घर के बारे में सब पता है। चित्र हाथ के हाथ बिकेंगे और तुम मालामाल हो जाओगे।" कहते हुए संत ने महात्मा बुद्ध के कई चित्र उसके सामने रख दिए। फिर वह चले गए।

'भगवान बुद्ध ने मुझे ही क्यों चुना? मैंने उनकी कभी प्रार्थना तक नहीं की थी। हो सकता है कि भगवान ने बिल्ली की प्रार्थना सुन ली हो।'—वह तरह-तरह की बातें सोच रहा था।

तभी चित्रकार रसोईघर से उठती आवाजों से चौंक उठा। उसने रसोई में झांका, तो देखा कि पत्नी और सौभाग्या खुशी से झूम रही हैं। उसका हृदय भी अनजानी खुशी से भर उठा। स्वर में स्वर मिलाकर वह भी बालकों-सा चीख उठा। वह रसोईघर में पहुंचा।

हंसते-हंसते उसने उन दोनों को अपनी भुजाओं में भर लिया। आज रसोईघर में तीन नई उमंग भरी आवाजें चहक रही थीं।

(जापानी कथा)



मुंशी जी

—डा. भगवतीशरण मिश्र

मुंशी गिरिधारीलाल किस जाति के थे, यह तो पता नहीं, पर मुंशीगीरी उनका पुश्तैनी धंधा था। उनके पिता जमींदार के यहां मुंशी थे।

मुंशी गिरिधारीलाल को मुंशीगीरी के अलावा एक और विशेषता धरोहर में मिली थी। वह थी कंजूसी।

मुंशी गिरिधारी अपनी इन दोनों विरासतों को बखूबी ढोए जा रहे थे। कान पर कलम चढ़ाकर सुबह से शाम तक मुंशी का काम संभालते। आना-पैसा का हिसाब रखते।

घर पर छोटे बच्चे आशा लगाए रहते कि किसी दिन तो पिता जी राह की दुकान से जलेबी का एक दोना लाएंगे, पर उनकी आशा पर सदा पानी फिरता रहता। मुंशी गिरिधारीलाल इन फालतू चीजों में पैसा खर्च करने वाले नहीं थे। किसी तरह खाने, कपड़े का जुगाड़ कर दिया, इससे अधिक बीवी-बच्चों पर वह खर्च करने वाले नहीं थे।

मुंशी गिरिधारीलाल को एक दिन जरूरी कार्यवश गांव से बाहर जाना पड़ा। दिन भर की यात्रा थी। अतः राह में खाने के लिए चार मुट्ठी चिउड़े एक पोटली में

बांध कांख के नीचे दबा लिए। उन्हें भय था, राह में कोई भिखारी मिल गया और उसकी नजर उस पोटली पर पड़ गई, तो वह भारी असमंजस में पड़ेंगे। पोटली तो उसे वह देंगे नहीं, पर भिखमंगे की नजर लगी पोटली का चिउड़ा भी उनके पेट के अंदर नहीं उतर पाएगा।

पर गलती होनी थी, सो हो गई। गर्मी के दिन थे। भूख ने जोर मारा। रास्ते में पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर उन्होंने पेट पूजा के लिए कांख के नीचे से पोटली खींची। उसे खोलकर भूखी आंखों से उन सफेद-सफेद चिउड़ों को निहारा। मुंशी जी का दुर्भाग्य। उसी समय अकस्मात आंधी का हल्का झोंका आया और आधे चिउड़ों को उड़ा ले गया। उसी के साथ उड़ गई मुंशी जी की भूख भी। आजीवन किसी को एक दाना भी नहीं देने वाले के पाव-आध पाव चिउड़े हवा के हवाले हो गए थे। मुंशी जी देर तक सिर पर हाथ रखे बैठे रहे। अब कहां का खाना और कहां का पीना! उन्हें चिंता यह लगी कि इन उड़े हुए चिउड़ों का कैसे सदुपयोग हो! चिउड़े तो उड़ ही गए थे! उनका अब खाक उपयोग होता! पर हार ही मान जाएं, तो मुंशी गिरिधारीलाल की बुद्धि क्या?

आखिर उन्हें एक युक्ति सूझ गई। उन्होंने आज तक दान-पुण्य तो कुछ किया ही नहीं था। भिखारियों को भीख नहीं दी, चंदेवाले छोकरों को दरवाजे से दुत्कारा, यह सब तो अलग बात थी। भूलकर किसी मंदिर-मठ में भी नहीं गए।

उड़े चिउड़ों का उपयोग उन्हें अब सूझा। वह झट से अपना बनाया मंत्र बोल उठे—"उधिवाइला चिउड़ा देवताष्ठन्तु।' अर्थात उधियाए चिउड़े देवताओं को मिलें। इसके बाद मुंशी जी ने संतोष की सांस ली कि चलो, जीवन में एक पुण्य कार्य तो किया। उसी संतोष के बल पर बचे चिउड़ों से ही उन्होंने पेट पूजा कर ली।

कई वर्ष तक मुंशीगीरी करने के बाद, गिरिधारीलाल की सत्तर वर्ष की उम्र में मृत्यु हुई। मरते ही यमदूत आ गए। उन्हें यमराज और चित्रगुप्त के सामने ला खड़ा किया।

"मुझे यहां क्यों लाया गया?"—मुंशी गिरिधारी ने यमराज से पूछा—"मैं तो स्वर्ग का अधिकारी हूं?"

यमराज ने चित्रगुप्त की ओर देखा और पूछा—"कोई भूल हुई क्या?"

"नहीं महाराज, कोई भूल नहीं हुई।"—चित्रगुप्त ने अपने बही-खातों को उलटते हुए कहा—"यह व्यक्ति है ही नर्क के योग्य। इसने जीवन में कोई पुण्य कार्य नहीं किया। भिखमंगों, लाचारों की इसने एक पैसे की भी सहायता नहीं की। उलटे जमींदार के मुंशी के रूप में रियाया को लूटता रहा। जमींदार की तिजोरी से पैसा उड़ाकर अपना घर भरता रहा।"

"यह झूठ है।"—मुंशी ने विरोध किया—"माना मैंने ये कार्य भी किए हैं, पर मैंने पुण्य भी किया है। पहले मुझे उसका फल मिलना चाहिए, फिर चाहे मुझे रौरव नरक में ही धकेल दो।"

यमराज ने फिर चित्रगुप्त को इशारा किया। उन्होंने अपने पोथी-पत्रों को फिर देखा। बोले—"नहीं धर्मराज, इस मुंशी ने कोई पुण्य कार्य नहीं किया।"

"जो धरती की हालत, वही यहां की।" मुंशी गिरिधारी इस बार उत्तेजित होकर बोले—"मैं समझता था, धांधली धरती पर ही है, पर यहां भी वह कुछ कम नहीं। मेरे साथ सरासर अन्याय हो रहा है। जब धर्मराज की अदालत में ही न्याय नहीं मिलेगा, तो और कहां इसकी अपेक्षा की जा सकती है?"

चित्रगुप्त, मुंशी के इस आक्रोश पर घबराए। उन्होंने मुंशी के खाते को आरम्भ से लेकर अंत तक अक्षर-अक्षर पढ़ा। आखिर उनकी दृष्टि कोने में अंकित इस बात पर पड़ी—'इन्होंने एक बार आंधी में उड़ गए चिउड़े के दानों को देवताओं को अर्पित किया है।'

"वही तो, वही तो..."—मुंशी की बांछें खिलीं—"कह रहा था न मैं कि मैंने पुण्य कार्य किया है। अब शीघ्र उसका फल मिले।"

"पर उसका फल पहले कैसे मिलेगा?"—चित्रगुप्त ने धर्मराज की ओर देखते हुए

कहा—"इन्होंने इतने पाप किए हैं, उनके कारण नरक की सजा भोगने के पश्चात ही लाचारी में किए गए इस छोटे-से पुण्य कार्य के फल पर विचार होगा।"

मुंशी ने अपने अनुभव का सहारा लिया—"अच्छा पहले और बुरा बाद में। अच्छाई पर बुराई यहां भी हावी होने लगी है, तो धरती का हो गया बंटाधार ? मुझे पहले पुण्य कार्य का फल चाहिए।"

धर्मराज ने चित्रगुप्त की ओर देखा और कहा—"मुंशी की बात मान लें, तो भी समस्या का समाधान नहीं होता है। तीनों लोकों में ऐसा विचित्र पुण्य कार्य तो किसी ने आज तक किया ही नहीं, अतः ऐसे पुण्य का क्या फल दिया जाए ? इसका तो कहीं कोई विधान ही नहीं है।"

"ठीक कहा महाराज ने।"— चित्रगुप्त ने भी आंखों में विवशता भर, यमराज की ओर देखा।

"मैं इसका फल बताऊं ?"—मुंशी अपने माथे को खुजलाते हुए बोले।

"बोलिए।"—धर्मराज बोले।

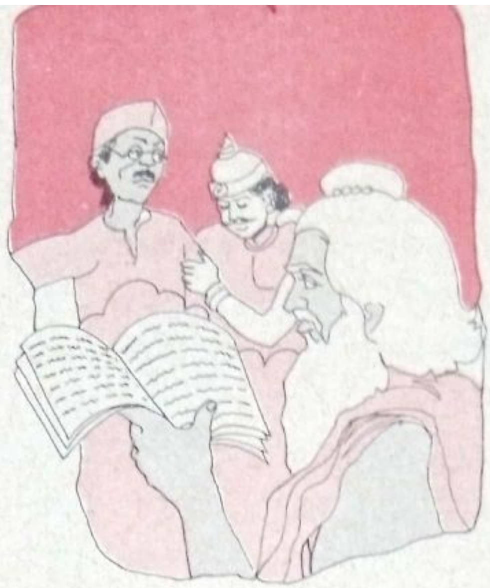
–"मुझे इस पुण्य कार्य के बदले में स्वर्ग की मात्र एक झलक दिखा दी जाए। इसके पश्चात मुझे जिस नरक में डालना हो, डाल दें।"

बात यमराज और चित्रगुप्त दोनों को जंच गई। दो यमदूत मुंशी के साथ कर दिए गए। आदेश हुआ कि जैसे ही स्वर्ग की झलक मिल जाए, मुंशी को वापस ले आएं।

यमदूतों की गति तेज थी। मुंशी को लेकर स्वर्ग की ओर चल पड़े। थोड़ी ही देर में स्वर्ग आंखों में चकाचौंध पैदा करने लगा। यमदूतों ने मुंशी को कंधे से उतारा और कहा—"ठीक से देख लो। शीघ्र लौटना भी है।"

"क्या देख लूं ? किधर देख लूं ?"—स्वर्ग उत्तर की ओर था, तो मुंशी दक्षिण की ओर देखते हुए बोले।

यमदूत कुछ और आगे बढ़े। अब स्वर्ग की दीवारों की सोने की ईंट-ईंट तक दिखाई पड़ने लगी थी।



"अब देखा ?"—यमदूतों ने पूछा।

–"तुमने देखा होगा। मैंने नहीं देखा। मेरी मृत्यु बुढ़ापे में हुई है। आंखोंकी रोशनी कमजोर थी। वैसे भी जमींदार के खातों में आंखें गड़ाए, उनका अधिकांश प्रकाश पहले ही चुक गया था। तुम्हें दिखाना हो तो दिखाओ, वर्ना लौटा ले चलो मुझे वहां यमराज के यहां। मुझे तुम्हारी शिकायत करनी पड़ेगी।"

कुछ तो क्रोध और कुछ घबराहट में यमदूतों ने मुंशी को स्वर्ग की चौखट पर ही खड़ा कर दिया। बोले—"अब देखा ? चलो अब।"

मुंशी स्वर्ग की चौखट पर चारों खाने चित पड़ गए। आधा शरीर भीतर, आधा बाहर, और जोर-जोर से चिल्लाने लगे—"बचाओ, बचाओ।"

शोर सुनकर इंद्र महाराज स्वयं दौड़े हुए आए और मुंशी को इस हालत में पड़े देखकर पूछा—"क्या बात है ?"

"अब क्या बताऊं ?"–मुंशी ने इंद्र देवता के चरणों को दोनों हाथों से पकड़कर कहा—"मैं आपकी शरण हूं। ये मुझे खींचकर ले जा रहे हैं। मुझे बचाइए।"

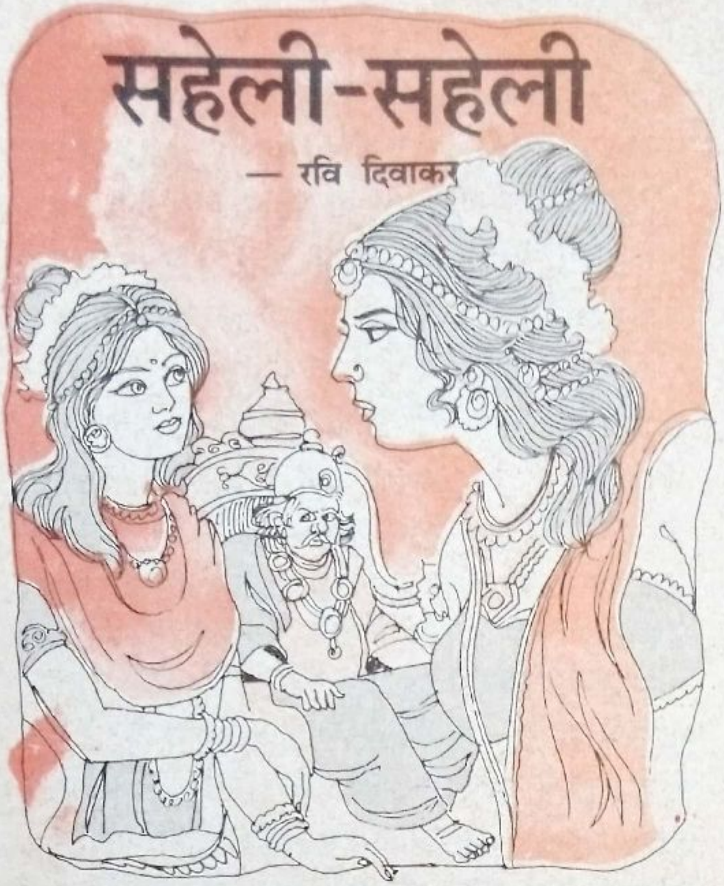
"नहीं महाराज, यह झूठ बोल रहा है।"—यमदूतों ने प्रतिवाद करना चाहा।

देवराज मुसकराए और बोले—"मैं सब समझ गया। पर जब यह मेरी शरण में आ गया, तो यहीं रहने दो। और हां, मेरी ओर से धर्मराज को संदेश दे देना कि आगे से किसी मुंशी के झांसे में न आएं।"

(मैथिली लोक कथा)

सहेली-सहेली

— रवि दिवाकर



राजकुमारी जमना और उसकी सहेली गंगा के बारे में महल के दास-दासियों में कानाफूसी होने लगी थी। राजकुमारी सहेली के साथ कहां जाती है ? रात में देर से लौटती है ? मुंह अंधेरे ही उठ जाती है ? फिर दिन भर दोनों का कुछ भी पता नहीं चलता ? पर राजा या रानी के सामने वे मुंह खोलते हुए भी कांपते थे।

सूरजगढ़ के राजा कमलसिंह की इकलौती बेटी जमना बहुत बुद्धिमान थी। तलवार चलाने में और घुड़सवारी में तेज थी। उसकी सहेली गंगा भी इन सभी कलाओं में निपुण थी।

गंगा वफादार मंत्री हीरासिंह की बेटी थी। बचपन से ही दोनों साथ-साथ रहती थीं। राजा दोनों को बेहद प्यार करते थे। वे दोनों एक-दूसरे के साथ छाया की तरह रहती थीं।

पड़ोसी देश से धन प्राप्त कर कुछ देशद्रोही सिर उठाने लगे थे। राज्य में बढ़ते दुश्मनों का सिर कुचलने के लिए राजकुमारी जमना और गंगा ने बीड़ा उठाया ! दोनों की योजनाएं सिर्फ मंत्री हीरासिंह को मालूम थीं। महल से दोनों के गायब रहने की बात एक दिन राजा के कानों तक भी पहुंची। राजा को बहुत चिंता हुई। उन्होंने मंत्री को अपनी चिंता बताई।

मंत्री ने मुसकराकर कहा— ''आप फिक्र न करें। दोनों बेटियां बिल्कुल ठीक हैं और मेरी उन पर नजर है।'' राजा चुप हो गए।

राजमहल से ही सटी हुई राज-वाटिका थी। वाटिका में जमना और गंगा के घोड़े बंधे रहते थे। वहीं दोनों अपना वेश बदलती थीं। घोड़ों पर सवार होकर वे नगर में निकल पड़ती थीं।

एक दिन नगर में बच्चे-बच्चे की जबान पर एक बात थी कि जागीरदार बदनसिंह को गिरफ़्तार कर जेल में डाल दिया गया है। बदनसिंह पड़ोसी देश से धन लेता था। वह देश के सैनिक, साज-सामान और तैयारियों की गुप्त सूचना पड़ोसी राजा को देता था।

बदनसिंह मंत्री हीरासिंह के साले का बेटा था। बदनसिंह का अपराध साबित हो गया, तो चौराहे पर राजा की आज्ञा से उसे कोड़े लगाए गए। फिर राज्य से निकाल दिया गया।

ऐसी सजा देख, राज्य में गड़बड़ी फैलाने वालों के

बड़ी मां

—स्वातिका राजाराम

''डाकिया आया है। डाकिया आया है।'' बच्चे चिल्लाते हुए साइकिल के पीछे भाग रहे थे। पीले रंग के घर के सामने डाकिया रुक गया। बंद दरवाजे के नीचे वह एक छोटा-सा सफेद लिफाफा डाल गया।

चिट्ठी आई थी। लेकिन उस घर में किसी को भी पढ़ना-लिखना नहीं आता था। घर के सदस्यों ने वह चिट्ठी घर जमाई को दी। परंतु कोई यह नहीं जानता था कि जमाई बाबू भी अनपढ़ थे। सब यही सोचते थे कि जमाई बाबू बहुत पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं।

चिट्ठी हाथ में पकड़े जमाई बाबू बहुत देर तक उसी को देखते रहे। न जाने उन्होंने क्या सोचा, उनकी आंखों से झर-झर आंसू बहने लगे। सभी डर गए कि कोई बुरी खबर ही होगी।

हौसले पस्त हो गए। लेकिन एक बात लोगों की समझ में नहीं आ रही थी कि यह सब राजा को कैसे पता चला ? यह कारनामा था राजकुमारी जमना और गंगा का।

शाम होने लगी थी। पश्चिम में थोड़ी-सी लाली बची हुई थी। नागरिकों ने देखा, सैनिक रणभूमि की तरफ कूच कर रहे हैं।

तीन दिन बाद नगरवासियों ने देखा—सूरजगढ़ के बहादुर सैनिक जयगढ़ के राजा देवसिंह और उसके कुछ सैनिकों को कारागार की तरफ ले जा रहे हैं। वे जोर-जोर से राजा का जय-जयकार करने लगे।

दो दिन बाद देवसिंह और उसके सैनिकों को दरबार में पेश किया गया। देवसिंह की नजर जब राजा के बगल में बैठे दो सैनिकों पर पड़ी, तो उसके मुंह से निकल पड़ा— ''गद्दारो, तुम दोनों के कारण ही मेरी यह दशा हुई है।'' राजा ने पूछा— ''किसे गद्दार कह रहे हो देवसिंह ?'' देवसिंह ने अंगुली से इशारा कर कहा— ''जो सैनिक आपकी बाएं तरफ बैठे हैं।''

''हारने के बाद, तुम्हारी अक्ल खराब हो गई है। ये गद्दार नहीं, देश-भक्त हैं। इनमें एक मेरी बेटी जमना है और दूसरी मंत्री की बेटी गंगा है।''

जमना और गंगा ने अपने सिर पर बंधे साफे खोलकर नकली मूंछ-दाढ़ियां उतार दीं।

राजा देवसिंह का माथा झुक गया। वह हाथ जोड़कर बोला— ''धन्य हैं ये बेटियां। जिस राज्य में इनकी तरह बहादुर और बुद्धिमान बेटियां हों, उस राज्य की तरफ कोई दुश्मन आंख उठाकर भी नहीं देख सकता। अपराध क्षमा हो। मैं आपकी दासता स्वीकार करता हूं। भविष्य में फिर कभी ऐसी हरकत नहीं करूंगा।''

मंत्री के कहने पर राजा कमलसिंह ने देवसिंह को माफ कर दिया। राजा ने उसका जीता राज्य भी उसे लौटा दिया।

●

उनके ससुर जी बोले—''दामाद जी, खबर चाहे कुछ भी हो, सीने को पत्थर बना कर कह डालिए।'' लेकिन यह कहकर वह खुद रो पड़े। उनका रोना था कि घर की सभी महिलाएं रोने लगीं। इतना शोर सुनकर पड़ोसी आ गए।

बेचारे वे भी अनपढ़ थे।

सब को रोते देख, वे भी रोने लगे। सबने तो जैसे आसमान ही सिर पर उठा लिया था। घरजमाई को बहुत शर्म महसूस होने लगी। प्रार्थना की—''हे भगवान ! इस चिट्ठी में इतने सारे अक्षर हैं। काश, इनमें से एक अक्षर को तो मैं पहचान लूं।''

बचपन में वह सिर्फ एक बार स्कूल गए थे। उस दिन मास्टर जी बच्चों को अक्षर सिखा रहे थे। उन सभी अक्षरों में से जमाई बाबू को केवल एक ही अक्षर याद था—'म'। अब चिट्ठी में वह उसी को ढूंढ़ रहे थे।

मिल गया ! यह रहा 'म'। लेकिन मास्टर जी ने तो इसे बड़ा लिखा था। यहां पर तो 'म' छोटा लिखा है। कोई बात नहीं, वह बोले—''बड़ी मां ('म') नहीं है।'' यह सुनना था कि सब जोर-जोर से रोने-चिल्लाने लगे—''बड़ी मां, हमें छोड़कर क्यों चली गई तुम ?''



चटपट

□ अध्यापक— पर्स और थैले में क्या फर्क है ?
छात्र— थैले में पर्स रख सकते हैं, लेकिन पर्स में थैला नहीं ।

□ एक मित्र— तुम्हारे पापा रोज तुम्हें कौन सी दो चीजें देते हैं ?
दूसरा मित्र— पहले डांट-फटकार और दूसरा जेब खर्च ।

□ एक यात्री— साहब, टिकट जल्दी दे दीजिए, नहीं तो गाड़ी छूट जाएगी ।
टिकट बाबू— चिंता न करो । तुम्हारी गाड़ी कल आएगी ।

□ सुरेश— यदि रास्ते में तुम्हें कुछ रुपए पड़े मिल जाएं, तो क्या करोगे ?
वीरेश— पहले मिलें तो सही ।

□ एक पहलवान— मैंने बिरजू पहलवान को धूल चटा दी ।
दूसरा पहलवान— लेकिन जहां कुश्ती हो रही थी, वहां तो दूर-दूर तक धूल नहीं थी ।

□ अध्यापक— चुपचाप बैठ जाओ, वरना मार खानी पड़ेगी ।
छात्र— सर, रोज एक ही चीज क्यों खिलाते हैं ?

□ पुलिस— तुमने साइकिल से सिर्फ घंटी ही क्यों चुराई ?
चोर— समय कम था इसलिए ।

□ ग्राहक— क्या मैं इस गिलास की मजबूती परख सकता हूं ?
दुकानदार— जरूर, पर पहले इसकी कीमत चुका दीजिए ।

□ विजय— सुनील, तुम रामू के रुपए लौटाने को बार-बार क्यों कहते हो ?
सुनिल— मुझे रामू से रुपए उधार जो लेने हैं ।

□ पिता— बेटा, तुम अपनी मां की हां में हां क्यों मिलाते हो ?
बेटा— वह भी तो मेरी हां में हां मिलाती हैं ।

□ पिता— बेटा, छोटी-छोटी बातों से ही आदमी बड़ा बनता है ।
बेटा— तभी तो मैं बड़ी बातों पर ध्यान नहीं देता ।

□ मालकिन— मुनिया, तुम समय पर काम करने नहीं आतीं और पूछने पर झूठा बहाना बनाती हो ।
मुनिया— मालकिन, सही बहाना बताऊं, तो कल ही आप मेरी छुट्टी कर देंगी ।

□ एक मित्र— कई दिनों बाद आफिस आए और हल्ला मचाना शुरू कर दिया ।
दूसरा मित्र— घर में हल्ला मचाने की फुरसत ही कहां होती है ?

□ विजय— अजय उल्लू को रात में क्यों दिखाई देता है ?
अजय— तुम जैसों को वह रात में ही देखना पसंद करता है ।

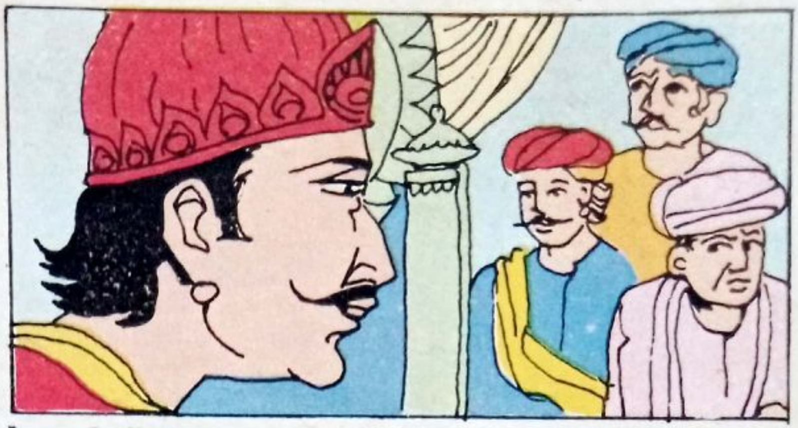
□ चित्रकार— क्या तुम्हें ये चित्र पसंद हैं ?
दर्शक— हां, यदि मुफ़्त में मिल जाएं ।

□ कवि— आप अच्छे श्रोता हैं । बहुत देर से आप मेरी कविताएं सुन रहे हैं ।
श्रोता— मैंने घर से चलते समय,सिर दर्द की दवा खा ली थी ।



तेनालीराम (२६६)

नया तोपची



राजा कृष्णदेव राय परेशान थे । पिछले युद्ध में उन्हें परेशानी हुई थी । कारण था—शत्रु का तोपखाना । वह कई बार दरबार में चर्चा कर चुके थे कि राज्य में तोप बनाने का कारखाना लगे । सेना को तोप चलाने की शिक्षा दी जाए, मगर राज्य में ऐसे कुशल कारीगर और प्रशिक्षक थे ही नहीं । दूसरे देश के कारीगरों पर यकीन नहीं किया जा सकता था । समस्या गम्भीर थी । कुछ सोच राजा ने मंत्री परिषद की बैठक बुलाई ।



तेनालीराम भी आया । अचानक वह अंट-शंट बोलने लगा । राजा ने उसे चुप कराना चाहा, तो वह उनसे ही झगड़ पड़ा । राजा उबल पड़े । तुरंत तेनालीराम को विजय नगर छोड़ने का आदेश दे दिया । दरबारियों को तो मानों मन की मुराद मिल गई ।

कुछ दिन बाद खबर मिली—तेनालीराम ने बीजापुर के नवाब के यहां नौकरी कर ली है । राजा ने सुना, तो वह और क्रोधित हो उठे । तेनालीराम के राज्य-प्रवेश पर बंदिश लगा दी । मंत्री, सेनापति और पुरोहित की तिगड्डी की बन आई । तोपखाना बनाने के लिए कई कारीगर सुझाए, पर राजा को पसंद न आए । मामला खटाई में पड़ा रहा ।



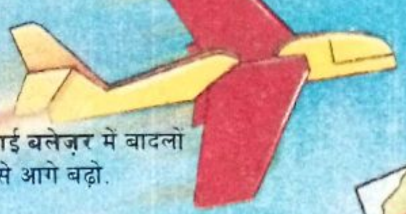
एक दिन दरबार में एक बुढ़िया आई । उसके साथ उसका जवान बेटा भी था । उसने राजा से कहा—"महाराज, हम बीजापुर में रहते हैं । तेनालीराम ने भेजा है । मेरा बेटा अंग्रेजी सेना में तोपची रहा है ।" राजा की भृकुटि तन गई ।

मंत्री ने कहा—"तुम दोनों अजनबी हो । क्या भरोसा, उसने तुम्हें तोपखाने की आड़ में जासूसी करने भेजा हो ।" बुढ़िया ने एक मुड़ा-तुड़ा कागज राजा की ओर बढ़ा दिया । राजा ने उसे पढ़ा । पढ़ते ही वह मुसकरा उठे ।



बोले—"तेनालीराम जानबूझ कर यहां से लड़कर गया ताकि उसे हमारे शत्रु गले लगा लें । ऐसा ही हुआ । इस बीच उसने अपने इस विश्वासपात्र युवक को शत्रु के तोपखाने में नियुक्ति दिला दी । जब यह तोप बनाने और चलाने में प्रवीण हो गया, तो यहां भेज दिया ।"

तेनालीराम का निष्कासन रद्द कर दिया गया । बड़ी धूमधाम से उसकी अगवानी की गई । राज्य की ओर से उसे 'कर्मठ रत्न' की उपाधि दी गई ।



मैगी स्काई बलेज़र में बादलों
से आगे बढ़ो.



मैगी जिगसा पज़ल से मैगी के
साहसिक कारनामों की दुनिया
को जानो

समुद्र से आकाश की अभियान
पूरी करो **मैगी एस एडवेंचरर्स**
गेम में





चोर को पकड़ो-**मैगी**
हू-डन-इट रहस्यमय खेल में

अब मौज-मस्ती भरे साहसिक खेल!

मैगी क्लब के सदस्यों के लिए मुफ़्त उपहार

मैगी रेडर्स ऑफ़ दि रेड स्टार
गेम में ग्रहों पर विजय पाओ.





आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल होकर मैगी के मौज-मस्ती भरी चमत्कारी दुनिया में रंग जमाओ!

बस यह लोगो मैगी नूडल्स के 5 रैपर के सामने वाले हिस्सों से काटकर हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों के बीच तुम्हें मैगी क्लब की ओर से तुम्हारी पसंद का मस्ती-भरा उपहार मिल जाएगा.

अपनी पसंद का उपहार मंगाते समय अपना नाम, पता और जन्म-तिथि ज़रूर लिख भेजना. और हां, अगर तुम पहले से ही मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिख भेजना. यदि तुम अभी तक सदस्य नहीं बने हो तो यह मौका मत चूकना! अपना विवरण भेजते समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. तुम्हारे उपहार के साथ हम तुम्हारा मुफ़्त मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी भेज देंगे.

मुफ़्त मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमिल्स' क्विज़ पुस्तिका!
अपने हर 2 उपहारों के साथ तुम मुफ़्त ले सकते हो मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमिल्स' क्विज पुस्तिका.



हमाार पता है
मैगी क्लब
पो.ओ. बॉक्स 5788, नई दिल्ली-110 055

Scanned with CamScanner

मॉर्टन सदा से ही आपकी पहली पसंद



प्यार का मजा...
मॉर्टन से सजा

मॉर्टन सदा से ही मेरी तथा मेरे परिवार की पहली पसंद—मेरे बच्चे तो इसपर जान छिड़कते है।
उत्कृष्ट शुद्धता और स्वादिष्ट तथा साथ ही अनेकानेक जायकों में उपलब्ध—क्रीमयुक्त दूध, ग्लूकोज और चीनी की पौष्टिकता से भरपूर। चॉकलेट एवं कोकोनट कुकीज़ रोज-एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टॉफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स, मैंगोकिंग एवं अन्य अनेकों मनलुभावन स्वादों में उपलब्ध!

आहहा !
क्या लाज़वाब स्वाद !

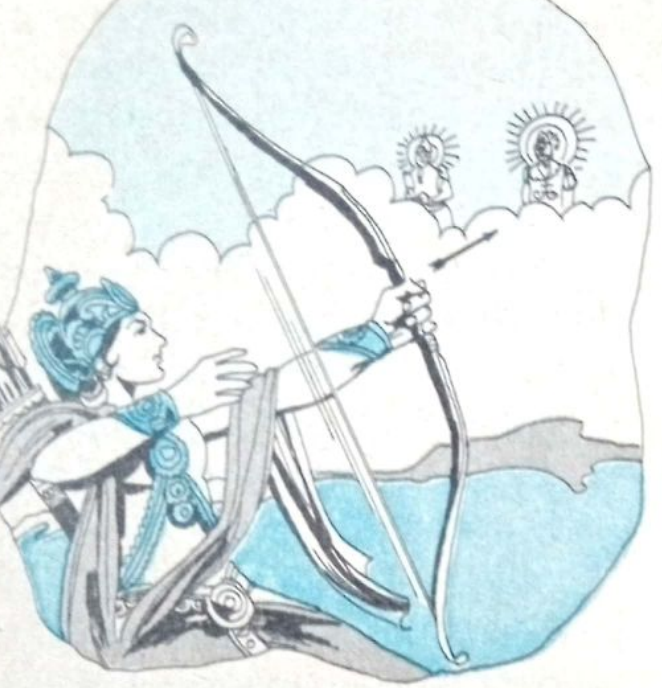


MORTON
SWEETS

मॉर्टन कन्फैक्सनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो०ओ० मढौरा-८४१४१८, सारन, बिहार

चेतावनी : MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर अँपर गैंगेज सूगर एंड इन्डस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापारचिन्ह है।
किसी भी प्रकार से व्यापार चिन्ह अधिकारों का उल्लंघन अभियोजनीय है।

CC/M-2/92



पानी में सूरज

— गिरीश भंडारी

बहुत पहले की बात है। उस समय अंतरिक्ष में एक नहीं, दस सूर्य थे। वे बारी-बारी से उदय होते। एक आकाश में रहता, बाकी विश्राम करते। सब कुछ शांत, प्रसन्न और कांतिमय था। ये सब सूर्य, प्राची देवता के पुत्र थे। वे प्राची देवता की आज्ञा का पालन करते थे।

थोड़े समय के बाद ऐसा हुआ कि ये सब पुत्र कुसंगति में पड़ गए। उनको अपनी शक्ति और सामर्थ्य पर बड़ा घमंड हो गया। बारी-बारी से विश्राम करने के स्थान पर वे सब सूर्य एक साथ ही चमकने लगे। उनमें आपस में होड़ लग गई कि कौन कितना तेजस्वी है।

उनके इस खेल से धरती पर रहने वालों के लिए बहुत विपत्ति खड़ी हो गई। सब ओर त्राहि-त्राहि मच गई। पानी के सरोवर सूख गए। फसलें जल गईं। यहां तक कि जमीन के अंदर उगने वाली चीजें आलू, रतालू आदि भी जल-भुन गए थे। भयंकर संकट खड़ा हो गया था।

अपनी प्रजा की व्यथा को सुनकर प्रतापी राजा योंग ने प्राची देवता से प्रार्थना की कि धरती की रक्षा की जाए। वे अपने पुत्रों को आज्ञा दें कि सिर्फ एक सूर्य आकाश में चमके। बाकी पुत्र विश्राम करें।

प्राची देवता राजा योंग का बड़ा सम्मान करते थे। उन्होंने फौरन अपने पुत्रों को आज्ञा दी कि वे उनके सामने आएं और अपने इस कार्य के बारे में बताएं।

उन्हें विश्वास था कि उनके आज्ञाकारी पुत्र आदेश पाते ही उनके सामने उपस्थित हो जाएंगे। पर महान आश्चर्य! पुत्रों ने उनकी बात तक न सुनी। वे और भी जोर से चमकने लगे।

प्राची देवता क्रोध से लाल हो गए। उन्होंने बड़ा कठोर निर्णय ले डाला, ताकि धरती के निवासियों पर आया संकट दूर हो सके।

उन्होंने महान धनुर्धर ही यान को बुलवाया। ही यान के विशाल धनुष की टंकार से सारा विश्व कांप उठा। सब सहमे खड़े थे कि न जाने आज क्या होगा!

ही यान ने प्राची देवता को प्रणाम किया।

प्राची देवता ने ही यान को आदेश दिया कि वह उनके दस पुत्रों में से नौ को अंतरिक्ष से पृथ्वी पर मार गिराए।

ही यान ने दसों सूर्यों से निवेदन किया कि वे अपने आप अपने पिता की आज्ञा पूरी करें। उन्हें बाणों से घायल न होना पड़े। लेकिन मद में चूर सूर्यों ने उनकी बात न सुनी।

ही यान ने अपना धनुष उठाया और बाणों की बौछार कर दी। उनके बाण इतने शक्तिशाली थे कि एक बाण लगते ही एक सूर्य अंतरिक्ष से गिरता हुआ धरती में समा गया। कुछ सूर्य समुद्र पर गिरे और भाप के बादल उठाते हुए समुद्र तल में लुप्त हो गए।

सिर्फ एक सूरज बच गया, वही जो आज तक हम देखते हैं। उन सूर्यों की गरमी, जो धरती के अंदर चले गए थे, हम आज भी अनुभव करते हैं— जब कोई ज्वालामुखी फूटता है।

चीन देश में आज भी धनुर्धारी ही यान को याद किया जाता है। (चीन की लोक कथा)



सुनहरा पंख

— श्रीनिवास वत्स

समुद्र के किनारे मछुआरों की एक बस्ती थी । दिन में मछली पकड़ने के लिए वे समुद्र में चले जाते । पीछे से उनके बच्चे तट के आसपास उगे पेड़ों के नीचे खेलते रहते । वे लहरों के साथ आई सीपियों से माला बनाकर अपने घरों को सजाते थे ।

गांव के बाहर टीले पर नारियल का एक बड़ा पेड़ था । गांव वासियों का विश्वास था कि पहले यहां कोई देवता स्वर्ग से आकर तप करता था । उसी स्थान पर यह पेड़ उगा है । इसलिए सब उसे देवतरु कहते थे ।

साल में एक बार सभी मछुआरे एकत्र होकर उत्सव मनाते थे । उस दिन वे देवतरु को सुंदर-सुंदर उपहार भेंट करते । कन्याएं उसकी आरती उतारतीं । मंगलगान के बाद, गांव के हर परिवार का मुखिया कपड़े से ढककर कोई चीज देवतरु को भेंट करता । उनकी मान्यता थी कि दूसरों की नजर लगने से उपहार दूषित हो सकता है ।

शाम को सभी उपहारों को बस्ती के सरदार के घर ले जाकर खोला जाता । जिसका उपहार सबसे सुंदर होता, उस दिन उस व्यक्ति की हर इच्छा पूरी हो जाती ।

इसी बस्ती में सोमैया नामक एक गरीब मछुआरा रहता था । उसके परिवार में उसकी पत्नी के अतिरिक्त एक पुत्र भी था— दासप्पा । दासप्पा शक्ल-सूरत से सुंदर न था, परंतु दिल का साफ था । जब वह छोटा था, तो अन्य बच्चे उसे चिढ़ाया करते । लेकिन सरदार की लड़की पाणिक्की को दासप्पा की मीठी-मीठी बातें बहुत अच्छी लगती थीं ।

एक बार बस्ती में उत्सव मनाया जा रहा था । सभी लोग अपनी-अपनी भेंट लेकर देवतरु के पास आए । पर सोमैया सुबह से ज्वर में तप रहा था । उसकी पत्नी और पुत्र उसकी सेवा में लीन थे । उन्हें ध्यान ही न रहा कि आज उत्सव है । बाकी सब लोग अपने उपहार देकर लौट आए ।

अगले दिन गांव में चर्चा फैल गई कि सोमैया ने देवतरु का अपमान किया है । अब जरूर गांव पर भारी विपत्ति आएगी ।

रात को सोमैया की तबीयत और खराब हो गई । बस्ती के हकीम ने दवा दी, पर कोई लाभ न हुआ । सुबह तक सोमैया बेहोश हो गया ।

अचानक जोरों की बारिश शुरू हो गई । तेज हवा के कारण समुद्र में ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगीं । कुछ ही देर में वे बस्ती के घरों तक पहुंच गईं । सबको विश्वास हो गया कि आज जरूर कुछ अशुभ होगा ।

तभी मुखिया सरदार ने घोषणा की— ''भाइयो, यह सब देवता का अपमान करने के कारण हुआ है । अपमान चूंकि सिर्फ एक परिवार ने किया है, इसलिए इसकी सजा भी उस परिवार के लोगों को ही मिलनी चाहिए । मेरी इच्छा है कि दासप्पा अपनी नौका लेकर समुद्र में जाए । यदि देव को इसे दंड देना होगा, वह इसे सागर में डुबो देंगे । दासप्पा समुद्र में नहीं जाएगा, तो देवता का क्रोध पूरे गांव को नष्ट कर देगा ।''

समुद्र में उठती लहरों को देख, दासप्पा की मां रोने लगी । उसने कहा— ''भला इस तूफान में दासप्पा कैसे बच पाएगा ?''

पर गांव का कोई भी व्यक्ति उसकी बात सुनने को तैयार न था । उन्होंने जबरदस्ती दासप्पा को पकड़कर नौका में बैठाया और नाव को समुद्र में धकेल दिया ।

देखते-देखते नौका समुद्र की लहरों से टकराती आगे बढ़ने लगी। कुछ ही देर में वह काफी दूर निकल गई। लोग अपने घरों को लौट आए।

दासप्पा की नैया समुद्र की तेज लहरों के थपेड़े खाती, आगे बढ़ती जा रही थी। दासप्पा को अपनी मृत्यु स्पष्ट दिखाई देने लगी। डर के मारे वह बेहोश होकर नौका में गिर पड़ा।

अगले दिन जब उसे होश आया, तो उसने देखा—उसकी नाव एक टापू के किनारे चट्टानों के बीच उलझी हुई है। दासप्पा समझ नहीं पाया, इतनी तेज लहरों में वह बच कैसे गया ? उसे भूख लग आई थी। वह नौका से उतरकर टापू पर आ गया। सामने एक शिला पर बैठकर वह अपने माता-पिता के बारे में सोचता रहा। तभी उसकी नजर पेड़ के नीचे पड़े एक सुनहरे पंख की ओर गई। दासप्पा ने पंख उठा लिया।

कुछ देर बाद अचानक उसे पंख फड़फड़ाने की आवाज सुनाई दी। दासप्पा ने देखा, एक विशालकाय सुनहरा पंछी आकर उसी पेड़ पर बैठा है। दासप्पा समझ गया, यह पंख इसी का है। वह छिपकर देखता रहा। पेड़ पर घने पत्तों के बीच सुनहरे पंछी का घोंसला था। पंखों की फड़फड़ाहट सुन, घोंसले से चूं-चूं की आवाज आई। दासप्पा समझ गया, जरूर यहां सुनहरे पंछी का बच्चा है। पंछी ने चोंच से अपने बच्चे को चुगा दिया और वह पुनः भोजन की तलाश में उड़ गया।

पंछी की सुंदरता पर मुग्ध दासप्पा अपने सारे कष्ट भूल गया। वह उसके पुनः आने की प्रतीक्षा करने लगा। उसकी नजर अब भी घोंसले की ओर थी। अचानक एक काला नाग पेड़ की टहनियों पर रेंगता नजर आया। दासप्पा को समझते देर न लगी कि यह सुनहरे पंछी के बच्चे को खाने की ताक में है। बिना ज्यादा समय गंवाए, दासप्पा एक डंडा लेकर पेड़ पर चढ़ गया। धीरे-धीरे वह सांप की ओर बढ़ने लगा।

सांप ने उसे अपनी ओर आते देखा, तो क्रोध से फुंकारने लगा। दासप्पा टहनी से चिपक गया और डंडे से सांप पर प्रहार किया। डंडे का वार बचाकर फुंकारते नाग ने दासप्पा को डसने के लिए फन उठा लिया। दासप्पा ने बिना डरे, डंडे से उसे पीछे धकेल दिया और फुर्ती से उसके फन को दबोच लिया। नाग गुस्से में भरकर दासप्पा के शरीर से लिपट गया। काफी देर तक दोनों का युद्ध चलता रहा।

तभी सुनहरा पंछी चुग्गा लेकर वहां आ गया। उसे पूरी घटना समझते देर न लगी। अपनी चोंच और पंजों से उसने नाग को नोंच डाला। घायल होकर नाग दासप्पा को छोड़, जमीन पर गिर पड़ा और मर गया।

पंछी ने दासप्पा से कहा— "इस टापू पर ढेरों मोती एवं कीमती पत्थर फैले पड़े हैं। तुम चाहो, तो उन्हें नौका में अपने साथ ले जा सकते हो। मैं आसमान में उड़कर तुम्हें रास्ता दिखा दूंगा। तुम मेरे पीछे-पीछे नौका चलाते रहना।"

"मुझे तो सबसे सुंदर यह पंख लगता है।"— कहते हुए दासप्पा ने शिला पर रखा सुनहरा पंख पंछी को दिखाया। अपनी प्रशंसा सुन, पंछी को बहुत खुशी हुई। उसने ढेरों माणिक-मोती दासप्पा को भेंट किए। काफी दूर तक समुद्र में मार्ग भी सुझा दिया।

मोतियों से भरी नौका लेकर दासप्पा घर लौटा। उसके आने की खबर सुन, सारी बस्ती के लोग एकत्र हो गए। सबने दासप्पा का दिल खोलकर स्वागत किया। दासप्पा की मां को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसका बेटा जिंदा है।

दासप्पा ने अपने पिता की आंखों पर सुनहरा पंख रख दिया। थोड़ी देर बाद सोमैया को होश आ गया।

अगले दिन फिर से उत्सव का आयोजन हुआ। दासप्पा मोतियों से भरा थाल और सुनहरा पंख लेकर देवतरु के पास पहुंचा। और लोग भी उपहार लाए थे। शाम को सरदार के घर में उपहारों को खोला गया। दासप्पा की भेंट सबसे अव्वल रही।

लोग दासप्पा का जय-जयकार कर उठे। सरदार ने कहा— "बोलो दासप्पा, तुम्हारी क्या मनोकामना है ?" दासप्पा ने खुश होकर कहा— "मेरी इच्छा है, पाणिक्की के साथ मेरा विवाह हो।"

सरदार ने खुशी-खुशी उसका विवाह अपनी पुत्री से कर दिया। •



पगड़ी में फूल

—डा. रामकुमार तिवारी

उन दिनों छोटा नागपुर में खडिया जनजाति के राजा कर्णदेव का शासन था। इन्हें लोग कोरंगा राजा भी कहते थे।

एक दिन कोरंगा राजा शिकार की खोज में काफी दूर, घने जंगल में भटक गए। घूमते-फिरते उन्हें कई प्रकार के फूल दिखाई पड़े। ऐसे फूल उन्होंने कभी नहीं देखे थे। एक फूल तोड़कर उन्होंने अपनी पगड़ी में लगा लिया। उस फूल की सुगंध से राजा की स्मृति धीरे-धीरे खोने लगी। वैसी ही अवस्था में घूमते हुए उनका पैर एक टीले से टकराया। टकराते ही राजा एक भयंकर बाघ के रूप में बदल गए। उनकी यह दशा देख, उनके सभी साथी एवं सैनिक भाग खड़े हुए।

राजा बाघ के रूप में ही इधर-उधर घूमते रहे। एक दिन अचानक एक दूसरे फूल को सूंघते ही वह फिर आदमी के रूप में बदल गए। राजा उस दिन राजमहल लौट आए। उन्होंने सभी से इस घटना का जिक्र किया। लोग तरह-तरह की बातें कहने लगे। अब राजा को आदमी से बाघ और बाघ से आदमी बनने का चस्का लग गया। जब मन होता, वह अपना रूप बदल लेते।

यह बात रानी नहीं जानती थी, किंतु राजा अब रानी से दूर ही रहा करते थे। राजमहल अस्त-व्यस्त होने लगा। राजकाज में ढिलाई आने लगी। रानी के प्रति भी राजा का व्यवहार खराब हो गया। वह परेशान रहने लगी। आखिर रानी ने राजमहल छोड़कर जाने का निश्चय कर लिया। और एक दिन चुपचाप चली गई।

राजा को जब रानी के अकेले ही कहीं चले जाने की सूचना मिली, तब वह भी उनके पीछे दौड़ पड़े। रानी निश्चय कर चुकी थी कि अब वह नहीं लौटेगी। राजा को अपनी ओर आते देख, रानी ने दुखी होकर धरती से प्रार्थना की—"हे धरती मां, मुझे अपनी गोद में जगह दे दो।" इतना कहते ही धरती फट गई। लगता था, रानी उसमें समा जाएगी। अभी केवल शरीर ही भीतर गया था कि राजा ने रानी के बाल पकड़ लिए। किंतु रानी को छूते ही वह पत्थर की हो गई। राजा निराश होकर लौट आए।

इधर राजमहल में इस घटना के कारण भारी हलचल मच गई। राजमाता अपने बेटे और बहू को ढूंढ़ने निकल पड़ीं। भटककर वह दूसरे रास्ते पर चली गईं। गढ़ से तीन मील दूर पूरब में जाने पर अरानी जंगल आ गया। राजमाता के साथ सभी लोग रात को उसी जंगल में सोए। सुबह होने तक सभी पत्थर की मूर्तियों में बदल गए।

राजा अपनी मां तथा पत्नी को खो चुके थे। वह बहुत निराश थे। उन्होंने अपनी प्रजा को बुलाकर कहा—"सुनो, अब हमारे खडिया राज्य का अंत होने वाला है। अब तुग लोग दूसरे के अधीन हो जाओगे। यह राज्य भी दूसरे के हाथों में चला जाएगा। किंतु हमेशा याद रखना, जिस दिन तुम सभी मिलकर संघर्ष करोगे, उसी दिन से तुम्हारे अंदर ज्ञान का प्रकाश आएगा। मैं राज्य छोड़कर जा रहा हूं।"

इतना कहकर कोरंगा राजा फिर बाघ बन गए तथा जंगल में चले गए।

वह स्थान, जहां पर रानी धरती में समा गई थी, आज 'रानी मुंडी' के नाम से जाना जाता है। यहां लोग हल्दी और सिंदूर चढ़ाते हैं। बीरू में अभी भी कोरंगा राजा को देवता मानकर पूजा की जाती है। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. राजमहल से—किसने चुराया ?
(मोती/मोर)

२. जाने दो,—से कैसा डर !
(भाई/भालू)

४. वाह,—ने तो बगिया को एकदम निखार दिया।
(माली/मामा)

८. **एक लोककला जिसमें फूल-पत्ती, हल्दी-चावल और गोबर-मिट्टी से चित्रकारी की जाती है।**

९.—चिड़ियों ने इतना पानी पी लिया।
(दो/सौ)

११. यही वह—है, जिसका किस्सा शोभा दीदी ने सुनाया था।
(बौना/मैना)

१२. कभी यह झील भी देखने जाओ।

ऊपर से नीचे

३.—आप क्यों सोचते हैं श्रीमान ?
(ऐसा/वैसा)

५.—लाने तुम ही चले जाओ न !
(गोभी/गोटी)

६. सचमुच, अद्भुत है इस—की चमक !
(हीरे/तारे)

७. लान में—कितनी अच्छी लगती है पापा !
(धूप/तोप)

१०. आयुर्वेद के एक प्राचीन आचार्य।

काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली : २८८

नाम ______________________

उम्र __________ पता ______________________

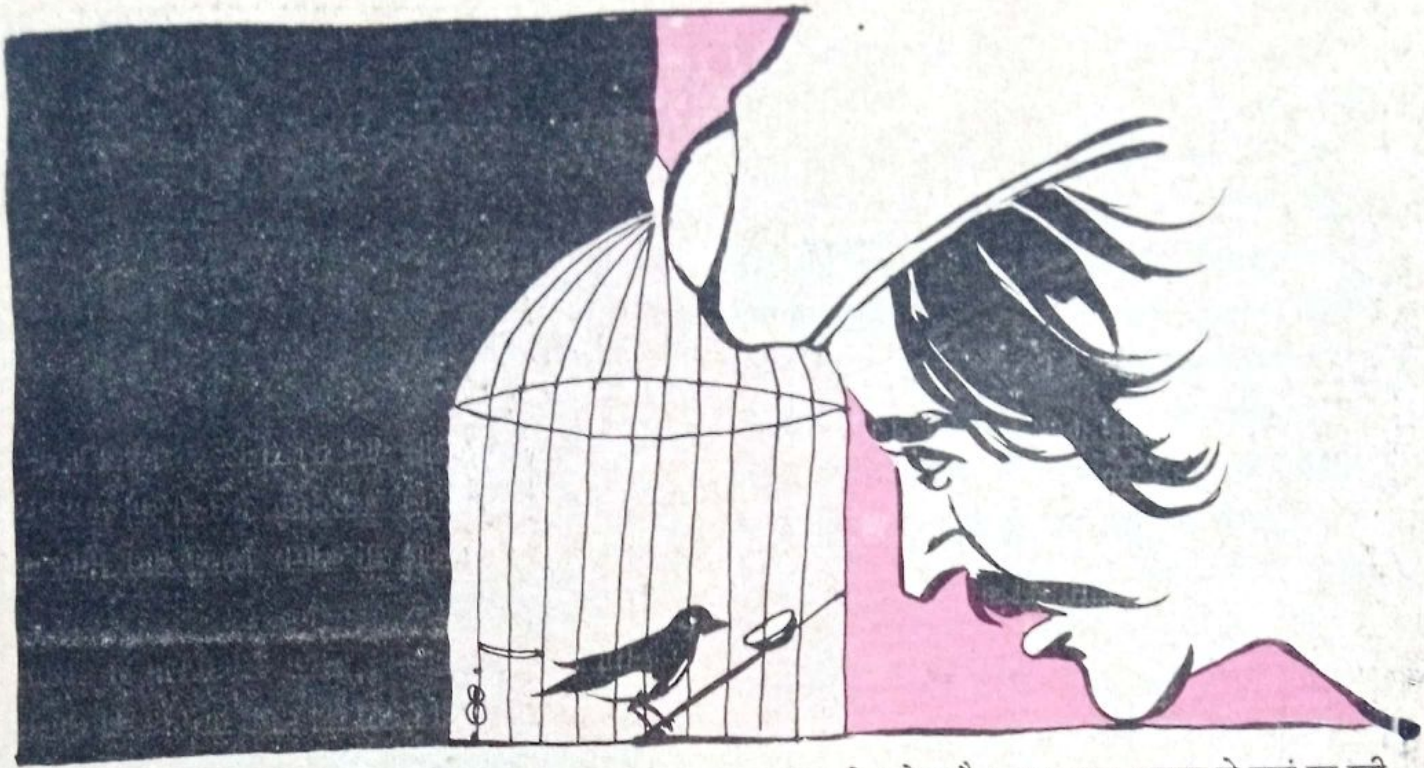
____



नं. ज्ञा. प. २८८



वैमीकोल चमत्कारी गम
ख़ूब चिपकाओ उसके संग
गुड़िया का एक सुन्दर सा घर बनाओ, फर्नीचर और दूसरी चीजों से सजाओ। मोटे-ताजे जानवर, मजेदार मुखौटे, और खिलौने। लकड़ी, कागज, कार्ड बोर्ड, फैब्रिक... कुछ भी इस्तेमाल करो! मौज मस्ती की कोई सीमा नहीं। सोचते जाओ, बनाते जाओ, अपना खाली समय बेहतर ढंग से बिताओ।
VAMICOL®
आर्ट एण्ड क्राफ्ट एडहेसिव
वैम ऑरगेनिक
केमिकल्स लिमिटेड
स्काईलाइन हाउस, 85, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली-110019
VAMICOL
ART AND CRAFT ADHESIVE
VAMICOL
ART AND CRAFT ADHESIVE
React/198/92 HIN



उर्दू कहानी

उड़ गई मैना

—रहमान हमीदी

एक नवाब साहब थे। शानो-शौकत से रहते थे। नवाब साहब को तरह-तरह के पक्षी पालने का शौक था। उन पक्षियों में एक मैना भी थी। वह नवाब साहब से खूब बातें करती। मैना की बातें उन्हें बहुत भाती थीं। उसके लिए सोने का पिंजरा था। अच्छी से अच्छी चीज उसे खाने को मिलती थी। पर उसके पांव सोने की जंजीर से बंधे रहते थे।

नवाब साहब मैना का पूरा ख्याल रखते थे। लेकिन मैना का दिल कभी-कभी उदास हो जाता था। आसमान में उड़ते पक्षियों को देखकर, उसका दिल भर आता। उसका भी मन खुले आसमान में उड़ने के लिए बेचैन हो जाता। वह पिंजरे में फड़फड़ाने लगती। लेकिन पिंजरे से बाहर न निकल पाती।

एक रोज मैना ने अपने दिल की बात नवाब साहब को बताई। नवाब साहब ने उसे समझाया—"आजाद पक्षी कभी गरम और कभी ठंडी हवा में उड़ते हैं। पेड़ की शाखाओं पर रात गुजारते हैं। कभी-कभी भूखे-प्यासे तक रह जाते हैं। इतना आराम उनको कहां नसीब होता है। तुम बहुत आराम से यहां रह रही हो।"

फिर नवाब साहब ने मैना के लिए बाग से ताजे फल मंगवाए। उन्होंने मैना को खूब समझाया। मैना भी उनकी बातों में आ गई। वह अपने भाग्य पर इतराने लगी और पहले की ही तरह चहकने लगी।

एक दिन नवाब साहब को शिकार के लिए जाना था। चलते वक्त उन्होंने मैना को भी साथ ले लिया। वह खूब घूमे-टहले। फिर एक घने जंगल में उन्होंने डेरा डाल दिया। सामने छोटा-सा मैदान था। मैदान चारों तरफ से पेड़ों से घिरा था। पेड़ों पर पक्षी बैठे थे।

मैना हरा-भरा जंगल देखकर बहुत खुश हुई। वह पक्षियों की हालत देख, हंसने लगी। नवाब शिकार के लिए निकल गए थे। मैना को इतराते देखकर पक्षियों ने उसके पिंजरे को घेर लिया। एक पक्षी ने मैना से पूछा— "तुम्हें इस तरह की जिंदगी गुजारने में दुःख नहीं होता ?"

मैना ने जवाब दिया— "मैं तुम लोगों से ज्यादा सुखी हूं। मैं अच्छा खाना खाती हूं। सोने के पिंजरे में रहती हूं। नवाब साहब मेरा पूरा ख्याल रखते हैं। मुझे तो पिंजरे में आराम ही आराम है। पर तुम सब दर-दर भटकते रहते हो।"

दूसरा पक्षी बोला— "लेकिन यह सब तो नवाब साहब का है।"

मैना ने कहा— "तो क्या हुआ ? वह मेरा बहुत ख्याल रखते हैं।"

तीसरा पक्षी बोला— "तुम्हारी इस जिंदगी से मौत अच्छी है। मैना होकर भी तुम खुले आसमान में नहीं उड़ सकतीं। तुम एक-एक दाने के लिए नवाब साहब की मोहताज हो। हमें देखो, हम अपनी मर्जी के मालिक हैं। अपनी मेहनत से अपना भोजन जुटाते हैं। आजादी से खुली हवा में उड़ते हैं। लेकिन तुम पिंजरे में दिन-रात कैद रहती हो।"

यह सुन, मैना का माथा ठनका। उसे पक्षियों की बातों में सचाई नजर आई। उसने कहा— "लेकिन मैं नवाब साहब के पिंजरे से कैसे छुटकारा पा सकती हूं ?"

सारे पक्षी एक साथ मिलकर बोले— "हम तुम्हारी मदद करेंगे।"

मैना ने कहा— "मुझे किसी तरह इस कैद से आजाद करा दो। मैं तुम सबका उपकार कभी नहीं भूलूंगी।"

तुरंत पक्षियों ने मिलकर पिंजरे की सलाखें काट दीं।

एक पक्षी ने मैना के पांव की जंजीर खींचकर तोड़ दी। मैना पिंजरे से आजाद होते ही खुली हवा में उड़ने लगी। कुछ देर बाद वह हरे-भरे मैदान में उतरी। फुदक-फुदककर फल खाने लगी।

शाम को नवाब साहब आए। मैना को पिंजरे में न देखकर उदास हो गए। पास में पड़े टूटे पिंजरे को उठाकर देखने लगे। मैना भी पेड़ पर खामोश बैठी थी। वह नवाब साहब को देख रही थी।

अचानक मैना ने नवाब साहब को जोर से पुकारा। बोली— "नवाब साहब ! ऐसा दाना बेकार है जो दूसरों को आलसी और सुस्त बना दे। सबको अपनी खुराक के लिए खुद मेहनत करनी चाहिए।" यह सुन, नवाब साहब दंग रह गए। पर वह क्या करते ? मैना भी पक्षियों के झुंड में जाकर घुल-मिल गई थी। ●

(प्रस्तुत : नसीम)



पाताल कटहल

—जयलक्ष्मी

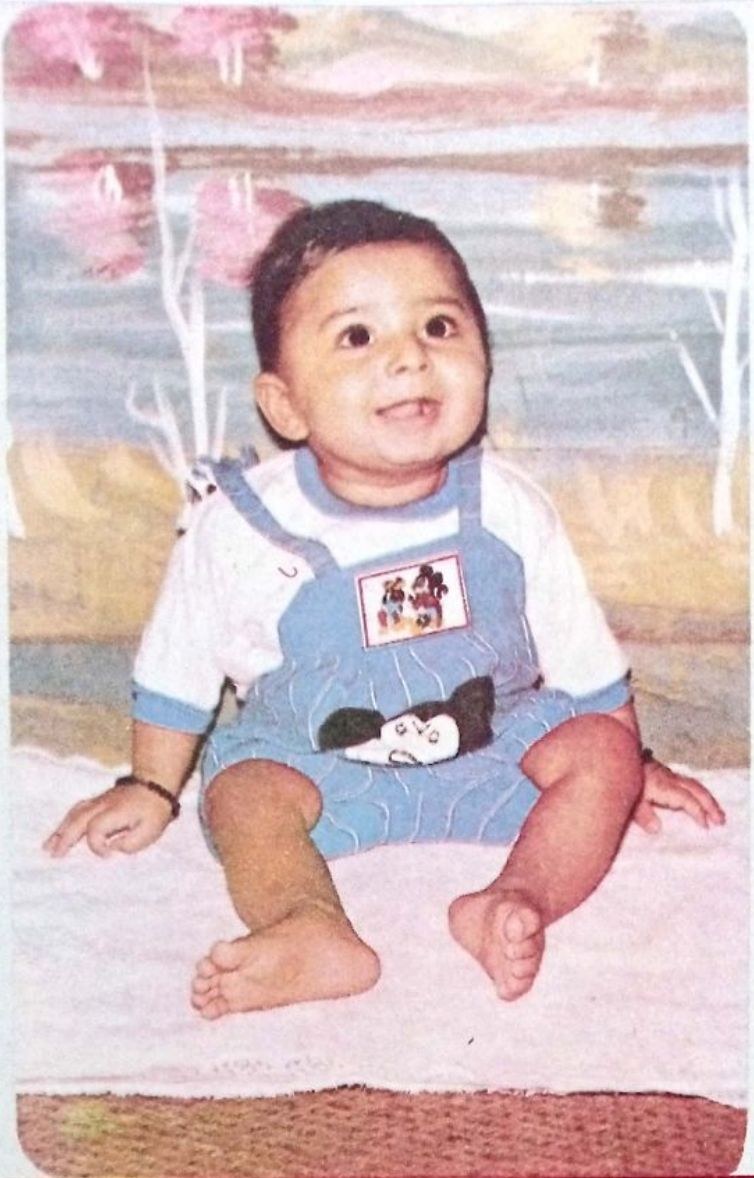
पालूर ज्योतिषियों का गढ़ है। केरल में इस स्थान का नाम काफी मशहूर है। साथ ही प्रसिद्ध है यहां का महादेवजी का मंदिर। मंदिर के प्रांगण में एक पुराना कटहल का वृक्ष है।

कहा जाता है कि एक बार सेवक महादेवजी के मंदिर का अभिषेक कलश धोने के लिए नदी पर ले गया। धोते समय स्वर्ण कलश हाथ से छूट गया और पानी में डूब गया। सेवक घबराया। वह भी पानी में कूद पड़ा। डुबकी लगाई। कलश नीचे-नीचे बहता जा रहा था। उसने भी नीचे जाने की कोशिश की। आश्चर्य की बात यह थी कि उसका दम नहीं घुट रहा था।

अचानक सेवक किनारे जा लगा। उसने देखा, वहां कुछ लोग बैठे पका हुआ कटहल खा रहे थे। उन लोगों ने एक टुकड़ा उसे भी पकड़ा दिया। और कहा— "फल खा लो। फिर बीज वापस कर देना। बीज न ले जाना।"

सेवक ने खाकर देखा। कटहल बहुत मीठा था। उसने एक बीज अपने पास छिपा लिया। बाकी लौटा दिए। तभी उसे स्वर्ण कलश भी वहीं पड़ा दिखाई दिया। कलश उठाकर सेवक तैरता हुआ वापस आ गया। वही बीज उसने मंदिर के प्रांगण में बो दिया। कहते हैं, यह वृक्ष उसी से उगा है। इसलिए लोग इस पेड़ को आज भी पाताल का कटहल कहते हैं। ●


चीटू-नीटू
हर तरफ पर्यावरण की चर्चा है, हम भी घर के आस-पास का पर्यावरण ठीक करें
पहले पेड़ उगाएंगे
अरे, कल्लू की बकरी हमारे पेड़ खा गई, पकड़ो इसे। दूध दुह कर पैसे वसूल करते हैं
पापा का स्कूटर बहुत धुआं छोड़ता है। पाइप में कपड़ा ठूंस देते हैं। फिर धुआं...
गड्ढों में पानी जमा होने से मच्छर... मुन्नू के घर में मिट्टी का ढेर पड़ा है, उस से इसे भर देते हैं
एक पाव दूध तो निकल आया होगा
अरे, साइलेंसर में कपड़ा किसने ठूंसा, घंटे भर से स्टार्ट नहीं हो रहा
घर में बकरी बांध कर दो किलो दूध निकाल लिया निकालो पैसे वरना...
हमारा बदरपुर और रेता चोरी कर के...
मम्मी-पापा बहुत नाराज हैं। आस-पास का पर्यावरण सुधारते-सुधारते घर का वातावरण...



शीर्षक बताइए

भोली मुसकान, मेरी पहचान : इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई सुंदर शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १५ दिसम्बर '९२ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : फरवरी '९३ अंक

पुरस्कृत चित्र

रचिता मरवाहा, आयु १२ वर्ष, द्वारा पी. डी. मरवाहा, ब/१८ पी. के. रोड, टैलिकाम आफीसर्स ट्रांजिट क्वार्टर्स, मुलुंड (पश्चिम) बम्बई-४०००८०



इनके चित्र भी पसंद किए गए— चंद्रेश कुंवर सिंह, अयोध्या; नरगिस हक, कटक; अभिनव मिश्र, बक्सर (बि); नूपुरलाल, कुरुक्षेत्र।



अनिल अमित दीपेश सुधांशु फौज़िया

पत्र मिला

□ अक्तूबर अंक में 'चीटू-नीटू' और 'चटपट' ने खूब हंसाया। भगवान श्रीराम की झांकी व भगवान विष्णु के विराट रूप का चित्र देखकर मन खुशी से भर उठा।

—राजकुमार सोनी, पीली बंगा (राज.)

□ सबसे पहले अपनी मौसी के घर 'नंदन' पढ़ा। इसमें इतनी सारी कहानियां, बाल समाचार और स्तम्भ देखकर दंग रह गया। यह वास्तव में एक सम्पूर्ण पत्रिका है। अब हर अंक के बाद, अगले अंक का बेसब्री से इंतजार करता हूं।

—विकास वर्मा, सुनाम (पं.)

□ 'मेरा बाग' और 'दस के बीस' कहानियां पढ़कर बहुत अच्छा लगा। अब तो मैं नियमित इस पत्रिका को पढ़ता हूं। उम्मीद करता हूं कि आगे भी ऐसी रचनाएं पढ़ने को मिलेंगी।

—राजेशकुमार, नल बाड़ी (असम)

□ सुंदर चित्रों के साथ छपी अच्छी कहानियां पढ़कर बहुत ही आनंद आया। यही एक ऐसी पत्रिका है जो अमीर-गरीब, बच्चे-बूढ़े सभी को बहुत पसंद है।

—ओमप्रकाश मूंधड़ा, कटक (उड़ीसा)

□ 'नंदन' का क्या खूब कहना,
ये है बच्चों का सुंदर गहना
बारी-बारी से सब कोई पढ़ना,
आपस में कभी न लड़ना।

—राजीवकुमार, सिंघाड़ा, वैशाली (बि.)

□ 'नंदन' ही बच्चों की सबसे रोचक पत्रिका है। अक्तूबर अंक में 'तेनालीराम', 'चटपट' और 'चीटू-नीटू' अत्यंत रोचक थे। 'दस के बीस' और 'नहीं चाहिए धन' शिक्षाप्रद कहानियां थीं।

—विवेक मित्तल, सोनभद्र (उ.प्र.)

□ 'हमसे दुनिया रंग-बिरंगी, हम धरती की शान' रंगीन झांकी अद्‌भुत थी। भगवान विष्णु का विराट रूप देखकर मैं विस्मित हो उठा। 'बाबा फिर आए', 'नया मकान', 'लद गए फल' तथा 'जामुन से हवेली' कहानियां मजेदार थीं।

—मनेंद्रकुमार यादव, दुर्ग

□ हमारे शिक्षक कहते हैं कि 'नंदन' की कहानियां शिक्षाप्रद होती हैं। हम सबको उनसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। भगवान श्रीराम की चित्रमय झांकी के लिए बधाई।

—राजीवकुमार रंजन, पटना

□ आकर्षक मुखपृष्ठ के साथ 'नंदन' का अक्तूबर अंक मिला। 'हमसे दुनिया रंग बिरंगी, हम धरती की शान' में वन्य प्राणियों की रक्षा करने की प्रेरणा मिली। चित्र भी बहुत लुभावने थे।

—संजयकुमार अग्रवाल, चौसा

□ यद्यपि सभी कहानियां अच्छी थीं, फिर भी उनमें से 'हार गए इंद्र' और 'रथ आया' कहानियां अनमोल थीं। भविष्य में आप ऐसी ही कहानियां छापें।

—सागर बहादुर यादव, वाराणसी

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : अश्विनी कुमार यादव, रुड़की; विकास, सुकुमार अग्रवाल, मुजफ़रपुर; पंकज, जयपुर।

आगामी अंक

स्वागत है नव वर्ष — जनवरी '९३

- **सुंदर उपहार : नए साल का आकर्षक कैलेंडर**
- **जंतर-मंतर की फ्रेम कराने योग्य अनोखी छवि—एलबम में**
- चीटू-नीटू का जेबखर्च स्वाहा हो गया, फिर भी सर्दी न गई।
- **एक से बढ़कर एक कहानियां, कविताएं।**
- कई प्रतियोगिताएं— भाग लेकर हजारों रुपए के नकद इनाम जीतिए!
- **पति संन्यासी हो गए— फिर मां ने बच्चों के लिए कितना संघर्ष किया— महान कृतियों में मराठी के उपन्यास 'रथचक्र' की संक्षिप्त कथा।**

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ——————————— आयु ———

पूरा पता ———————————

———————————

रुचि ———————————

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. ममता कुमारी, १२ वर्ष, रजत राय, धर्मसमाज रोड, मोतिहारी; २. शबाना परवीन, १६, मुमताज अहमद, नलकूप खंड, बहराइच; ३. श्रीकृष्ण अग्रवाल, १२, ४६१६ शोरा कोठी, पहाड़गंज, नई दिल्ली; ४. कुमारी चांदनी, १४, अरुणकुमार साहू, भाटिया बस्ती, शिव पथ, कदमा, जमशेदपुर; ५. दीपेश कुंवरलाल, १२, ब्लाक नं. १८६, आई-लोको कालोनी, टूंडला, फिरोजाबाद; ६. शशिकांत गुप्ता, १२, हिंदुस्तान वस्त्रालय, मीना बाजार, सासाराम; ७. सर्वेशकुमार, ११, ९, दाईं नहर पटरी, रुड़की; ८. वीरेंद्रकुमार सिंह, १३, भोलानाथ सिंह, कसाया, देवरिया; ९. बलविंदर सिंह, १२, स्वर्णसिंह, गर्ल्स स्कूल रोड, जुगसलाई, नया बाजार, जमशेदपुर; १०. नितिनपाल, १२, बी-१२६१ इंदिरा नगर, लखनऊ; ११. अनूप आशीष, ११, विनोद स्टीफन, सुगौली, पूर्वी चम्पारण; १२. नीलेशकुमार जैन, १५, जितेंद्रकुमार जैन, जैन बाजार, जसवंत नगर, इटावा; १३. जयशंकर प्रसाद, ११, महावीर प्रसाद, जी-१४३/ए लीची बागान, मुजफ्फरपुर; १४. नेहा श्रीवास्तव, १२, डी-३२, ई.एस.आई.सी. कालोनी, सर्वोदय नगर, कानपुर; १५. फ्रैंकी जायसवाल, १६, रणवीर जायसवाल, श्रीकृष्णापुरी दक्षिण, पटना; १६. मु. अली, १२, यूनुस, रामपुर कारखाना, देवरिया; १७. राजीवकुमार, १४, प्रेमचंद गुप्ता, कतरी सराय, गया; १८. संतोषकुमार चौधरी, १६, केशव राम रेयन, वर्कर्स लाईन, नया सराय, हुगली; १९. चमनकुमार, १०, परमानंद चौधरी, ग्रा.+पो. पटोरी बसंत, वाया लहेरिया सराय, दरभंगा; २०. शमीम अहमद अंसारी, १५, अजीज अहमद अंसारी, इलाहाबाद रोड, अतरी, बांदा; २१. मोनिका विश्नोई, ९, विमलकुमार, केनरा बैंक, नगीना, बिजनौर; २२. अरविंद द्विवेदी, १४, द्विवेदी भवन, एकमा, सारण (बि.); २३. राहुल वार्ष्णेय, १५, १८/३५८ पक्की सराय, अलीगढ़; २४. वुधन मारडी द्विवंशी, १५, चांदु मुर्मू, ई.जी.एल. चौक, पो. सारजमदा, जमशेदपुर; २५. मोहित शर्मा, १२, ३६ आदर्श नगर, माडल टाउन, अम्बाला सिटी।

संगीत, खेल और चित्रकला में रुचि :

१. मीतकुमार, १३, वर्ष, जवाहरप्रसाद सिंह, पो. बंशीपुरंदाहा, पूर्णिया; २. सरबजीत सिंह, १२, ५६ अवतार इंक्लेव, पश्चिम विहार, दिल्ली; ३. अमितकुमार लाहोटी, १३, दामोदर जी लाहोटी, बाहेतियी की गली, नागौर; ४. अमृता, ११, २१ ए-बी स्टेडियम रोड, जमालपुर, मुंगेर; ५. सरिता कुमारी बर्मन, एल-२ लोको कालोनी, पुरानी बस्ती, शहडोल; ६. अम्बरीश मुखर्जी, १४, अतनु बनर्जी, हैदर रोड, कोकर, रांची; ७. शैलेश भावन, १३, ६-I-३३ जवाहर नगर, निकट—एल.आई.सी. आफिस, श्रीगंगानगर; ८. चुनुकुमार गुप्ता, १२, प्रेम फार्मेसी, कतरी सराय; ९. रीना गोयल, १३, कालीचरन गोयल, बाबा मार्केट, किशनपुर, रामघाट रोड, अलीगढ़; १०. आशीष वाजपेयी, ३६१, वशीरत. गंज, लखनऊ; ११. शशिकुमार, १३, एम.पी. चौधरी, सिनेमा रोड, सुल्तान गंज, भोपाल; १२. ममता पाठक, १३, पाठक गली, नीवरी रोड, मथुरा; १३. चंद्रमोहन सिंह, १६, ब्रह्मदेव सिंह, आदर्श टोला, मंदिर के सामने, मुंगेर; १४. अनु अग्रवाल, १२, के.के. अग्रवाल, पो. बा. १९७३, काठमांडू (नेपाल); १५. गोपालकृष्ण शर्मा, १२, ४९३ सुमति निवास, विष्णु मार्ग, गणगौरी बाजार, जयपुर; १६. ललित उपाध्याय ११, ४३४ चामुंडा बिहार, रामनगर रोड, नैनीताल; १७. आशीषकुमार अग्रवाल, १६, आशीष वस्त्रालय, नरकटिया गंज; १८. सीमा खर्कवाल, १६, एम.सी. खर्कवाल, पशु विकास अधिकारी, अल्मोड़ा; १९. रितेशकुमार सिंह, १५, १३४ सलकिया स्कूल रोड, सी-७०१, हावड़ा; २०. अनुजा कुमारी, १२, केशवचंद्र घोष, उद्योग विभाग, पटना; २१. सर्जना कुमारी, १४, डा. भीमनाथ झा, धर्मपुर, लक्ष्मी सागर, दरभंगा; २२. रजनी कुमारी, १४, भूक्त शर्मा, विज्ञान अध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पटौदी, गुड़गांव; २३. किरण सोनी, १५ माणकलाल सोनी, निकट चोपड़ा कटला, रानी बाजार, बीकानेर; २४. मनोजकुमार गुप्ता, १४, गणेशप्रसाद गुप्ता, पड़रिया, बिलासपुर; २५. मनेंद्रकुमार यादव, १२, बिहारीलाल यादव, प्रेमनगर, सिकोला भाठा, दुर्ग (म.प्र.)।

डाक टिकट संग्रह, भ्रमण और पहेली में रुचि :

१. रंजीतकुमार जायसवाल, १० वर्ष, जनार्दनप्रसाद जायसवाल, गामी टोला, निकट- पानी की टंकी, कटिहार; २. अमितकुमार, १३, चंद्रभान मंडी टटीरी, मेरठ; ३. बसंतकुमार निगम, १५, कृष्णमुरारी निगम, ४७० सत्ती तालाब, उन्नाव; ४. रोहितकुमार सिंह, १६, बलभद्रसिंह, अवर सचिव (परिवहन), निर्माण भवन, पटना; ५. सोनल, १०, ई ४-१७८ अरेरा कालोनी, भोपाल; ७. प्रशांत दत्त, १३, एफ-२०२ सी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली; ८. वैभव भीमसरिया, १६, जनार्दन प्रसाद भीमसरिया, धर्मशाला रोड, सहरसा; ९. मनीषकुमार चौरसिया, १२, सी-१६/९, लहंगपुरा, वाराणसी।

नई पुस्तकें

बाल बोध कथाएं— लेखक : डा. रणवीर रांग्रा; प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-१; मूल्य : १६ रुपए।

डा. रांग्रा जाने-माने आलोचक हैं। लेकिन समय-समय पर वह बच्चों के लिए रोचक कहानियां 'नंदन' में लिखते रहे हैं। उन्हीं कहानियों को पुस्तक में संजो दिया गया है। कुल इक्कीस कहानियां इसमें हैं। सभी इन कहानियों को पसंद करेंगे।

१. **खेल-खेल में गणित—प्रकाशक : सुनील साहित्य सदन, ए-१०१, उत्तरी घोंडा, दिल्ली—५३; मूल्य : १२ रुपए।**
२. **अपना राज पंचायत राज— प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, ३५४३ जटवाड़ा दरियागंज, नई दिल्ली-२; मूल्य : १२ रुपए।**
३. **बातें प्रदूषण की— प्रकाशक : साहित्य निधि, गली ११, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२; मूल्य : १० रुपए।**

तीनों पुस्तकों के लेखक : बलबीर त्यागी।

अंकुर और अनिता छुट्टियों में गांव जाते हैं। उनके दादा जी उन्हें चुटकुले सुनाते हैं। वास्तव में वे गणित के प्रश्न होते हैं, जिनका सही उत्तर पाने के लिए चतुराई जरुरी है। दोनों बच्चे प्रायः चकरा जाते हैं। दादा जी हल बताकर उनका मनोरंजन करते हैं—यही है खेल-खेल में गणित।

अपना राज पंचायती राज पुस्तक में बताया गया है कि लोकतंत्र की पहली सीढ़ी पंचायत है। गांव सभा और पंचायत कैसे बनती हैं, क्या-क्या करती हैं—यह लेखक ने बताया है। उनका कहना है कि गांवों के बदलने के कारण अब शहरों की ओर दौड़ना भी आवश्यक नहीं है।

बातें प्रदूषण की पुस्तक में पर्यावरण की चर्चा है। किस तरह शोर बढ़ने और पेड़ कटने से बीमारियां तथा परेशानियां बढ़ रही हैं। डा. आशीष गांव वालों को इस बारे में उपयोगी बातें बताते हैं। पुस्तक विशेषकर नवसाक्षरों के लिए है।

होनहार बच्चे



निधि चौहान (उम्र साढ़े आठ वर्ष)। पांचवीं कक्षा में पढ़ती है। 'आकांक्षा' सोसाइटी ने एक बड़ा कार्यक्रम किया। इसमें निधि को प्रथम पुरस्कार मिला। उसे सर्वश्रेष्ठ गायिका माना गया। जब निधि 'नंदन' कार्यालय आई, तो बिना किसी झिझक के भजन और गीत गाए। वह तीन साल की थी, तभी बिना किसी से सीखे गाने लगी थी। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर भी कार्यक्रम दे चुकी है। इन दिनों श्रीराम कला केंद्र में गाना सीख रही है। बड़ी होकर गायिका बनना चाहती है। पता है—**निधि चौहान, द्वारा श्री दुष्यंतकुमार चौहान, १९६-बी, पाकेट-ए, जी. टी. बी. एनक्लेव, दिल्ली-११००९३।**

नंदन ज्ञान पहेली:२८६



परिणाम

इस बार नंदन के पाठकों ने पहेली हल करने में बहुत रुचि ली, खूब दिमाग लगाया। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्व शुद्ध : पैंतीस : प्रत्येक को ३० रुपए

१. विजयकुमार, बीरगंज, नेपाल; २. अरुणकुमार अरुण, धनबाद (बि.); ३. विकास बहुगुणा, देहरादून; ४. अजयकुमार, पटना; ५. शालिनी श्रीवास्तव, कानपुर; ६. प्रीति अग्रवाल, चंदौसी (उ. प्र.); ७. किशोरकुमार तिवारी, औरंगाबाद (बि.); ८. अतुलकुमार, मोतिहारी (बि.); ९. मोहित मदान, गाजियाबाद; १०. गोपा घोष, धनबाद; ११. महावीर सरोया, गुमानपुरा (राज.); १२. शालू मलिक, नई दिल्ली; १३. हर्षिदा शारदा, गाजियाबाद; १४. गोपालप्रसाद जायसवाल, बेगुसराय (बि.); १५. दीपा विश्नोई, खिरकिया (म. प्र.); १६. नागेश्वर प्रसाद लकी, भोजपुर, आरा (बि.); १७. ऋषिकुमार गुप्त, कप्तानगंज, देवरिया (उ. प्र.); १८. कु. श्वेता, खटीमा, नैनीताल; १९. गुंजनकुमार राजा, गुलबारा-मधुबन (पूर्वी चम्पारण); २०. कु. पुरोबी राय, निवार, कटनी (म. प्र.); २१. रंजीतकुमार झा, झंझारपुर, मधुबनी (बि.); २२ कुंजबिहारी बिरमीवाला, बिसाऊ (राज.); २३. दीपिका कर्नावट, उज्जैन; २४. अमितकुमार, भिवानी (हरि.); २५. नीतू गुप्ता, मेरठ; २६. अनघ आहूजा, श्रीनगर-गढ़वाल; २७. सुदलकुमार शर्मा, चरखी दादरी (हरि.); २८. अमितकुमार, ऊना (हि. प्र.); २९. अनूप प्रसाद, कंकरबाग, पटना; ३०. अतुल मलिक, लखनऊ; ३१. अजीतकुमार चौधरी, सुपौल (बि.); ३२. विवेककुमार गुप्ता, धनबाद; ३३. पीयूषमणि शर्मा, मेरठ; ३४. चंद्रकिशोर राय, राजनगर, मधुबनी (बि.); ३५. गरिमा त्रिपाठी, कानपुर।



हार पर हार

—अविसात राय

धनीलाल एक कंजूस आदमी था । एक बार वह अपनी एक रिश्तेदारी से लौट रहा था । रास्ते में एक छोटा-सा गड्ढा था । वह जैसे ही गड्ढे के पास से निकला कि पानी में छप की आवाज हुई । वह रुककर कुछ सोचने लगा ।

चलते समय धनीलाल के रिश्तेदार ने उसे दो मछलियां दी थीं । उसने मछलियों को गड्ढे के पास जमीन पर फेंक दिया । कोट की दोनों जेबें टटोलीं । उसकी दाहिनी जेब में एक छोटा-सा छेद था । उसे याद आया कि उसने जेब में एक रुपए का एक सिक्का रखा था । उसने समझा कि शायद वही सिक्का गड्ढे में गिर गया है । गड्ढे में घुटनों तक पानी था । धनीलाल ने कोट की बांहें और धोती ऊपर चढ़ाईं और लगा सिक्का ढूंढ़ने ।

गड्ढे से थोड़ी दूर पेड़ के नीचे कुछ बच्चे खेल रहे थे । धनीलाल को गड्ढे में उतरा देख, वे दौड़ते हुए उसके पास चले आए । बच्चों के पूछने पर धनीलाल ने कहा कि उसका एक रुपए का सिक्का गड्ढे में गिर गया है । यदि कोई बच्चा सिक्का खोज देगा, तो वह उसको दोनों मछलियां दे देगा । बच्चों ने सोचा— 'एक रुपए के सिक्के के बदले यह बीस रुपए से भी ज्यादा की मछलियां देने को तैयार है । जरूर इसे मछलियां मुफ़्त में मिली हैं ।'

बच्चों ने सलाह-मशविरा किया । फिर गड्ढे में उतरकर सिक्का खोजने लगे । कंजूस पानी से बाहर निकल, मछलियों के पास जा बैठा ।

तभी चेगन भाई नाम का एक आदमी साइकिल लिए वहां से गुजरा । बच्चों को गड्ढे में देख, उसने साइकिल खड़ी की । धनीलाल से सारी बात पूछी । धनीलाल ने उसे पूरी बात बता दी । उसने कहा— ''यदि तुम सिक्का ढूंढ़ दोगे, तो तुम्हें दोनों मछलियां दे दूंगा ।'' चेगन बहुत चालाक था । तुरंत उसने एक उपाय सोचा ।

चेगन भाई की जेब में एक रुपए का एक खोटा सिक्का था । उसने कंजूस की नजर बचाकर जेब से सिक्का निकाला । उसे मुट्ठी में लिए पानी में उतर गया । कुछ देर उसने सिक्का खोजने का झूठा नाटक किया । फिर अचानक खुशी से चिल्लाकर बोला— ''मिल गया... मिल गया आपका सिक्का ।'' गड्ढे से निकलकर उसने सिक्का धनीलाल के हाथ में रख दिया । धनीलाल ने चौंककर कहा— ''यह सिक्का तो खोटा है । मेरा सिक्का तो एकदम असली और नया था ।'' तब तक बच्चे पानी से बाहर निकल आए थे ।

''अब आप झूठ बोल रहे हैं । किसने देखा था कि आपका सिक्का नया और असली है । आप शर्त हार चुके हैं । इसलिए दोनों मछलियां मेरी हुईं ।''— चेगन भाई ने कहा । सारे बच्चों ने हां में हां मिलाकर चेगन की बात का समर्थन किया ।

धनीलाल की समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब हो कैसे गया ! उसे अपनी मूर्खता पर खीज भी आई । उसने मछलियां चेगन भाई को दे दीं । शर्त के मुताबिक खोटा सिक्का उसने ले लिया । कोट की ऊपर वाली जेब में सिक्का डाला, तो झन की आवाज हुई । उसने चौंककर फिर जेब में हाथ डाला, तो उसे अपना नया सिक्का मिल गया ।

धनीलाल चेगन भाई की चालाकी समझ गया । उसने कहा— ''आप दोनों सिक्के लेकर मुझे एक ही मछली दे दीजिए ।''

''जी नहीं, आप शर्त हार चुके हैं । मैं एक भी मछली आपको नहीं दूंगा ।''— कहता हुआ चेगन साइकिल लिए गांव की ओर बढ़ गया । धनीलाल हाथ मलता, उसे देखता रह गया । ●

ऊन का सांप

बहुत पुरानी बात है। ललितपुर गांव में एक गरीब और उसकी लड़की रहती थी। उसका नाम सत्या था। वह बहुत मीठा बोलती और सबकी भलाई चाहती। गांव के लोग सत्या को बहुत प्यार करते थे। सत्या ऊन के खिलौने तथा चित्र बनाया करती थी। सामान हाट में जाते ही बिक जाता।

एक दिन उनके गांव में एक बुढ़िया आई। वह बुढ़ापे के कारण लंगड़ाकर चल रही थी। सभी उसका मजाक उड़ा रहे थे। सत्या उसे अपने घर ले गई। उसे खिलाया-पिलाया। आधी रात के समय उसने सत्या को जगाकर कहा—"तुम नहीं जानतीं, मैं कौन हूं ? मैं तुमसे बहुत खुश हूं। मांग लो कोई वर मुझसे।" सत्या बहुत सोचकर बोली—"जो चीज मैं ऊन से बनाऊं, वह असली हो जाए।" बुढ़िया तथास्तु कहकर लोप हो गई।

सत्या अब ढेर सारे तरह-तरह के खिलौने बनाती। वे असली हो जाते, तो वह उन्हें लोगों में बांट देती। उसके चेहरे पर प्रसन्नता झलकती थी।

निर्मला नामक लड़की सत्या से बहुत जलती थी। वह सत्या को तरह-तरह से तंग करने लगी। उसका सामान चुराकर ले जाती। एक दिन सत्या ने बिना सोचे समझे एक सांप बनाया, जो निर्मला को डस ले। सांप पूरा बना भी नहीं था कि वही बुढ़िया प्रकट हुई। उसके हाथ से अधबना सांप झटककर बोली—"सत्या, तुम अनर्थ करने जा रही थीं। मैंने तुम्हें यह वर लोगों के हित के लिए दिया था। अहित के लिए नहीं।" सत्या यह सुन, फूट-फूट कर रोने लगी। बुढ़िया बोली—"अब तुम इस वर का ठीक उपयोग करोगी।"

"मैं ठीक उपयोग करूंगी।"—सत्या बोल पड़ी। बुढ़िया अदृश्य हो गई।

वह जाते-जाते सत्या को बहुत बड़ा पाठ पढ़ा गई। सत्या ने इसे जीवन भर याद रखा और कभी किसी के लिए बुरा नहीं सोचा।

—पारुल गर्ग, चाक गुजरां (पंजाब)

सपना

एक थी चिंकी। प्यारी सी नन्ही-सी गुड़िया। मम्मी पापा की राजदुलारी। सभी उसे बहुत प्यार करते थे। वह सुंदर भी बहुत थी। परंतु थी बड़ी आलसी। सुबह देर से उठना। स्कूल जाते समय रोना। यह सब उसकी रोजाना की आदत बन गई थी। इसलिए अक्सर उसे मम्मी की डांट खानी पड़ती थी। एक दिन मम्मी ने काफी देर तक बैठकर स्वेटर बनाया। चिंकी ने जैसे ही देखा, मम्मी वहां नहीं हैं, उसने सारा स्वेटर उधेड़ दिया। मम्मी को उस पर खूब गुस्सा आया। उसकी उस दिन खूब पिटाई हुई।

चिंकी उस रात को खूब रोई। रोते-रोते वह पता नहीं कब सो गई। रात को उसने एक सपना देखा। जैसे उसके सामने कोई बहुत सुंदर परी खड़ी हैं। परी ने उसके सिर पर हाथ फेरा। पूछा— "चिंकी, तुम इतनी दुखी क्यों हो ?"

चिंकी ने रोते-रोते बताया—"मम्मी मुझे मारती हैं। मेरा कोई दोस्त भी नहीं है।" परी ने उसे समझाया—"न तो तुम पढ़ती हो और न ही कुछ काम करती हो। ये सब अच्छी बातें नहीं हैं। तुम आलस त्याग दो। फिर तुम्हें सब दोस्त नजर आएंगे।"

चिंकी अगले दिन सुबह जल्दी उठ गई। उसने देखा, खिड़की के पास एक फूल पड़ा है। फूल उठा लिया। उसने देखा, बिल्ली के दो बच्चे इधर-उधर खेल रहे हैं। उसने रसोई से थोड़ा दूध लाकर उनके पास रख दिया। दूध पीकर बच्चे वहीं खेलने लगे। चिंकी ने देखा, चिड़ियां चहचहा रही हैं। वह एक कपड़ा लाकर कमरा साफ करने लगी। मम्मी ने देखा, चिंकी काम कर रही है। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। मम्मी ने उसे खूब प्यार किया। कहा— "कितनी अच्छी है मेरी प्यारी गुड़िया।"

—रीता मित्तल, दिल्ली

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : विजयलक्ष्मी पांडेय, वर्धमान; हर्षकुमार, कपूरथला; खालिद अख्तर, छपरा।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. बाईं ओर की बिल्डिंग की एक खिड़की छोटी है ।
२. उसके पास रखे गमले का पौधा ऊंचा है ।
३. उसके सामने खड़ी गाड़ी की खिड़की की एक छड़ गायब है ।
४. गाड़ी के पास चलते बूढ़े के गले में बो की जगह स्कार्फ है ।
५. उसकी छड़ी लम्बी हो गई है ।
६. साम्ने फर्श पर लगा पत्थर बड़ा हो गया है ।
७. गाड़ी से निकलती औरत के हाथ में लगे चश्मे का एक शीशा नहीं है ।
८. सिपाही की टोपी बड़ी हो गई है ।
९. दाईं ओर की बिल्डिंग की सीढ़ी ऊंची है ।
१०. सामने की एक बिल्डिंग में एक मंजिल अधिक है ।

शीर्षक बताइए : परिणाम



बहुत-सारे शीर्षक मिले । नंदन अक्तूबर '९२ में छपे रंगीन चित्र के लिए ये शीर्षक चुने गए ।

हम दोनों भाई हैं वीर, छोड़ें दुश्मनों पर तीर ।
— ज्योति राठी, जवाहरलाल राठी, भाभा नगर, प्रथम गली, निकट—नया बस स्टैंड, ब्रह्मपुर, जि. गंजाम (उड़ीसा) ।

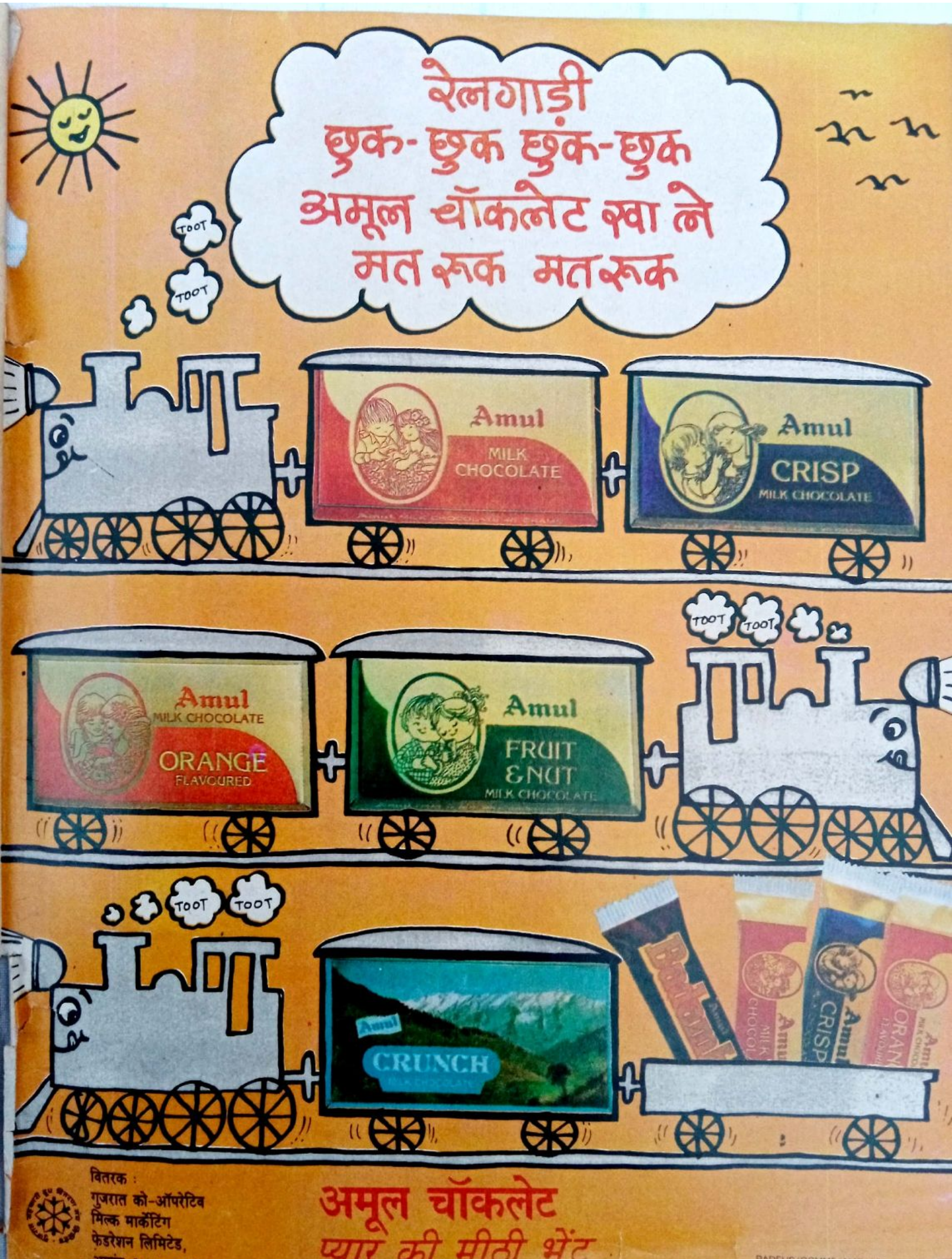
रामलीला की है तैयारी, बैठे सज-धजकर धनुषधारी ।
— दिलीप मेहता, मोहनी एंड लीला टेक्सटाइल, फेज-२, बासनी, जोधपुर (राज.) ।

राम उदास, लक्ष्मण अकुलाएं, जनक दुलारी कहां से पाएं ?
— कवित सूद, केंद्रीय विद्यालय (होल्टा कैम्प), पालमपुर, कांगड़ा (हि. प्र.) ।

आओ भइया तीर चलाएं, रावण को हम मार गिराएं ।
विकास जैन, सी-५/८८ बी; लारेंस रोड नई दिल्ली ।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : हरीश कुमार मोदी, इंदौर; श्रुति पाहूजा, गुड़गांव (हरि.); राधेश्याम, चुरू (राज.); विकास कुमार सिंह, बेगूसराय (बि.); आराधना श्रीवास्तव, मिर्जापुर (उ. प्र.) ।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन


रेलगाड़ी
छुक-छुक छुक-छुक
अमूल चॉकलेट खा ले
मत रूक मत रूक
TOOT
TOOT
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
FLAVOURED
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
TOOT TOOT
TOOT TOOT
Amul
CRUNCH
वितरक :
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फ़ेडरेशन लिमिटेड,
आणंद ३८८ ००१
अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट
RADEUS/GCMMF/AMC/205

रजि. न. डी एल-२७००५/९२ आर. एन. आई.नं. १०५२५/६४